

11

1969 में प्रकाशित *शिक्कारी का हार्पून*, कनाडा में इनुइट समुदाय के किसी व्यक्ति के द्वारा लिखित पहला उपन्यास, एक नए युग की शुरुआत को चिन्हित करता है। यह उपन्यास मौखिक आख्यान से लिखित इनुइट साहित्य की ओर बढ़ाए गए ऐतिहासिक कदम का प्रतीक है। साहित्यिक कारनामों से भरा यह उपन्यास पाठकों को आकर्षक के हिसक और प्रतिकूल जगत में ले जाता है, जहाँ मारकुसी का नायक अपने करीबी लोगों की मौत को देखने के बाद आत्महत्या करने को मजबूर हो जाता है। इनुकितुत भाषा में इस महत्वपूर्ण उपन्यास का प्रकाशन पुस्तक के रूप में नहीं हो सका। काथरीन एगो के द्वारा अनूदित फ्रेंच संस्करण से इस रचना का हिंदी अनुवाद आपके सामने प्रस्तुत है।

मारकुसी के उपन्यास *शिक्कारी का हार्पून* के इस हिंदी अनुवाद का प्रकाशन “केबेक के अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एवं फ्रेंच भाषी समुदाय मंत्रालय” द्वारा वित्तीय सहायता प्रदत्त परियोजना “केबेक नॉर्डिक संस्कृति: केबेक की शीत क्षेत्र सम्बन्धी संस्कृति और इनुइट संस्कृति” के अंतर्गत हुआ है। इस परियोजना का नेतृत्व मुंबई विश्वविद्यालय की प्रोफेसर विद्या वैकटेशन और मॉन्ट्रियल में केबेक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर दानियेल शातिसे ने किया है। इस परियोजना को “उत्तरी ध्रुवीय, शीत और आर्कटिक क्षेत्रों” पर शोध के अध्यक्ष, केबेक विश्वविद्यालय प्रेस और “आव्लाताक सांस्कृतिक संस्था” का सहयोग प्राप्त है। फोटोग्राफी रोबेर् फ्रेशेत एवं मिशेल पात्री की है। इस उपन्यास का हिंदी अनुवाद अग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद के अरिस्टेंट प्रोफेसर संजय कुमार ने किया है। दानियेल शातिसे की प्रस्तावना, टिप्पणियाँ और उनके कालक्रम के साथ...

”



मारकुसी



फ्रेंच विभाग
मुंबई विद्यापीठ प्रकाशन

शिक्कारी का हार्पून

शिक्कारी का हार्पून

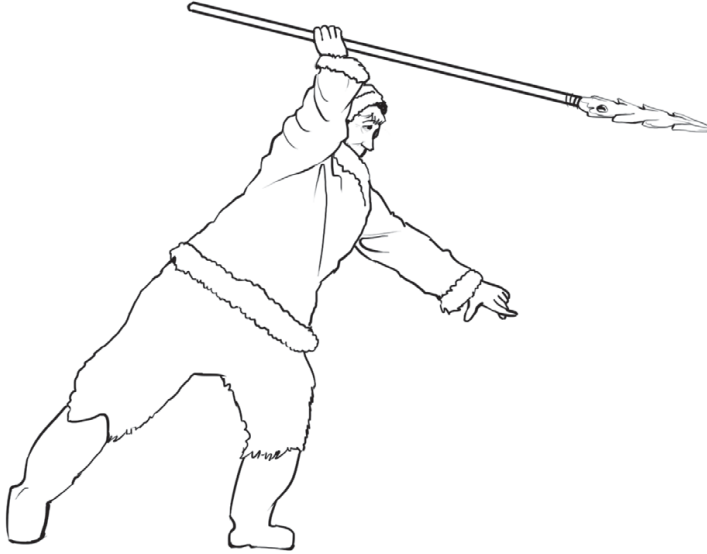
मारकुसी

मारकुसी

शिकारी का हार्पून

Le harpon du chasseur

फ्रेंच से अनूदित



फ्रेंच विभाग
मुंबई विश्वविद्यालय प्रकाशन



आभार-प्रदर्शन

मारकुसी के उपन्यास *शिकारी का हार्पून* के इस हिंदी अनुवाद का प्रकाशन “केबेक के अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एवं फ्रेंच भाषी समुदाय मंत्रालय” द्वारा वित्तीय सहायता प्रदत्त परियोजना “केबेक नार्डिक संस्कृति : केबेक की शीत क्षेत्र सम्बन्धी संस्कृति और इनुइट संस्कृति” के अंतर्गत हुआ है। इस परियोजना का नेतृत्व मुंबई विश्वविद्यालय की प्रोफेसर विद्या वेंकटेशन और मॉन्ट्रियल में केबेक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर दानियेल शार्तिये ने किया है। इस परियोजना को “उत्तरी ध्रुवीय, शीत और आर्कटिक क्षेत्रों” पर शोध के अध्यक्ष, केबेक विश्वविद्यालय प्रेस और “आव्हाताक सांस्कृतिक संस्था” का सहयोग प्राप्त है।

इस प्रकाशन में लेखक मारकुसी और छायाचित्रकार रोबेर फ़्रेशेत व मिशेल पात्री के सौहार्दपूर्ण सहयोग के लिए साधुवाद! इस उपन्यास के हिंदी अनुवाद के लिए हम अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद में असिस्टेंट प्रोफेसर संजय कुमार के आभारी हैं।

मारकुसी, *शिकारी का हार्पून*, दानियेल शार्तिये की प्रस्तावना के साथ (हिंदी अनुवाद में) मुंबई, फ्रेंच विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय प्रकाशन 2015, पृष्ठ 109

ISBN: 978-2-923385-21-1

La publication de cette traduction en hindi du roman de Markoosie, *Le harpon du chasseur*, s'inscrit dans le cadre d'un projet intitulé « La nordicité québécoise: hivernité culturelle et culture inuite du Québec », financé par le Ministère des Relations internationales et de la Francophonie du Québec et dirigé par Vidya Vencatesan, professeure à l'Université de Mumbai, et Daniel Chartier, professeur à l'Université du Québec à Montréal. Ce projet est soutenu par la Chaire de recherche sur l'imaginaire du Nord, de l'hiver et de l'Arctique, les Presses de l'Université du Québec et l'Institut culturel Avataq.

Pour cette publication, nous remercions l'auteur, Markoosie, ainsi que les photographes Robert Fréchette et Michel Patry, de leur aimable collaboration. Nous sommes également reconnaissants envers Monsieur Sanjay Kumar, pour sa traduction en hindi.

Markoosie, *Le harpon du chasseur*, précédé d'une introduction de Daniel Chartier [traduction en hindi], Mumbai, Department of French, University of Mumbai, 2015, 109 p.

ISBN: 978-2-923385-21-1

मारकुसी
LdP

Markoosie

शिकारी का हार्पून

४९J८७८८८८८ ८८८८८८८८

1969

दानियेल शार्तिये की प्रस्तावना, टिप्पणियों और उनके कालक्रम के साथ मारकुसी के अप्रकाशित प्राक्कथन (2010) का फ्रेंच से हिंदी अनुवाद संजय कुमार ने किया है जो अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं।

इस परियोजना का समन्वय मॉन्ट्रियल में केबेक विश्वविद्यालय (UQAM) के प्रोफेसर दानियेल शार्तिये और मुंबई विश्वविद्यालय की प्रोफेसर विद्या वेंकटेशन ने किया है।

2015

फ्रेंच विभाग
मुंबई विश्वविद्यालय प्रकाशन

TABLE DES MATIÈRES

INTRODUCTION	
Les enjeux d'une littérature inuite	1
Le problème de l'« authenticité »	5
Réception et importance historique du roman	6
Un auteur exceptionnel : Markoosie Patsauq	8
La construction narrative de l'œuvre	13
Un univers violent et hostile	15
Un roman de la survie et de la solidarité	19
Hors des stéréotypes : l'idée de l'égalité	20
La symbolique du harpon	23
L'étrangeté du suicide	25
AVANT-PROPOS DE L'AUTEUR	30
LE HARPON DU CHASSEUR (1969)	31

अनुक्रम

प्रस्तावना

इनुइट साहित्य के अहम् सवाल.....	8
‘प्रामाणिकता’ की समस्या	11
उपन्यास की स्वीकृति और उसका ऐतिहासिक महत्त्व	12
मारकुसी पात्साउक : एक असाधारण लेखक.....	14
कृति की कथात्मक संरचना	19
क्रूर और विपरीत परिस्थिति.....	21
उत्तरजीविता और एकजुटता का उपन्यास	25
रुढ़ियों से इतर समानता का विचार.....	26
हार्पून एक प्रतिक	28
आत्महत्या की विलक्षणता.....	31
लेखक का प्राक्कथन	35
शिकारी का हार्पून	36

.....

प्रस्तावना

“पहला लिखित इनुइट उपन्यास,

एक महत्वपूर्ण साहित्यिक और सामाजिक उपलब्धि”

.....



नुनाविक में बर्फ के छेद में शिकार करती हुई एक इनुइट लड़की - रोबेर फ़्रेशेत



नुनाविक (केबेक) के एक इनुइट गाँव में एक समकालीन घर के सामने सफेद भालू की सूखती हुई खाल
- रोबेर फ़्रेशेत

मारकुसी कनाडा के पहले एस्किमो लेखक हैं, जिन्होंने *हारपून् ऑफ़ द हंटर्स* नामक मौलिक उपन्यास की रचना की है।

-जेम्स एच. मैकनील, 1975

इनुइट साहित्य के अहम् सवाल

अपने उपन्यास *शिकारी का हारपून्* के अंत में मारकुसी पात्साउक ने साहित्य की भूमिका पर कुछ हल्के-फुल्के अंदाज में अपने विचार व्यक्त किए हैं। इस उपन्यास का पात्र कामिक अपने मददगारों से अपनी पूरी आपबीती सुना चुकने के बाद थककर एकांतवास की इच्छा व्यक्त करता है। इस बात पर उसकी माँ ऊरामिक चिंतित होकर पूछती है। “इसे हुआ क्या है?” अंगूतिक उसे जवाब देता है, “हमसे पूरा वाकया बयान करके इसने अपनी मुश्किल घड़ियों को फिर से जिया है।” अर्थात् कहानी, कथा, उपाख्यान और आख्यान स्मृति के माध्यम से वास्तविक तथ्यों को संरक्षित और जीवित रखते हैं। जैसे किसी आदमी की उत्तरजीविता की कहानी या फिर किसी संस्कृति की उत्तरजीविता की कहानी।

1970 में जेम्स एच. मैकनील ने इस रचना की प्रस्तावना में कहा था कि यद्यपि इस पहले इनुइट उपन्यास के प्रकाशन को देखकर हमें आनंदित होना चाहिए, तथापि यह काम समय के दबाव में हुआ है। हम पर एक ऐसे साहित्य को उभारने का दबाव था, जो अतीत की कहानियों के माध्यम से इनुइट समुदाय की मान्यताओं, तथ्यों और आचार-विचार की उत्तरजीविता को सुनिश्चित कर सके। “मौखिक परम्परा से एस्किमो साहित्य की उत्पत्ति हो सकती है, जैसे अंग्रेजी और दूसरे साहित्य की उत्पत्ति हुई है, पर हमें देर नहीं करनी चाहिए।” मारकुसी पात्साउक को चालीस साल बाद भी इस अतीत की उत्तरजीविता की वही चिंता सताती है, “या तो हमारे मौखिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा समय के गर्त में समा चुका है या फिर हमारे अतीत के जानकार इसे हस्तांतरित नहीं कर पा रहे हैं।”

लिखित रूप में आने से पहले मूल-निवासी साहित्य की उत्पत्ति की राह में कई समस्याएँ आती हैं। सबसे पहले तो यह पता नहीं लगाया जा सकता कि इंडियन लोगों पर लागू संघीय कानून के वर्षों के संरक्षण का कितना प्रभाव कनाडियाई अमेरिंडियन जनजाति पर हुआ और कितना इनुइट जनजाति पर, क्योंकि इस कानून के अंतर्गत दोनों समुदायों को समान दर्जा प्राप्त था और वे बाहरी फैसलों पर आश्रित थे। और यह स्थिति 1975 में बे जेम्स और उत्तर केबेकवा के संधि-पत्र पर हस्ताक्षर और 1999 में नुनावुत प्रान्त के गठन तक रही। हार्टमुट लुत्स हमें याद दिलाते हैं कि 1876 के कानून, जिसे 1951 में पुनः निरूपित किया गया, में अमेरिंडियन जनजाति सम्बन्धी प्रावधानों में एक यह था कि “कोई भी इंडियन विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त करते ही स्वतः मताधिकार प्राप्त कर लेगा”, ‘मताधिकार’ [...] इंडियन दर्जा खो देने की शिष्टोक्ति है।” शिक्षा प्राप्त करने की कठिनाई के साथ एक खतरा भी जुड़ गया - अपना दर्जा खोने का खतरा - जिसकी वजह से लिखने-पढ़ने और साहित्य रचने की सम्भावना सीमित हो गई।

जेम्स एच. मैकनील इस बात की पुष्टि करते हैं कि बाहर से आकर बसे गैर इनुइट लोगों में से शायद ही कोई ऐसा होगा जिसे इनुइट कहानियों का इस तरह से अनुवाद करना आता हो कि इन्हें विश्व-साहित्य में समाहित

किया जा सके। यदि हम मानवजाति विज्ञानियों (ethnologists) के काम को छोड़ दें, जिन्होंने कहानियों का प्रसार कलात्मक वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक ज्ञान की वस्तु के रूप में किया है, तो इनुइट साहित्य मुख्य रूप से अदृश्य ही रहा है। जैसा कि मारग्रेट हैरी कहती हैं, नृवांशिक (ethnographical) और नृवैज्ञानिक (anthropological) दृष्टि साहित्य को एक ऐसे खाँचे में डाल देती हैं जहाँ साहित्य के मूल तत्व गौण हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त इस दृष्टि में कथा, उपाख्यान इत्यादि पारम्परिक रूपों का महिमामंडन होता है और अधिक समकालीन आख्यानों पर ध्यान नहीं दिया जाता।

हालाँकि जैसा फ्रेड ब्रुयमर कहते हैं, इनुइट समुदाय पर विमर्श की कमी नहीं है। “एस्किमो उन समुदायों में आते हैं जिन पर निस्संदेह सबसे अधिक लिखा गया है।” पर इसमें इनुइट समुदाय का स्वर नहीं के बराबर सुनाई देता है। लेखकों को प्रोत्साहित करने की अपनी दिलचस्प परियोजना ‘द बैफिन राइटर्स प्रोजेक्ट’ में विक्टोरिया फ्रीमैन लिखती हैं कि इस अनुपस्थिति से केवल बाहरी लोगों की इनुइट समुदाय के प्रति अनुभूति प्रभावित नहीं होती बल्कि खुद इनुइट समुदाय की अपने प्रति अनुभूति भी प्रभावित होती है-

आर्कटिक और इनुइट समुदायों पर किताबें तो बहुत लिखी गई हैं पर उनमें इनुइट दृष्टिकोण बहुत कम ही परिलक्षित होता है। इनुइट और गैर इनुइट दोनों ने ही इनुइट संस्कृति को दक्षिण के नजरिये से देखा है।

सब कुछ के बावजूद इनुइट लेखक पचास साल से लिख ही रहे हैं। किताब के छपने से लेकर पाठक की स्वीकृति तक उन्हें अपनी रचना को अंजाम देने के क्रम में हर कदम पर भारी अड़चनों का सामना करना पड़ता है। एक लम्बे समय तक इन लेखकों को तुच्छ समझकर उनकी उपेक्षा की गई है। 1985 में मारग्रेट हैरी के मन में एक सवाल उठा था, “इंडियन और इनुइट लेखक कहाँ हैं? बहुत से कनाडियाई श्वेत, जिनमें वे भी शामिल हैं जो स्वयं को सुशिक्षित समझते हैं, एक भी इंडियन और इनुइट लेखक का नाम नहीं जानते।” यदि कुछ अपवाद छोड़ दें तो मानना पड़ेगा कि 25 साल बाद आज भी यह प्रश्न प्रासंगिक है।

परन्तु हम प्रगति के पथ पर निस्संदेह आगे भी बढ़े हैं। कनाडा में लिखे गए पहले इनुइट उपन्यास *शिकारी का हार्पूज* का 1970 में प्रकाशन और उसकी सफलता एक युगांतकारी घटना है। इस उपन्यास ने एक साहित्यिक मार्ग प्रशस्त किया है जिसकी शुरुआत मंत्रालय के शोध-पत्र *इनुक्तितूत* ने पहले ही कर दी थी। एक-एक करके वरिष्ठ लेखकों की कहानियों और उनकी आत्मकथाओं को द्विभाषिक या त्रिभाषिक संस्करणों में अक्सर प्रकाशित किया जाता रहा है। साथ ही साथ इनुइट लेखकों के बीच साहित्यिकता की अवधारणा स्थापित हो रही है। रोबिन मैकग्रेथ कहती हैं कि युवा लेखकों में उपन्यास और कहानी लेखन के प्रति रूझान है। “समकालीन लेखक और कहानीकार इस बात के प्रति सजग हैं कि वे स्वेच्छा से कहानी और उपन्यास लेखन कर रहे हैं”। आज सांस्कृतिक पत्र-पत्रिका और प्रकाशन संस्था की परियोजनाएँ एक साहित्य के मानक तैयार कर रही हैं।

भले ही इस साहित्यिक संस्था का प्रारूप अभी खंडित और संकुचित है पर यह आखिरकार उभरकर आ रहा है। हालाँकि लेखकों की मुश्किलें आसान नहीं हुई हैं। जैसा कि ज़ेबीदी नुंगाक लिखते हैं, “इनुइट लेखक साहित्य जगत में आश्वस्त महसूस कर सकें, इसके लिए उन्हें संक्रमण काल से गुजरना होगा।”

‘प्रामाणिकता’ की समस्या

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इनुइट समुदाय पर बाहर से आकर बसे लोगों की उपस्थिति के राजनीतिक, सामरिक और सांस्कृतिक प्रभाव हुए हैं। अपनी उत्तरजीविता और सांस्कृतिक विकास की खातिर आज इनुइट समुदाय इनुक्तितूत सीख कर प्रयोग में लाने, अतीत के मूल्यों और कहानियों के परिरक्षण करने और कई समकालीन माध्यमों जैसे रेडियो, टेलीविज़न, इंटरनेट, मौखिक व्यवहार (गीत, बोलचाल के शब्द इत्यादि) और निस्संदेह लिखित साहित्य के इस्तेमाल करने को प्रोत्साहन और प्रश्रय देता है।

लिखित साहित्य की प्रारंभिक रचनाओं में *शिकारी का हार्पून्* एक अनोखी मिसाल है। यह विभिन्न मौजूदा साहित्यिक शैलियों के मेल का परिणाम है। इसका विकास इनुइट मौखिक विरासत से उतना ही हुआ है जितना पाश्चात्य लिखित परम्परा से। आंशिक रूप से दूसरी संस्कृति से आयातित बाहरी ढाँचे का सहारा लेकर किसी संस्कृति के विषयक, नीतिपरक, रूपात्मक और वैचारिक तत्वों का हस्तांतरण तो एक चुनौती पेश करता ही है।

कुछ समालोचकों की दृष्टि में ऐसे मेल से कहानी की 'प्रामाणिकता' के मूल्य में हास होता है। पियर्सन एच. गुंडी 1971 में *क्विन्स क्वार्टरली* में मारकुसी के उपन्यास के बारे में लिखते हैं कि पाश्चात्य शैली को अपनाने से "लोक परम्परा के तत्व विकृत होते हैं तथा एक कठोर और विपरीत परिस्थिति में उत्तरजीविता और साहस की एक अच्छी-खासी सुंदर कथा की प्रामाणिकता पर आँच आती है।" रूपात्मक नवीनता और साहित्यिकता के स्तर पर उपन्यास जो कुछ हासिल करता है, उसे वह एक संस्कृति के प्रामाणिक प्रतिरूपण के क्रम में गँवा देता है। इस अनुवृत्ति से बचने के लिए इनुइट लेखक के पास एक ही रास्ता है - वह नृवांशिक (ethnographical) दृष्टि के चंगुल में न फँसकर दूसरे समकालीन संस्कृति के लेखकों की तरह रचना करने के अपने अधिकार का दृढ़ता पूर्वक प्रयोग करे अर्थात् स्व को इतर से जोड़े।

उपन्यास की स्वीकृति और उसका ऐतिहासिक महत्व

यह सही है कि *शिकारी का हार्पून्* कनाडा में लिखित पहला इनुइट उपन्यास है जिसका शीघ्र ही अंग्रेजी और फ्रेंच में अनुवाद हुआ और जिसे जाने-माने प्रकाशकों ने छापा। परन्तु यह कहते हुए अजीब लगता है कि समालोचकों ने इसकी अवहेलना ही की है। शायद बाल उपन्यास के रूप में इसकी विशिष्टता का उसकी साहित्यिक स्वीकृति पर नकारात्मक प्रभाव हुआ है। या शायद रचना के मूल्य को आँकने के लिए समालोचकों के पास आवश्यक संदर्भ का हवाला नहीं था। चाहे जो भी वजह हो, जब 1970 के

आस-पास उपन्यास पुस्तक के रूप में छपा तो अखबारों ने इसे अनदेखा या लगभग अनदेखा कर दिया। फिर विशेषीकृत शोधपत्रों में भी इसकी बहुत कम चर्चा हुई। उपन्यास के ऊपर प्रकाशित समीक्षाएँ स्वीकारात्मक रहीं परन्तु उनमें एक दम्भपूर्ण दया की भावना थी। जैसा कि रोबिन मैकग्रेथ 1984 में कहती हैं-

समालोचकों ने आम तौर पर उपन्यास को हाथों-हाथ लिया... *हार्पून ऑफ द हंटर* की कहानी तीव्र गति से चलती है। इसे सरल भाषा में कहा गया है और इसका अंत चौंका देने वाला है। यही वजह है कि इसे उत्कृष्ट पुस्तक माना गया है।

मारग्रेट हैरी इस फैसले पर पहुँचती हैं कि ऐसा समीक्षात्मक रवैया जिसमें बेरुखी के बजाय खामोशी है, या फिर विश्लेषण के बजाय प्रशंसा-मात्र है, कनाडा के सारे मूल निवासी साहित्य के लिए नुकसानदेह है, चाहे वह अमेरिंडियन साहित्य हो या इनुइट-

मूल निवासी लेखकों की रचनाओं के प्रति प्रकाशकों और पाठकों में प्रतिबद्धता की कमी ज्यादा खलती है, जब हमें कनाडियाई समालोचकों की बेरुखी दिखती है। शायद उदासीनता बेहतर शब्द होगा, क्योंकि अधिकतर इंडियन और इनुइट रचनाओं की नकारात्मक आलोचना नहीं हुई है, बल्कि आलोचना ही नहीं हुई है। यहाँ तक कि कुछ विरले मामलों में, जहाँ आलोचना सकारात्मक रही है, उसमें दम्भपूर्ण दया की भावना है।

विशिष्ट रूप से इनुइट पैमाने उपलब्ध न होने के कारण, फ्रेड ब्रुयमर *कनाडियन ज्योग्राफिकल जर्नल* में उपन्यास की तुलना ग्रीक शोकान्त नाटकों के साथ करते हैं, क्योंकि कहानी नियतिवादी है और कुछ दृश्यों में हिंसा दिखती है “एक नितांत हिंसक कहानी का अच्छी तरह निरूपण किया गया है। एक निष्ठुर नियति के विषय को उदात्त यूनानी शोकान्त नाटक के मिज़ाज के साथ जोड़ा गया है। केवल वहाँ, आर्कटिक में नियति और प्रकृति एक हैं, निर्मम और सशक्त।”

साहित्य का इतिहास इसे एक ऐसी रचना के रूप में दर्ज करता है जिसने मौखिक साहित्य से लिखित साहित्य के मार्ग को प्रशस्त किया है। बेशक इनुइट कहानियों का लिप्यंतरण पहले भी हुआ है, परन्तु ये नृवांशिक

दृष्टिकोण की छलनी से छनकर आई हैं। जेम्स एच. मैकनील ने इस पहली रचना के लेखन की ज़मीन तैयार की है, लेखक को अपना काम जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया और प्रकाशक पाने में उनकी सहायता की है। जेम्स एच. मैकनील के अनुसार *शिकारी का हार्पून* का प्रकाशन एक नए युग की शुरुआत को चिह्नित करता है-

तभी एस्किमो में लिखी गई पहली मूल कहानी आई। जब *हार्पून ऑफ द हंटर* आई, हम फूलें नहीं समाते थे। हमने *इनुत्तितूत* में इस कहानी को धारावाहिक के रूप में छपवाया और मारकुसी को प्रोत्साहित किया कि वह इसका अनुवाद अंग्रेजी में करे। पहली बार पुराने ज़माने की जिन्दगी हमारे सामने आई है, वैसे नहीं जैसे दक्षिण की नज़र से देखी गई हो बल्कि वैसे जैसे यह एस्किमो की संस्कृति में विद्यमान है।

मैकनील के लिए मौखिक के लिखित रूपांतरण के महत्त्व से अधिक इस कृति का मूल्य एक ऐसे साहित्य के रूप में उभरना है जो इनुइट स्मृति को बिना किसी मध्यस्थता के पाठक से जोड़ता है। दूसरे समीक्षकों के लिए भी यह उपन्यास इनुइट साहित्य की उत्पत्ति की आशा जगाता है। फ्रेड ब्रुयमर भौगोलिक दृष्टि से इसे देखकर कहते हैं कि यह रचना “आशा है कि एस्किमो द्वारा अपने लोगों और परम्परा पर लिखी गई पुस्तकों के युग की शुरुआत होगी।” आर्कटिक के बारे में एक कठोर और खेदजनक दृढ़ोक्ति है कि यह एक सांस्कृतिक मरुभूमि है। आर. डब्ल्यू. नोबल इस दृढ़ोक्ति का हवाला देते हुए *द जर्नल ऑफ कॉमनवेल्थ लिटरेचर* में लिखते हैं कि “मारकुसी की आकर्षक प्रतिभा को देख कर लगता है कि अंतहीन आर्कटिक रात्रि की शून्यता का खतरा कुछ कम होगा।” समीक्षक मानते हैं कि यूरोपीय संस्कृति की नज़र में लिखित साहित्य का प्रतीकात्मक मूल्य बहुत मायने रखता है। यद्यपि वे मौखिक हस्तांतरण के मूल्य को स्वीकार करते हैं, तथापि लिखित रूपांतरण उनके लिए इनुइट साहित्य के उद्भव की असली शुरुआत है।

मारकुसी पात्साउक : एक असाधारण लेखक

मारकुसी पात्साउक (Markoosie Patsauq) का जन्म केबेक में

1941 में उगावा की खाड़ी के पश्चिमी तट पर हुआ था, जो आज नुनाविक क्षेत्र में पड़ता है। दूसरे इनुइट लेखकों की तरह, वह उस समूह का हिस्सा हैं जिन्हें 'नव केबेक के निर्वासित' लोगों में गिना जाता है। संघीय सरकार के द्वारा 1950 में ये औरत और मर्द इनुकजुआक गाँव (जिसे पहले हैरीसन पोर्ट के नाम से जाना जाता था) से आर्कटिक के अंतिम छोर की ओर विस्थापित हुए थे। ये उत्तर में कनाडा की सार्वभौमिकता को स्थापित करने की मंशा के शिकार थे। अतः मारकुसी ने अपनी जिन्दगी का एक हिस्सा कॉर्नवालिस द्वीप पर रिज़ोल्यूट की खाड़ी में बिताया है और वर्षों बाद ही अपने गाँव की जन्मभूमि से जुड़ पाए। रैकॉर्डर पत्रिका में 1991 में प्रकाशित 'मेम्वार' नामक पाठ में उन्होंने इस घटनाचक्र का वर्णन किया है।



मारकुसी पात्साउक : एक असाधारण लेखक- मिशेल पात्री

मारकुसी पात्साउक की जिंदगी के बारे में समीक्षक बहुत कम बातें बताते हैं। उनके जीवनी लेखक जेम्स एच. मैकनील, जिन्होंने लेखक की साहित्यिक यात्रा में अहम् भूमिका अदा की है, 1975 में बयान करते हैं कि 'मारकुसी' नाम परम्परा से अपना तालमेल बैठाने के लिए इस्तेमाल

किया गया है। आजकल वह अक्सर अपने पूरे नाम मारकुसी पात्साउक का प्रयोग करते हैं। मैकनील बताते हैं कि मारकुसी अपने पिता आलियेकायुत और माता एता की पाँच संतानों में दूसरे थे। इसके अतिरिक्त मैकनील यह भी बताते हैं कि मारकुसी को सरकार की तरफ से ई 9-725 संख्या का एक तमगा मिला जिसे हर इनुइट को पहनना पड़ता है।

1969 में उपन्यास *शिकारी का हार्पूज* के अलावा उन्होंने 1972 में *विंग्स ऑफ मर्सी* नामक एक दूसरा उपन्यास *इनुत्तितुत* पत्र में पाँच खण्डों में छपवाया। पहले उपन्यास के विपरीत यह उपन्यास पारम्परिक जीवन से हटकर एक विमान चालक के साहस का वर्णन करता है जो एक छोटे लड़के की जान बचाने की कोशिश करता है। इसे एक ऐसी रचना के रूप में देखा गया जो इनुइट और बाहरी समाज के बीच सामंजस्य स्थापित करने की इच्छा की मिसाल है। कनाडियाई इनुइट साहित्य पर अपने शोध-पत्र में रोबिन मैकग्रेथ कहती हैं, “यह कहानी इनुइट और गैर इनुइट समुदायों के आपसी सहयोग की जरूरत पर बल देती है, और यह काम पारंपरिक कौशल और उत्तम तकनीक के प्रयोग से सफल हुआ है।” चाहे जो भी हो, 1970 के दशक में इनुइट साहित्य से जो अपेक्षा थी, उसके करीब इस रचना का विषय कहीं नहीं ठहरता। किताब के रूप में दुबारा यह रचना कभी नहीं आ पाई। उच्च आर्कटिक में अपने निर्वासन के अतिरिक्त मारकुसी ने दूसरे पाठ भी पत्र-पत्रिकाओं में छपवाए हैं। परन्तु उन्हें अभी भी मुख्यतः अपने पहले उपन्यास *शिकारी का हार्पूज* की वजह से जाना और पहचाना जाता है।

जेम्स एच. मैकनील ने मारकुसी की छवि एक ऐसे शर्मिले स्वभाव के, परन्तु असाधारण लेखक के रूप में बनाने में योगदान दिया है जो इनुइट और बाहरी पारम्परिक और समकालीन लेखकों के बीच की कड़ी हैं। कनाडा में लिखे पहले इनुइट उपन्यास के रचनाकार के रूप में मारकुसी को प्रस्तुत करने के अलावा मैकनील उनके बारे में बताते हैं कि वे 1968 में देश के पहले इनुइट विमान चालक बने। वह एक साहसिक कहानियों के लेखक की तरह विमानक और लेखक, दो पेशों में अच्छी तरह तालमेल बिठा सके। “जब मारकुसी को विमानचालन के अनुकूल मौसम का देर तक इंतजार

करना होता था, तो वे लिखते थे।” मैकनील लेखक का शारीरिक वर्णन इस तरह से करते हैं, “मारकुसी छोटे कद के शर्मीले इंसान हैं। वह धीमी गति से और सजग रूप से संयत स्वर में बोलते हैं। उनकी बोलचाल की अंग्रेजी में यदा-कदा छोटे वाक्यांश होते हैं जिसका प्रयोग विमान चालक और वायरलेस संचालक करते हैं।”

कुछ समीक्षकों के लिए, जिनमें आर. डब्ल्यू. नोबल भी हैं, मारकुसी की रचना का महत्त्व इसलिए है क्योंकि इसके सहारे हम इनुइट संस्कृति के अंदर तक पैठते हैं। “मारकुसी इनुइट परंपरा के अंतःस्थल में हैं।” मैकनील का मानना है कि यह इसलिए संभव हो पाया क्योंकि लेखक दो समाजों में रहता है। “मारकुसी में कहानी को अपनी और हमारी ज़बान में कह सकने का दुर्लभ सामर्थ्य है। वह समग्र रूप से एस्किमो हैं पर अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान होने के कारण उनकी पैठ दक्षिणी समाज में है।” यह तर्क आज भी अक्सर दुहराया जाता है कि अपनी संस्कृति को हस्तांतरित करने में वे इनुइट अधिक सक्षम हैं जो अपने और बाहरी समाज, दोनों में जीते हैं। ऐसे में नुनाविक के सालुइट में जन्मी गायिका एलिजापि इस्साक की सफलता का उदाहरण दिया जाता है, जो फ्रेंच, अंग्रेजी और इनुक्तितुत भाषाओं में गाती हैं। हालाँकि इस अवधारणा में एक हल्के सुधार की जरूरत है। दूसरी तरफ तामुसी कुमाग जैसे लोग हैं जो एकभाषी हैं और जिन्होंने अपनी बौद्धिक कृतियों और सरोकार के बल पर अपनी पहचान बनाई है।

जेम्स एच. मैकनील ने उपन्यास के अंग्रेजी अनुवाद की प्रस्तावना लिखने के बाद उनकी एक संक्षिप्त जीवनी भी प्रकाशित करायी है। पर, मारकुसी की जीवन-वृत्ति में उनकी भूमिका यहीं तक सीमित नहीं है। 1925 में एडमंटन (अलबर्टा) में जन्मे मैकनील एक फौजी और नौकरशाह हैं। वह 1967 से इंडियन और उत्तरी मामलों के संघीय मंत्रालय में ‘साहित्य विकास विशेषज्ञ’ के पद पर कार्यरत हैं। इस अनोखे विभाग का लक्ष्य है इनुइट समुदाय में लिखित साहित्यिक संस्कृति का संचार करना। इसी दशक के दौरान इनुइट समुदाय की घुमक्कड़ जीवन-शैली पर जबर्दस्ती रोक लगाई गई। उपरोक्त लक्ष्य इस गतिविधि के विस्तार में बढ़ाया गया कदम है। हालाँकि

यह कदम नेक इरादे से बढ़ाया गया है, अंततः यह सजग रूप से घुमक्कड़ जीवन-शैली से गतिविहीन जीवन-शैली और मौखिक संस्कृति से लिखित संस्कृति की ओर ले जाएगा। कम के कम मैकनील का तो यही मानना है।

मारिली मैककुलॉक कहते हैं कि “एस्किमो लोगों को उनकी अपनी भाषा और अंग्रेजी में रचनात्मक लेखन सिखाने” में मैकनील की भूमिका रही है। इस मुकाम पर पहुँचने के लिए उन्होंने सबसे पहले मैकेंज़ी नदी की कथाओं का संग्रह कर उन्हें प्रकाशित किया। मैककुलॉक के अनुसार एस्किमो भाषा में लिखी गई “यह पहली पुस्तक है जिसका प्रयोग मनोरंजन पठन के तौर पर किया गया”। शब्दांश (syllable) में स्वांतरित 123 पृष्ठ की इस पुस्तक का शीर्षक है, *ऑटोबायोग्राफी ऑफ जॉन आयारुआक*। इस पुस्तक की एक-एक प्रति लगभग हर इनुइट परिवार में बाँटी गई ताकि परिवार का हर सदस्य लेखन के लिए प्रेरित हो और इस तरह से मंत्रालय द्वारा स्थापित पत्रिका *इनुत्तितूत* को प्रकाशन-सामग्री मिलती रहे।

या तो हमारे बौद्धिक इतिहास का अधिकतर हिस्सा खोया जा चुका है, या अतीत के जानकार इसका बयान नहीं कर रहे। चूँकि कामिक की कहानी हमारे इतिहास का हिस्सा है, मुझे आशा है कि यह कहानी कई भावी पीढ़ियों तक अस्तित्व में रहेगी।

यह हमारे अतीत का एक छोटा हिस्सा है। यह मेरे अपने लोगों की कहानी है।

मारकुसी पात्साउक
इनुकुवाक, केबेक
15 सितंबर 2010

(प्रथम संस्करण के प्राक्कथन की पांडुलिपि से उद्धृत)

मारकुसी ने यह आत्मकथा पढ़ी होगी जिससे उन्हें स्वयं लेखन की शुरुआत करने की प्रेरणा मिली होगी। कम से कम मैकनील का यही कथन है-

मैंने सुना कि मारकुसी ने किताब *ऑटोबायोग्राफी ऑफ जॉन आयारुआक* पढ़ी है और उन्होंने लिखना शुरू कर दिया है तो मैंने शीघ्र उनसे सम्पर्क स्थापित किया। उन्होंने स्वीकार किया कि वह लिख रहे हैं और मुझसे पूछा कि किताब लिखना खत्म होने के बाद क्या मैं उसमें दिलचस्पी रखूँगा? कुछ ही दिनों बाद उत्तर से वह यात्री मेरे पास आया और मेरे हाथ में कागज से भरा एक मोटा लिफाफा सौंप दिया। कई एस्किमो दोस्तों की मदद से लिफाफे के अंदर पड़ी पांडुलिपि को ध्यान से पढ़ गया। यह हम सब के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी जिसका हम सभी इंतजार कर रहे थे। हमने *इनुक्तितूत* पत्र में भी मारकुसी के उपन्यास को एस्किमो में किस्तों में छपा और साथ में अंग्रेजी संस्करण के लिए प्रकाशक की तलाश करते रहे।

यह प्रकाशक थे - मैकगिल-किन यूनीवर्सिटी प्रेस के रोबिन स्ट्राचन जिन्होंने इसे बाल उपन्यास के रूप में छापकर सफल बनाया, जैसा कि हम जानते हैं। इस अंग्रेजी संस्करण से फ्रेंच (1970), जर्मन (1974) और डेनिश (1995) भाषाओं में अनुवाद हुआ। हालाँकि इस वर्तमान संस्करण के छपने से पहले तक इनुक्तितुत भाषा में पुस्तक के रूप में यह उपन्यास नहीं निकल पाया।

कृति की कथात्मक संरचना

इस वर्तमान संस्करण के प्राक्कथन में मारकुसी पात्साउक यह बात साझा करते हैं कि उपन्यास की कहानी उन्होंने बचपन में सुनी थी और यह कहानी इनुइट समुदाय की मौखिक संस्कृति का हिस्सा है। लेखक ने भले ही मौखिक परम्परा के कुछ तत्वों को उद्धृत किया है, उन्होंने एक ऐसी साहित्यिक कृति की रचना की है जिसका विश्लेषण करें तो उसकी समृद्ध संरचना उजागर होती है। जैसा कि सेठ बोव्ही रेखांकित करते हैं-

मारकुसी का लघु उपन्यास काफी हद तक एक जटिल संरचना वाली कृति है जो ऊपरी तौर से सरल और पारम्परिक सामग्री से उत्पन्न होने का बावजूद उससे श्रेष्ठ है।

समीक्षा में इस रचना को या तो एक पात्र के व्यक्तित्व विकास की कहानी के रूप में देखा गया है जिसमें नायक विभिन्न बाधाओं को पार

करता है और चुनौतियों का सामना कर शिकारी बन पाता है, इनुइट लोगों के शब्दों में 'इंसानों में एक इंसान' बन पाता है, या फिर एक उत्तरजीविता के उपन्यास के रूप में देखा गया है जो मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति, दुश्मन से अपने बचाव और बुनियादी मूल्य के पुनः प्राप्ति पर आधारित है। दोनों ही स्थितियों में उपन्यास के विभिन्न हिस्सों में विभाजन का आधार पात्रों का संघर्ष है और यही उसके कथानक को सामग्री देता है।

जॉन सी. स्टॉट के अनुसार, तीन तरह से कामिक को अपनी योग्यता सिद्ध करनी है - अपने पिता की मृत्यु का बदला लेकर, अपने गाँव की रक्षा करके और होशियारी तथा सावधानी से अपने दुश्मनों का सामना करके। ऐसा करने के लिए उसे बल, ज्ञान और चतुराई का परिचय देना है, साथ ही एक आंतरिक शत्रु से भिड़ना है- निराशा। शिकार के माध्यम से ही वह अपनी परिपक्वता को दर्शाने में सफल होता है- सबसे पहले सील मछली का शिकार, फिर ध्रुवीय भालू और बाद में कस्तूरी बैल।

रचना का कथानक एक सपाट रैखिकता के अनुसार नहीं चलता, बल्कि लेखक जगह-जगह सावधानी से कथानक सम्बन्धी सूचना देता जाता है, जो पाठक के लिए कहानी में आने वाली मुश्किलों के संकेत का काम करती है। रचना के शुरुआती शब्दों से ही आने वाली सारी घटनाओं में निहित तत्वों को मारकुसी सादगी से रखते जाते हैं। चाहे वह जलवायु हो, उत्तरजीविता हो, हार्पून हो या फिर कामिक के सीखने की शुरुआत हो, "आज बेहतर होगा कि हम अगले शिकार के लिए अपने हार्पून को पैना बनाएँ। कामिक, इसमें तुम्हें मेरी मदद करनी होगी", नायक के पिता ने कहा।

कथानक तीन ध्रुवों के इर्द-गिर्द लगातार चक्कर काटता है- कामिक और अभियान पर निकले दूसरे शिकारी, गाँव में रह गई उसकी माँ और दूसरे निवासी, कामिक और उसके करीबी लोगों को बचाने निकला पड़ोसी गाँव का एक शिकारी दल। दृश्यों की इस अदला-बदली से रचना को एक जीवंत स्वस्व मिलता है, क्योंकि कहानी की गहनता के अनुसार लेखक इस आवाजाही की आवृत्ति को नियमित कर पाता है।

रचना में कई जगह पात्रों पर आने वाली विपत्ति की चेतावनी मिलती

है- शुरुआत में ही ऊरामिक जाते हुए लोगों को इस तरह देखती है, “जैसे उनसे फिर कभी मिलना नहीं हो पायेगा। ... उसे शिकार की भीषण रक्तरंजित त्रासदी का पूर्वाभास हो रहा था।” बाद में गाँव के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति सूना चेतावनी देते हैं कि बेहतर होगा कि उस खतरनाक चैनल का सामना न किया जाए जो उन्हें पड़ोसी गाँव से अलग करता है, “जो भी उसे पार करने की कोशिश करता है, उसके बर्फ के द्वारा समुद्र तक बहा ले जाने का खतरा रहता है।” अंत में ऊरामिक को एक दुःस्वप्न आता है जिसमें वह सारे शिकारियों को मृत पाती है। इस तरह के कई संकेतों से कृति की संरचना में दुहराव आता है और उपन्यास के अंत में घटनाक्रम की तीव्रता स्वीकार्य हो पाती है। यदि ऐसा नहीं होता तो गैर इनुइट पाठकों की नज़र में ऐसा घटनाक्रम असम्भाव्य लगता। हालाँकि जो इनुइट कथाओं से अच्छी तरह परिचित हैं, उन्हें कुछ भी अटपटा नहीं लगता। नाटकीय सम्भाव्यता या इनुइट समुदाय की हकीकत के सापेक्ष कहानी की प्रामाणिकता को मद्देनजर रखते हुए समीक्षकों ने कहानी में कुछ कमजोरियाँ रेखांकित की हैं। इनमें से कुछ हैं- कहानी के अंत में लगातार एक के बाद एक मृत्यु एवं कामिक और पुतूकती की भावुकता। फ्रेड ब्रुयमर के अनुसार, “असम्भाव्यता और यहाँ तक कि चूक की वजह से कहीं-कहीं किताब दोषपूर्ण हो गयी है”। कहा जाता है कि इन चूकों में से एक है- कस्तूरी बैल की अतिशय आक्रामकता, दूसरी है- एक के बाद एक हार्पून से सफेद भालू पर आक्रमण करना (जबकि हार्पून को जानवर के शरीर से इतनी आसानी से वापस निकाला नहीं जा सकता) और फिर लोगों की अत्यधिक संख्या - ‘सैंकड़ों ग्रामीण’ जो इस्सा और मित्तिक के बचाव में आते हैं- संक्षेप में कहें तो नाटकीय प्रभाव को बढ़ाने के लिए मारकुसी ‘अतिरंजना’ का सहारा लेते हैं जो उपन्यास में वर्जित है।

क्रूर और विपरीत परिस्थिति

वह पाठक जो पहली बार इनुइटसाहित्य से रू-ब-रू होता है, उत्तरजीविता के महत्त्व, स्थूल चित्रण, हिंसक मुठभेड़ और मुख्य पात्रों तथा प्राकृतिक

शक्तियों की टकराहट देखकर चकित होता है। भले ही मारकुसी साहित्य की गिनती पूरी तरह से उत्तरजीविता और अनिवार्यता के साहित्य में होती है, वह शिकारी का हार्पून की कहानी में ऐसे तत्व डालने में कामयाब हो जाते हैं जिससे आर्कटिक के निरूपण के बारे में प्रचलित विचार खारिज होते हैं।

समीक्षक सबसे पहले इस रचना की विशिष्टता को उजागर नहीं करते, बल्कि इसे प्रतिनिधि रचना के रूप में देखते हैं। वे इस रचना में ऐसे लक्षण खोजते हैं जो इनुइट समाज की स्वधियों और ध्रुवीय समाज की क्रूरता की पुष्टि करते हैं। इसलिए एक तरह से इस उपन्यास की प्रामाणिकता सुनिश्चित की जाती है, जिसके बारे में पहले कहा जा चुका है। यह सब बिना तोड़-मरोड़ के नहीं होता। इस प्रकार से एक चिरकालिक विचार को लेकर, जेम्स एच. मैकनील अपनी प्रस्तावना में रेखांकित करते हैं कि सर्दियों का मौसम हमेशा से किस्सागोर्ड के अनुकूल रहा है, क्योंकि “जब खिड़कियों पर बर्फ गिरती है और घर के इर्द-गिर्द हवा की सनसनाहट और गुराहट सुनाई देती है, तब कहानियाँ कहने के वक्त होता है” हालाँकि मारकुसी की कहानियों में पाठक व्यर्थ ही घर, खिड़कियों और दूसरे अंदरूनी भागों के आश्रय तलाश करता है, क्योंकि वहाँ पात्रों के कार्यकलाप पृष्ठभूमि सर्दियों का मौसम हैं, आश्रय नहीं। आर. डब्ल्यू. नोबल का मानना है कि मारकुसी की कहानी में इनुइट समाज से जुड़ी स्वधियों का बखूबी इस्तेमाल हुआ है - जैसे कि प्राकृतिक शक्तियों के मुकाबले शिकारियों के पास साधन की कमी, उनकी आपसी एकजुटता का भाव, निष्ठुर ठंड, आहार की कमी और बर्फ से उत्पन्न खतरा।

उग्र दृश्य, विपत्ति, एक के बाद एक पात्रों की मृत्यु और बेशक कहानी के अंत में युवा नायक की आत्महत्या, लगता है कि उपन्यास को आम बाल साहित्य की कथानक-पद्धति से दूर ले जाते हैं। हालाँकि अंग्रेजी प्रकाशक ने इस उपन्यास को बाल उपन्यास की श्रेणी में ही रखा है। सेठ बोव्ही कहते हैं कि *शिकारी का हार्पून* को बाल साहित्य समझना असंगत है, साथ ही इस तरह का वर्गीकरण उपन्यास के कलात्मक और ऐतिहासिक महत्त्व को कम करता है। दरअसल हम यह भी कह सकते हैं कि मारकुसी के उपन्यास को बाल साहित्य में समाहित करना इनुइट संस्कृति को बचकाना सिद्ध करने

की उसी प्रक्रिया का हिस्सा है जिसकी शुरुआत बीसवीं सदी के आरम्भ में हुई थी और जो आज भी कुछ गैर इनुइट रचनाओं में उपस्थित है।

मारकुसी का औपन्यासिक जगत क्रमिक मृत्यु, हिंसा और बदले की भावना से बना है। उपन्यास की शुरुआत में ही मानव और प्रकृति के परस्पर भिड़न्त को दिखाया गया है, “ऐसा लगता है कि प्रकृति उनका विनाश करने पर तुली हुई है”। कथानक की संरचना में मनुष्यों की लगातार मृत्यु है- सबसे पहले कामिक के पिता, फिर भालू द्वारा शिकारी दल पर हमला, फिर कामिक के नजदीकी लोगों का हिमानी पानी में निमग्न हो जाना, और अंत में खुद कामिक। प्राकृतिक विपदाओं से हुआ विनाश कहानी में साफ झलकता है। यह एक ऐसी विवशता है जो कभी-कभी पराजयवाद लगता है, जैसा कि कामिक की माँ और उसकी सहेली तूगाक की बातचीत में देखा जा सकता है-

- जीवन इतना कठोर क्यों है? थकी हुई आवाज में ऊरामिक पूछती है। क्या हमें जीवित रहने के लिए हमेशा संघर्ष करना होगा? कभी-कभी मुझे लगता है कि बेहतर है कि हम मर जाएँ...
- ऐसा मत बोल ऊरामिक! कौन जानता है? शायद एक दिन वक्त पलटे।
- तूगाक, तू सपना देख रही है।
- कुछ सपने साकार भी होते हैं।
- मुझे नहीं लगता।

विशेष तौर से ध्रुवीय भालू जो शक्ति, आर्कटिक की क्रूरता और खतरे का द्योतक है, के प्रति बदले की भावना, कहानी और घटनाक्रम को पोषित करती है। इस तरह से कामिक अभी-अभी मारे गए भालू के शव पर टूट पड़ता है। “कामिक को इस बात का अफसोस था कि यह भालू इतनी जल्दी क्यों मर गया, इसे अभी और तड़पना चाहिए था... अच्छा होता कि कामिक इस भालू को हल्की आँच पर मरते हुए देखता... उसने बर्फ काटने वाले चाकू को उठाया और जानवर की खाल में घोंप दिया’

इस यथार्थ चित्रण में हमें मृत्यु एक रक्तरंजित कृत्य दिखता है, चाहे वह कहानी की शुरुआत में भालू के द्वारा कुत्तों की जान लेना हो (कुछेक के पेट चीर-फाड़ डाले गए थे, तो कुछेक की टाँगें उखाड़ ली गयी थीं। किसी का गला कटा हुआ था तो किसी की अँतड़ियाँ बाहर निकली हुई थीं।” या फिर अभियान के दौरान जानवर के द्वारा शिकारियों को छलनी-छलनी कर देना -

अपने पैने नाखूनों से जानवर ने उनके पेट को फाड़ दिया और अमाशय बाहर निकाल दिया था। बर्फ लहलुहान करते नाऊलाक की अँतड़ियाँ... इस नरसंहार को देखकर कामिक अपनी उबकाई नहीं रोक पाया।

मारकुसी अपने पाठक के सामने उग्र दृश्य प्रस्तुत करने से नहीं कतराते और इस तरह से वह जानवर और मनुष्य की समानता की तरफ इशारा करते हैं- दोनों ही आर्कटिक जगत की क्रूरता के सामने विवश हैं।

जेम्स एच. मैकनील को इस कहानी में बृहत् उत्तर क्षेत्र की रूढ़ियों को तोड़ने की इच्छाशक्ति नज़र आती है। पारम्परिक रूप से इसे एक बेजान, वीरान ओर निर्जन क्षेत्र के तौर पर निरूपित किया गया है। मारकुसी के पात्रों में उत्तरजीविता के प्रति आकुलता दर्शाता है कि उनमें प्राणाधार है जिसके बल पर वे अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए घोर संघर्ष करते हैं। मारकुसी कुछ प्रचलित धारणाओं को खारिज करते हुए ‘वास्तविक परिस्थितिकी’ को स्थापित करते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यह अपने पर्यावरण में पात्रों को जड़ जमाने की उनकी इच्छाशक्ति का द्योतक है। पाठक को यह पढ़कर आश्चर्य होता है कि रास्ता भटका हुआ निराश नायक अपने सहायक रूप में शीत लहर का आह्वान करता है। “कामिक चाहता है कि मौसम ठंडा रहे। वह अधिक आसानी और अधिक तेजी से बढ़ पाएगा।” उसी तरह से एक रात वह आकाश को प्रकाशित करती उत्तर ध्रुवीय ज्योति को देखता है। “वह नजारा कितना खूबसूरत था! कैसी दुनिया है यह - एक तरफ तो इतनी खूबसूरत, दूसरी तरफ इतनी क्रूर?” अपने उत्तरजीविता के उपन्यास के अंत में मारकुसी कुछ हास्य के पुट भी डालते हैं जो उनके पात्रों का वास्तविकता से संबंध दर्शाता है - जब कामिक थककर बर्फ से अपना चेहरा

पोंछता है तो उसके दिमाग में एक अजीबोगरीब खयाल आता है, “कम से कम एक चीज यहाँ है जिसे हम पसंद भी करते हैं और वह प्रचुर मात्रा में भी है।”

उत्तरजीविता और एकजुटता का उपन्यास

निपुणता और कठिन से कठिन परिस्थितियों से भी बच कर बाहर निकलने के संदेश को इनुइट साहित्य आवश्यक और अनिवार्य तत्वों के साथ, मौलिक रूप से हम तक पहुँचाता है। इस तरह से देखें तो यह साहित्य व्यापक सांस्कृतिक विरासत में अधिकार पूर्वक अपनी जगह बनाता है। उत्तरजीविता और उससे उत्पन्न कहानियाँ, उपाख्यान और आख्यान का सबसे ज्यादा अर्थपूर्ण प्रयोग, पारम्परिक जीवन शैली की चर्चा करने वाले पाठों में होता है। कमोबेश यही वजह है कि अभी तक इस रचना को उत्तरजीविता के उपन्यास के रूप में देखा गया है।

समीक्षकों ने शीघ्र ही यह रेखांकित किया कि उत्तरजीविता के उपन्यास की पृष्ठभूमि के लिए आर्कटिक की सख्त स्थिति कथानक के लिए आदर्श है। “इसके कठोर मौसम, खतरनाक जानवर और विस्तृत, वीरान, निर्जन क्षेत्र इस शैली के लिए आदर्श रूप से उपयुक्त हैं।” मारकुसी पात्रों पर मँडराने वाले खतरों को प्रमुखता देते हैं, “जिन्दा रहने के लिए पक्का इरादा होना चाहिए”, किसिक कहता है। जीवित रहने के लिए मनुष्य को अपनी निपुणता और साहस का परिचय देना होता है। कामिक शीघ्र ही अपनी वस्तुओं और अपने आस-पास की वस्तुओं का इस्तेमाल करना सीख लेता है - सील मछली की त्वचा से तैयार थैला, उसकी रस्सी, उसके कपड़े दुर्दिन में भोजन की आपूर्ति कर सकते हैं।

हालाँकि उत्तरजीविता के इस संघर्ष में मनुष्य अकेला नहीं है- उसकी प्रतिस्पर्धा अन्य सारे जीवों से होती है जैसे कस्तूरी बैल, भेड़िया और सफेद भालू। मारकुसी के उपन्यास में जानवर का चरित्र जटिल है, जो मनुष्य से बेशक क्रूरता से पेश आता है पर उसकी बेरहम आदिम इच्छा अपना बचाव सुनिश्चित करने की रणनीति का हिस्सा है। अपने इर्द-गिर्द

प्रकृति और पर्यावरण की क्रूरता के विरुद्ध मनुष्य और जानवर लगातार लड़ाई लड़ते रहते हैं - मनुष्य अपने बचाव के लिए सामाजिक मूल्य और परस्पर सहयोग के मूल्य का विकास करते हैं। मानव की भूमिका एक ऐसे समग्र संगठन में परिभाषित होती है जिससे हम उसे अलग करके नहीं देख सकते। आर. डब्ल्यू. नोबल के अनुसार, ऐसे मूल्यों के बल पर मारकुसी का इनुइट उपन्यास उन अग्रगामी लेखकों की रचनाओं के मुकाबले अपनी विशिष्ट पहचान बनाता है जिनसे मारकुसी की तुलना की जा सकती है- “कथानक में सामुदायिक मूल्यों की एक संरचना है जिसकी वजह से यह कहानी उत्तर अमरीकी अग्रगामी साहित्य से अलग ठहरती है”।

रूढ़ियों से इतर: समानता का विचार

अपने युग का साक्षी, मारकुसी का उपन्यास अप्रत्याशित रूप से पुरुषों और स्त्रियों के बीच समानता के मूल्य को हस्तांतरित करता है। बिल्कुल इव्ह थेरिओ के केबेकवा उपन्यास *अगागुक* (1958) की तरह, जिसमें एक इनुइट स्त्री पुरुषों के सम्मुख अपनी शक्ति का दृढ़तापूर्वक प्रयोग करती है, *शिकारी का हार्पूज* एक समकालीन इनुइट स्त्री की छवि प्रस्तुत करता है, जिसमें वह सशक्त और साहसी है तथा जो अपने दृष्टिकोण को स्थापित करने में संकोच नहीं करती। मारकुसी की रचना में तीन-तीन उत्कृष्ट प्रकरणों में स्त्री-पुरुष समानता के विचार को सराहा गया है। सबसे पहले, जब सनकी भालू की खोज में निकले शिकारी बहुत दिनों बाद भी लौटकर नहीं आते तो ऊरामिक और तूगाक गाँव के बुजुर्ग का विरोध करती हैं, जो तुरंत रक्षा-दल भेजने के पक्ष में नहीं हैं और इंतजार करना चाहते हैं। ऊरामिक बुजुर्ग को यह कहकर लताड़ती है कि “तुम इतने सठिया गए हो कि तुम्हें यह बात समझ में नहीं आती कि शिकारी जहाँ भी जाएँ हर रोज उनकी जान को खतरा है”। जो लोग शिकारियों की खोज में निकलने के लिए आतुरता दिखाने के बजाय चुप हैं, उन्हें ऊरामिक करारा जवाब देती है, “ऐसा है तो मैं खुद जाऊँगी” हालाँकि अपनी सहेली तूगाक के साथ खानगी के समय ऊरामिक बताती है कि मर्दों

Much of our oral history
has been lost or no longer
told by those who possess
such knowledge of our past.
It is my hope that story of
Kamik will live on for many
generation to come as it
is part of our history.
This is small part of our
past.
This is a story of my people.

Marionne Pataung

INUKJUAQ, QUEBEC

September 15, 2010

वर्तमान पुस्तक में प्रकाशित लेखक की पांडुलिपि का उद्धृत अंश

ने अपनी राय बदल दी है और वे उनके साहस को देख शर्मिन्दा होकर उसके निकलने से पहले ही कूच कर चुके हैं- “मुझे लगता है कि उन्हें ग्लानि हुई है।”

फिर पड़ोसी गाँव किकिताजोआक के मुखिया की बेटी पुतूकती के चरित्र-चित्रण में उसका इरादा उभरकर आता है -

मेरा नाम पुतूकती है [...] मेरे एक भाई और एक बहन हैं और मैं सबसे छोटी हूँ। बहुत छोटी होने की वजह से मैं बहुत चुलबुली थी। औरतों के काम से अधिक मैं मर्दों के काम-काज पसंद करती थी। मैं अपने भाई के साथ सफर पर निकल पड़ी, जिससे मर्दों और उनके काम-काज के बारे में मैंने बहुत कुछ सीखा। मुझे लगता है कि मैं घुमकड़ बनूँगी। मुझे नहीं लगता कि मैं किसी एक जगह टिक पाऊँगी। मुझे खतरों से खेलना खूब पसंद है!

जब इस्सा उसे समझाता है कि “इस तरह के अभियान में स्त्री के लिए कोई जगह नहीं है” तो वह दो टूक जवाब देती है, “दूसरे लोगों की तरह मैंने

भी कई खतरे झोले हैं।” इस्सा उसके इस दुस्साहस की तारीफ करता है और कामिक तो उससे प्यार करने लगता है एवं उससे शादी करना चाहता है।

अंत में, पुतूकती के पिता और गाँव के मुखिया अंगूतिक के विचार में स्त्रियों के प्रति एक खुलापन दीखता है। एक तरफ वह अपने साथ चलने के लिए कोई शर्त नहीं रखता, “जो भी इस अभियान में शामिल होना चाहता है, उसका स्वागत है”, उसने कहा। इस तरह से ऊरामिक और तूगाक बिना किसी अड़चन के मर्दों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर शिकारियों की खोज में निकल पड़ती हैं। दूसरी तरफ वह फैसला करता है कि नेत्सियाक के हाथ में अपनी बेटी पुतूकती का हाथ देना उसका काम नहीं है, “यह फैसला मैं अपनी बेटी के हाथों में छोड़ता हूँ।”

स्त्री-पुरुष समानता वाले समाज की दिशा में परिवर्तन पूरी रचना में दीखता है। कामिक गाँव के लोगों को चैनल के दूसरी तरफ पुतूकती और अंगूतिक (जो इस समानता के पोषक है) के गाँव किकिताजोआक में विस्थापन, इस परिवर्तन का प्रतीक है। उपन्यास में मूल्यों पर जो सवालिया निशान लगाए गए हैं, उनके बारे में समीक्षक कुछ खास मुखर नहीं हैं।

हार्पून : एक प्रतीक

यह रेखांकित करना मायने रखता है कि इस उपन्यास का शीर्षक शिकारी और उसका हार्पून नहीं है, बल्कि शिकारी का हार्पून है। हार्पून रचना का मुख्य विषय है। शिकार के इस हथियार और औज़ार के सहारे ही मनुष्य अपने वातवारण से रू-ब-रू हो पाता है। प्रकृति, जानवर और दूसरे व्यक्तियों से घिरे मनुष्य के लिए हार्पून कमजोरी का उतना ही प्रतीक है, जितना बल का। मारकुसी की रचना में हार्पून इनुइट समुदाय के रहन-सहन की विशिष्टता का घनीभूत रूप है।

इस उत्तरजीविता के उपन्यास में मुख्य पात्र के व्यक्तित्व विकास की कहानी है, जिसमें हार्पून मुख्य पात्र युवा कामिक का हर मोड़ पर साथ देता है और दूसरे इंसानों के बीच पूरी तरह से एक इंसान बनाता है। इसी हार्पून के सहारे वह पहली सील मछली को मारता है, जिससे धैर्य और हाथ साधने की सीख मिलती है, “रुको!” कामिक ने खुद से कहा, “इतनी जल्दी वार मत करो। अच्छे मौके का इंतजार करो।” “वह अपने हार्पून की नोक को सूराख की तरफ़ करके इंतजार करने लगा। कामिक ने पूरी ताकत से वार किया”। इसी हार्पून के सहारे वह साहस पूर्वक पहले भालू पर अपनी जीत हासिल करने में सफल होता है। अपने इसी हार्पून की नोक के बल पर वह बर्फ़ में अपना इग्लू बनाकर ठंड की हर शाम कुशलता से अपनी रक्षा कर पाता है।

29

इस बात से बेखबर कि काल उन पर आँख गड़ा बैठा है, शिकारी अपनी राह पर बढ़े जा रहे थे। हाथ में हार्पून लिए उन्होंने मीलों-मील नाप दिए, आराम करने के लिए रुके भी नहीं।

या फिर, “बस अपने हार्पून से लैस शिकारी साहसपूर्वक बढ़े चले जा रहे थे”।

उत्तरजीविता के प्रतीक और इस तरह से कमजोरी और शक्ति के प्रतीक हार्पून के सहारे आदमी जरूरत पड़ने पर कभी अपने बर्फ की मजबूती का अनुमान लगा पाता है तो कभी सील, भालू और दूसरे आदमियों पर हमला कर पाता है। इस तरह से रात के कड़के की ठंड में असुरक्षित अकेले कामिक को इस औज़ार का साथ मिलता है। “उसके पास ही उसका हार्पून पड़ा है, जीवन और मृत्यु का अस्त्र। हार्पून - देखन में छोटन लगे, घाव करे गंभीर।”

हार्पून से धमकाकर या अपने पास हार्पून होने मात्र से मनुष्य अपने शत्रु को टल सकता है। जब नेत्सियाक इस्सा को पुतूकती के पास जाने से मना करता है “अगर तुम उसके पास भी फटके तो मेरे हार्पून की नोक को तुम अपने गले पर पाओगे”, उसे जवाब मिलता है, “हार्पून तो मेरे पास भी है”। हार्पून के लक्ष्यार्थ का विस्तार इनुइट मर्दों के लिंग के रूप में हो ही सकता है पर साथ में औरतों के द्वारा भी इसका इस्तेमाल एक नैतिक शक्ति के रूप में हो सकता है। अपने दोस्त के द्वारा चिढ़ाए जाने पर मिक्कि अपने साथी को बताता है कि उसे अपने साहस का परिचय देना है और अभियान में शामिल होना है, “वरना मेरी बीवी हार्पून लेकर धरती के अंतिम छोर तक मुझे खदेड़ेगी”।

जॉन सी. स्कॉट के अनुसार, आम तौर पर हार्पून जिन्दगी और मौत के बीच के संघर्ष का प्रतीक है। इसलिए उपन्यास की अंतिम पंक्तियों में कामिक की आत्महत्या तर्कसंगत लगती है। वरना एक ऐसे उपन्यास में, जो प्रमुख पात्र की उत्तरजीविता और उसके व्यक्तित्व विकास की कहानी है, इस घटना का औचित्य बताना मुश्किल होता। स्कॉट मानते हैं कि कामिक ने हार्पून के बल पर पूरे उपन्यास के दौरान साहस पूर्वक प्रकृति का सामना किया

है, पर प्रकृति ने उसके पिता, साथियों, माता और भावी पत्नी को उससे छीनकर उसे शिकस्त दी है। अब वह प्रकृति से पछड़ नहीं खाना चाहता। उसके पास अपनी शक्ति को दृढ़ता पूर्वक स्थापित करने के लिए उसके पास एक ही चारा है कि वह खुद अपने हार्पून से अपनी जिन्दगी खत्म कर दे, इसके पहले कि प्रकृति उससे यह अधिकार भी छीन ले।

आत्महत्या की विलक्षणता

कहानी के बिल्कुल अंत में कामिक की आत्महत्या से पाठक हैरान रह जाता है। कम से कम अंग्रेजी संस्करण में प्रकाशक ने इसे एक बाल उपन्यास के रूप में ही पाठक के सामने प्रस्तुत किया है। इसमें एक बालक के युवावस्था के विभिन्न चरणों को दर्शाया गया है। पाठक को उपन्यास की अंतिम पंक्तियों में एक भयंकर पराजय दीखता है, क्योंकि अपने करीबी लोगों को खोकर कामिक हाथियार डाल देता है और खुद को काल के हवाले कर देता है।

इस घटनाक्रम पर प्रकाश डालते हुए समीक्षकों की टिप्पणियों में परेशानी का भाव दिखता है। सबसे पहले इसे एस्किमो शैली के रूप में व्याख्यायित करने के अतिरिक्त जेम्स एच. मैकनील को कुछ और नहीं सूझता, परन्तु वह इसका और खुलासा नहीं करते, “जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, एक अविवाहित युवक कामिक नायक बनता है। अंत बिल्कुल आश्चर्यचकित करने वाला है। दक्षिण के पाठकों को इससे थोड़ी हैरानी होती है, पर यह बिल्कुल एस्किमो शैली है”।

सेठ बोव्ही और जॉन सी. स्कॉट, दोनों की ही नज़रों में कामिक का कृत्य क्रूर और शक्तिशाली प्रकृति को जीतने से रोकने की इच्छा को दर्शाता है। उसकी आत्महत्या एक तरह की जीत को दर्शाती है, जिसमें युवक की इच्छाशक्ति उसके वातावरण पर भारी पड़ती है। इस तरह से यदि देखा जाय तो इनुइट समुदाय के परिप्रेक्ष्य में उत्तरजीविता व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक है। पूरे समुदाय के लिए यह दर्शाना महत्वपूर्ण है कि आदमी प्राकृतिक शक्ति पर विजय पा सकता है, पर हाँ, एक अकेला आदमी नहीं।

आर. डब्ल्यू. नोबल सामूहिकता के तर्क के औचित्य पर बल देते हैं और आत्महत्या की गुत्थी सुलझाते हैं, जो अन्यथा ऐसा लगता जैसे लेखक ने बिना जाने-समझे रख दिया है। नोबल इसे अलग अर्थ देते हैं। उनका कहना है कि दूसरों के बिना कामिक की जिन्दगी नहीं चल सकती। इस तरह से देखें तो आत्महत्या करना कामिक की कमजोरी नहीं, बल्कि इस बात का एहसास है कि अपने समुदाय के तहस-नहस हो जाने के बाद वह अकेला नहीं जी सकता।

कथानक के गठन के हिसाब से देखें, तो कामिक की आत्महत्या पाठक के लिए आश्चर्यजनक है, परन्तु यह कृति की संरचना के अनुरूप है। इस घटना से पहले कई जगह सावधानी से इसकी घोषणा की गई है। पहली चेतावनी उस समय मिलती है, जब सील मछली का शिकार करते हुए नाऊलाक को पागलपन का दौरा पड़ता है और वह खुदकुशी की कोशिश करता है। कामिक उसे ऐसा करने से रोकता है। शिकारी नाऊलाक को “समझाने-बुझाने” में कामयाब हो जाते हैं और इस दुर्घटना को टाल देते हैं। इसके बावजूद, पागलपन का यह दौरा आत्महत्या की घटना को नाटकीय बनाता है।

एक के बाद एक तीन चरणों में, कामिक को लगता है कि आत्महत्या आफत से बाहर निकलने का एक जरिया हो सकता है। दो बार वह निराशा के पल से बच निकलता है, परन्तु तीसरी बार जान से हाथ धो बैठता है, जिससे इस रचना के भाग्यवादी चरित्र को बल मिलता है। हालाँकि यही भाग्यवादी चरित्र इस कृति के अंत को पेंचीदा बनाता है। आत्महत्या का विचार जब पहली बार उसके दिमाग में आता है, तो वह इसे एक आसान कदम समझकर खारिज कर देता है-

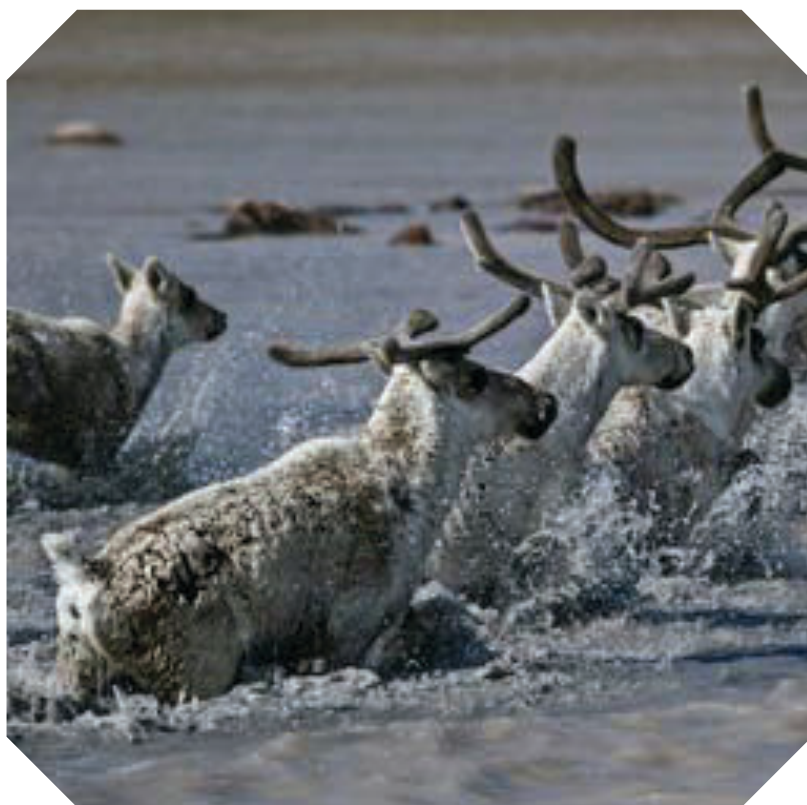
कामिक बेहद थका हुआ है। उसे जोरों से भूख लगी है। वह सोचता है कि इससे तो कहीं बेहतर था कि वह मर जाता। नहीं! ऐसे खयाल दिमाग में नहीं लाने चाहिए। अगर वह कष्ट झेल रहा है तो सिर्फ इसलिए कि वह जीना चाहता है। खुद को मौत के हवाले कर देना तो आसान है। पर जीना...

उस समय वह आत्महत्या के आसान कदम को छोड़कर जीवित रहने का कठिन फैसला लेता है। जब दूसरी बार आत्महत्या का खयाल उसके दिमाग में आता है तो अपने पास पड़े हुए हार्पून को देखकर वह खुद को मौत के करीब पाता है, “वह देर तक वहीं बेजान पड़ा रहता है। फिर उसकी नज़र पास गिरे हुए अपने हार्पून पर पड़ती है। ... उसे थोड़ा-सा कष्ट होगा, एक झटका-सा लगेगा और उसके कष्टों का समाधान हो जाएगा...”। एक अच्छा शिकारी बनने की उसकी चाह और उसके मरने से उसके करीबी लोगों का दुःख झेलना, ये दो बातें जानलेवा हरकत की तरह बढ़े कदम को पीछे खींचती हैं। तीसरी बार आत्महत्या का विचार आने तक वह एक अच्छे शिकारी होने का परिचय दे चुका होता है और उसके करीबी लोग - उसकी माँ, उसकी मंगेतर, उसके साथी - सदा के लिए आँखें मूँद चुके हैं। पहले दो बार आ चुके आत्महत्या के विचार पर अमल करने के लिए वह दूसरों से दूर चला जाता है। वह “चाहता था कि उसके साथी उसे ऐसा कदम उठाते हुए न देखें जो उसकी नियति बन चुकी है” (मैंने रेखांकित किया है)। वह याद करता है कि कैसे उसके पिता एक शाश्वत शांति की बात करते थे, जिसमें सब कुछ विलीन होकर दुबारा अस्तित्व पाता है। वह अपने हार्पून को देखकर मौत की कामना नहीं करता बल्कि उस शांति की कामना करता है, जो उसके करीब है, “समय आ गया था। शांति प्राप्त करने, अपने परिजनों और प्रियजनों से मिलने का समय आ गया था”।

और उपन्यास का अंत एक आश्चर्य और निश्चित घटना से होता है, “शिकारी के हार्पून ने अपना अंतिम घात किया।”

दानियेल शार्तिये, प्राध्यापक
केबेक विश्वविद्यालय, मॉन्ट्रियल





नुनाविक (केबेक) की एक नदी को पार करते हुए रेनडियर (कैरिबू) का झुण्ड - रोबेर फ्रेशेत



पानी से बाहर निकले हुए हिमखंड पर खड़ा आदमी दूर इशारा कर रहा है- रोबेर फ्रेशेत

लेखक का प्राक्थन

मैं बचपन में अपने पूर्वजों की कथाओं को बड़े चाव से सुनता था, खास तौर से कामिक की कहानी। एक त्रासदी में अपने करीबी लोगों की मृत्यु के बाद कामिक को अकेले ही अनगिनत खतरे उठाने होते हैं- एक सनकी भालू, बर्फानी तूफान, भूख और कभी-कभी तो प्रकृति का बेहद भयानक प्रकोप।

बचपन के दिनों से ही कामिक की कहानी मेरी स्मृति में अंकित है। पीढ़ी दर पीढ़ी अनगिनत बच्चों और बड़ों ने यह कहानी सुनी है। मैंने यह कहानी इसलिए लिखी ताकि यह जीवित रह सके। हमारे मौखिक इतिहास का एक विशाल हिस्सा समय की गर्त में समा चुका है या यों कहें कि वे लोग, जिन्हें इस अतीत की जानकारी अभी भी है, उसे हस्तांतरित नहीं कर पा रहे हैं।

मैं चाहूँगा कि कामिक की कहानी भावी पीढ़ियों को सौंपी जाय। यह हमारे इतिहास का अभिन्न हिस्सा है। यह हमारे अतीत का साक्षी है।

यह मेरे अपने लोगों की कहानी है।

- मारकुसी पात्साउक

इनुकजुआक (केबेक)

15 सितम्बर, 2010



शिकारी का हार्पूण

1969

हवा की सनसनाहट सुनाई पड़ रही थी; इग्लू पर बर्फ के थपेड़े पड़ रहे थे। ऐसे मौसम में शिकार का सवाल ही कहाँ उठता है? पिछले तीन सूर्योदय से तूफान उत्पात मचाये जा रहा था। सुलुक को मालूम था कि उनकी जिन्दगी के कुछ गिने-चुने दिन ही रह गए हैं। क्योंकि अगर बहुत जल्दी तूफान शांत नहीं हुआ, तो वे भूख से बिलबिला जाएँगे। चार सूर्योदय पहले उसने अपने बेटे कामिक के साथ दो सील मछलियों को मारा था। पर दो सील मछलियों से एक आदमी, उसका परिवार और उसके कुत्तों का भरण-पोषण ज्यादा समय तक नहीं हो सकता था।

- आज बेहतर होगा कि हम अगले शिकार के लिए अपने-अपने हार्पून को पैना बनाएँ। कामिक, इसमें तुम्हें मेरी मदद करनी होगी।

ऐसे काम-काज में अपने पिता का हाथ बँटाने में कामिक को बहुत मजा आता था। सुलुक की तरह, वह भी एक अच्छा शिकारी बनना चाहता था। उसकी नजर में उसके पिता उत्तरी क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ शिकारी थे! सुलुक को अपने परिवार का पेट पालना था, परन्तु कभी-कभी लगातार शिकार के बावजूद उनका पेट खाली रह जाता था। फिर इस मौसम में वे जानवर दुर्लभ हो रहे थे, जिन पर उनका खान-पान और पहनावा निर्भर था। ऐसा लगता है कि प्रकृति उनका विनाश करने पर तुली हुई है।

- पिताजी, आशा है कि हम अपने अगले शिकार में एक ध्रुवीय भालू को मारेंगे। कामिक ने उम्मीद भरे स्वर में कहा।

-मुझे भी यही आशा है, सुलुक ने जवाब दिया। भालू से अच्छा माँस निकलता है और उसकी खाल से अच्छे-खासे पहनावे भी बन जाते हैं।

कामिक की माँ, ऊरामिक सील मछली के छाले को चबाकर नरम कर रही थी। उनके शिकार के अगले अभियान से पहले वह सुलुक और कामिक के लिए नए बूट बनाना चाहती थी। ऐसी माँ को पाकर कामिक खुद को खुशानसीब समझा था। उसकी माँ में कितने सारे गुर हैं और वह दिन-भर उनके लिए अच्छे-अच्छे पहनावे बनाने में लगी रहती है। बिना गर्म पोशाक के

यहाँ कोई भी जीवित नहीं रह सकता। पर ऐसे पहनावे हों, तो घनघोर बर्फानी मौसम भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

शायद, नसीब उनका साथ देगा... शायद वे एक ध्रुवीय भालू को मार पाएँगे। पर कामिक को मालूम है कि भालू का शिकार करना मुश्किल है। कई सूर्योदय तक कड़ी मेहनत करने के बाद भी शिकारी अक्सर खाली हाथ लौटते हैं। उत्तरी क्षेत्र में जो सबसे मुश्किल काम है, वह है भालू का शिकार करना! यदि यह जानवर घिर जाय तो आदमी पर वैसे ही हमला करता है जैसे कुत्तों पर और कितनों की जान ले सकता है। यही जीवन है! इस बर्बर प्रदेश में मनुष्य और पशु को जीवित रहने के लिए शिकार करना होता है; यह जरूरी है कि वे दूसरों की जान लें। यहाँ केवल सबसे ताकतवार जीवित रहते हैं। कमजोर जल्द ही जान गँवा बैठते हैं।

कामिक शिकार की कला सीख रहा था। उसके पिता ने उसे सारी तकनीकें सिखा दी थीं, जो एक अच्छे शिकारी को जानना चाहिए। कामिक सही प्रहार करने के लिए अपने हार्पून को फेंककर अभ्यास कर रहा था। अभी सोलह वर्ष की उम्र में ही वह एक व्यस्क व्यक्ति की तरह निशाना साध लेता था। वह अब शिकार अभियान में शरीक होने के लिए एकदम तत्पर रहता था! कामिक ने अक्सर उस वाक्य के बारे में सुना था जब एक दिन उसके पिता ने एक हाथ से ही एक भालू को मार गिराया था। सुलुक का नसीब अच्छा था। भालू ने उसके पिता को जमीन पर पटक दिया था, पर वह भालू के सीने में हार्पून घुसेड़ने में सफल हो गए थे। लम्बे उषाकाल और अनगिनत गोधूलि बेला के दौरान, सुलुक फिर से नहीं चल पाया था। आज भी वह लँगड़ाकर चलता था। हालाँकि कामिक की नजर में वह उत्तरी इलाके का बेहतरीन शिकारी था।

उस रात आफ़त आयी। कामिक लेटा हुआ था। उसे नींद नहीं आ रही थी। सहसा सन्नाटे को चीरती कुत्तों की गुर्राहट सुनाई दी। कामिक ने गाढ़ी नींद में सोये अपने पिता को जगाया। इसके पहले कि कामिक अपने बूट पहनता, सुलुक ने फटाफट कपड़े पहने और बाहर निकल पड़ा। जब उसने अपना

सिर यह देखने के लिए उठाया कि क्या हो रहा है- कहर! सुलुक के सामने एक बड़ा भालू खड़ा था। कामिक ने अपने पिता को हार्पून भाँजते हुए देखा। सुलुक ने निशाना साधा और उसका हार्पून सीधे भालू की पिछली टाँग में जाकर धँस गया। जानवर ने एक भयंकर चीत्कार किया। उछलकर उसने कुत्तों से मुँह मोड़ा और उसी फुर्ती से गायब हो गया जैसे आया था। डर के मारे कामिक को जैसे लकवा मार गया हो, वह अपनी जगह से हिला भी नहीं। कितने शर्म की बात है। “और मैं अपने को शिकारी समझता था...”, उसने सोचा।

दूसरे लोग अपने-अपने हार्पून से लैस दौड़ रहे थे। बहुत देर हो चुकी थी। भालू रफूचककर हो चुका था। शिकारी स्तब्ध होकर पाँच कुत्तों को देख रहे थे जिन्हें भालू ने मौत के घाट उतार दिया था। कुछेक के पेट चीर-फाड़ डाले गए थे, तो कुछेक की टाँगें उखाड़ ली गयी थीं। किसी का गला कटा हुआ था तो किसी की अँतड़ियाँ बाहर निकली हुई थीं। उनके खून से बर्फ लाल हो रही थी।

बाद में कामिक के पिता ने शिकारियों को बताया कि भालू के रंग-ढंग कुछ अजीबोगरीब थे। वह जानवरों को अच्छी तरह जानता था। जिस भालू ने उनके कुत्तों की जान ली थी, वह सामान्य ढंग से पेश नहीं आ रहा था। सच तो यह है कि भालू केवल कुत्तों से भिड़ने के लिए गाँव में नहीं आता। जिस भालू ने उस रात उन कुत्तों पर हमला बोला था, वह सनकी था। सुलुक ने दो-चार बार ऐसे रोग के बारे में सुना था। हालाँकि जहाँ तक उसकी याददाश्त जाती है, केवल लोमड़ी और कुत्ते इसका शिकार होते थे। सुलुक को इसमें संदेह नहीं था कि उस भालू को रेबीज हो गया है। इस इलाके में पाये जानेवाले सभी जानवरों में रेबीज से संक्रमित भालू सबसे खतरनाक होता है। यदि दूसरे भालुओं से उसकी भिड़न्त होती है, तो वे भी सनक जाते हैं। इस तरह से, कहीं भी न तो किसी मनुष्य की खैर है, न किसी जानवर की। उस रात शिकारियों ने फैसला किया कि जो भी हो, वे भालू को जरूर मारेंगे। जल्दी-से उसे खोज कर मारना होगा! वे सुबह ही निकल पड़े।

- सुलुक ने समझाया कि उन्हें अधिकाधिक संख्या में होना चाहिए। यदि

हमारा सामना भालू से हुआ, जैसा कि मुझे उम्मीद है, यह शिकार आपकी जिन्दगी का सबसे खतरनाक शिकार होगा। जो हमारे साथ नहीं आना चाहते, अभी मना कर दें!

कामिक ने यह कह दिया होता कि उसका रुतबा एक पक्के शिकारी का नहीं है। जब उसके पिता भालू से आमने-सामने भिड़े थे, तो वह भीगी बिल्ली बना हुआ था। पर कामिक के मुँह से कुछ नहीं निकला।

सुलुक ने ऊँची आवाज में कहा, “अच्छी बात है। तुफान रुके या न रुके, हम कल सुबह तड़के निकल पड़ेंगे। इस्सा और मित्तिक गाँव और यहाँ ठहरे हुए लोगों की रक्षा करेंगे। शायद हमें लम्बे समय के लिए खाना होना पड़े... और बहुत संभव है कि हममें से कुछ लौटकर न आएँ।”

अगले दिन हवा शांत हो गयी थी पर अभी भी ठंड थी। मित्तिक और इस्सा को छोड़कर सारे शिकारी अभियान की तैयारी में लगे थे। वे अपने-अपने खयालों में डूबे थे। बेशक, उनमें से कुछ सोच रहे थे कि क्या वे इस शिकार से जिन्दा वापस आ भी पाएँगे... कुत्तो को जोतने में कामिक ने अपने पिता की मदद की। उसकी माँ ऊरामिक ने बर्फ में चलने वाली गाड़ी, स्लेज पर राशन-पानी और औज़ार रखे। आखिरकार सभी तैयार हो गए। चाबुक पटकते ही कुत्ते भाँकते हुए आसमान से बातें करने लगे। कामिक और सुलुक ने हाथ हिलाकर ऊरामिक का अभिवादन किया। उनके इग्लू से लग कर खड़ी ऊरामिक ने अलविदा का इशारा किया। उसके प्रियजन एक बार फिर खतरे का सामना करने के लिए निकल रहे थे। हालाँकि यह शिकार अब तक के सारे शिकारों से ज्यादा खतरनाक बताया गया था।

ऊरामिक के मन में सवाल आया, “ये लोग क्यों इस भालू के पीछे पड़े हैं?” इसका जवाब उसे मालूम था। यदि भालू को मारा नहीं गया तो आज नहीं तो कल वह फिर हमला बोलेगा और वह पूरे उत्तरी क्षेत्र को खतरे में धकेल देगा। ऊरामिक इग्लू के दरवाजे की तरफ गयी, रुकी और फिर शिकारियों को अंतिम बार देखने के लिए मुड़ी। वे बहुत दूर जा चुके थे। वह अपने प्रियजनों को ऐसे देख रही थी जैसे उनसे फिर कभी मिलना नहीं हो

पायेगा। वह खुद को ढाँढ़स तो बैँधा रही थी कि सब कुछ ठीक होगा, पर उसे शिकार की भीषण रक्तरंजित त्रासदी का पूर्वाभास हो रहा था।

स्लेज पर बैठे-बैठे कामिक अपने चारों तरफ देख रहा था और पिछली रात की घटना को सहसा याद कर रहा था। एक कुत्ते का पेट चीर दिया गया था, दूसरे की टाँग उखाड़ दी गयी थी। कैसा भयानक दृश्य था! कामिक में आत्मविश्वास की कमी थी। साहस जुटाने के लिए वह दुहरा रहा था कि शिकारी उसे अपने जैसा ही समझते हैं। इस मान-सन्मान के काबिल बनने के लिए वह कोई कसर नहीं छोड़ेगा! उनके अभियान में साठ कुत्ते और नौ आदमी थे। सभी मँजे हुए शिकारी थे, जिन्होंने हजारों-हजार खतरों का सामना किया था - जंगली जानवर, भूख, रोग, प्रकृति के प्रकोप। कामिक ने सोचा कि सब मिलाकर इस भालू पर काबू पाने की पूरी संभावना है। हालाँकि एक बात तय थी- यदि उनका सामना जानवर से हुआ तो उनके कुछ कुत्ते और शायद कई साहसी व्यक्तियों को उसका कोपभाजन बनना पड़ेगा। कितने? कब? यह तो वक्त ही बताएगा।

वह अपने शिकार की शुरुआत द्वीप पर करेंगे। जब वे वहाँ पहुँचे तो तूफान के कारण सारे निशान मिट गए थे, पर शिकारी जानते थे कि वहाँ अनगिनत भालू के बच्चे पल रहे हैं। उन्होंने अक्सर इस जगह भालूओं को देखा और मारा था। दिन ढलते ही उन्होंने उसी जगह रात गुजारने का फैसला कर लिया। कामिक को ध्यान आ रहा था कि उसके पिता ने भालू की पिछली टाँग को जख्मी किया था। जब दिन चढ़ेगा तो शायद उसे बर्फ में भालू का थोड़ा-बहुत खून दिखेगा और वह उसके निशान का पीछा कर पाएगा। अभी शाम हो गयी थी। वह कल निशान खोजेगा।

ऊरामिक को चैन नहीं था। कड़ी मेहनत में जुटे रहने के बावजूद उसका ध्यान शिकारियों पर चला जाता था। वह लगातार इसी खतरे के बारे में सोच रही थी कि यदि उन्हें भालू मिल गया तो वे उसका सामना कैसे करेंगे। आखिर

में, वह अपनी पड़ोसन तूगाक के घर गयी।

- अकेली-अकेली मैं बहुत परेशान रहती हूँ, उसने कहा। क्या शिकारियों के लौटने तक मैं तुम्हारे साथ रह सकती हूँ?

- बेशक, ऊरामिक! जब से मेरा आदमी गया है, मैं बहुत अकेली महसूस करती हूँ। तुम्हें यहाँ देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

उस शाम गाँव के सबसे उम्रदराज व्यक्ति सूना ने बात करने के लिए लोगों को इकट्ठा किया।

- आपको बेशक पता होगा कि मैंने क्यों आप सबको बुलाया है, उसने कहा। हमारे कुत्तों पर हमला करने के लिए भालू गाँव में आया था। मुझे खतरे के नाम पर हंगामा पसंद नहीं, और इसीलिए मैंने आपको बुलाने में देर की। पर, अब खतरे का सामना करने का समय आ गया है। सुलुक कहता है कि भालू रेबीज से संक्रमित है। मैं यह नहीं कहता कि यह बात सही है। मैं यह भी नहीं कहता कि यह बात गलत है। जो भी हो, हमें सावधानी से काम लेना चाहिए। मेरी कुछ सलाह है। आप लोग रात में अकेले न निकलें। यदि बाहर निकलना निहायत जरूरी हो, तो अपने आस-पास ठीक से देखें। यहाँ तक कि दिन में गाँव से दूर न जाएँ। अगर हम पर हमला हुआ तो कंधे से कंधा मिलाकर हमें मुठभेड़ करनी होगी। यदि हममें से किसी को कोई भालू दीखे तो उसे हम सबको तुरंत सचेत करना होगा। हमले की सूरत में हम एक साथ सारे मोर्चों पर भालू से भिड़न्त करेंगे। और खासकर डर को अपने ऊपर हावी न होने दें। आशा करता हूँ कि हमें मुठभेड़ करने की नौबत नहीं आएगी, पर हमें इसके लिए तैयार रहना चाहिए।

कुत्तों के भौंकने से शिकारी हड़बड़ाकर उठ बैठे। इससे पहले कि वे वस्तुस्थिति समझें, उन्होंने अचानक से इग्लू को टूटकर अपने ऊपर गिरते हुए देखा और एक भयंकर दहाड़ सुनी। कामिक समझ गया। उसने ऐसे वारदात के बारे में अक्सर सुना था। यह नज़ारा कई बार दुहराया गया था- भालू उन पर हमला कर रहा था!

अपने ऊपर गिरी हुई बर्फ की सिल्लियों से बाहर निकलने में कामिक को मुश्किल हुई। आखिरकार, जब वह अपने हार्पून को पकड़कर भालू की तरफ मुड़ा, उसने अपने पिता को हार्पून उठाये हुए देखा। पर भालू में ज्यादा फुर्ती थी और वह अकेले आदमी पर लपका। कामिक अपने पिता को सचेत करने के लिए चिल्लाया। पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। भालू ने अपने मजबूत जबड़े सुलुक की कमर पर गड़ा दिये थे। कामिक दुबारा चिल्लाया और उनकी तरफ दौड़ा। भालू अपने बंदी को दाँत के शिकंजे में कसकर अपने सिर को हर दिशा में झकझोर रहा था। कामिक ने न आव देखा न ताव बस अपना हार्पून चला दिया। उसका अस्त्र जानवर की खाल में जा धँसा और उसने सुलुक के बेजान शरीर को छोड़कर दहाड़ मारी। जब दूसरा हार्पून उसके बगल में जाकर धँसा, तब वह कामिक के ऊपर छलांग मार रहा था। किसिक ने अपना अस्त्र भालू के ऊपर फेंका था! अपने पूरे वजन के साथ भालू कामिक के ऊपर जाकर ढेर हो गया। दूसरे लोग दौड़े। उन्होंने हर तरफ से जानवर पर प्रहार किया और इतने घाव किये कि उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। फिर उन्होंने कामिक को जानवर के नीचे से हटाया। वह छूटते ही सुलुक की तरफ दौड़ा, जो अभी भी बर्फ पर जड़वत् पड़ा हुआ था। अपनी आँखों में आँसू लिए कामिक ने अपने पिता को गोद में सुलाया।

सुलुक ने धीरे-से अपनी आँखें खोली। वह मुश्किल से साँस ले पा रहा था।

- कामिक, अब मेरी कहानी खत्म हुई। मैं तुमसे विनती करता हूँ कि भालू को खोज निकालो। अपनी जिन्दगी में पहली बार मुझे लग रहा है कि मुझे शांति मिलने वाली है। आखिरकार, मुझे सुकुन मिल गया। मृत्यु की इस शांति में मैं समय के अंतिम छोर तक आराम करूँगा। एक दिन तुम्हें भी यह शांति मिलेगी। मैं तुम्हारा और दूसरे लोगों का इंतजार करूँगा।

कामिक हतप्रभ होकर अपने पिता को देख रहा था। वह किस भालू की बात कर रहे हैं? अचानक उसे ध्यान आया कि जिस भालू ने उसके गाँव पर हमला बोला था, उसकी पिछली टाँग पर घाव बना था। इस भालू की पिछली टाँग पर घाव नहीं था। अब उसे अपने पिता की बात समझ में आयी। जिस

भालू को उन्होंने मारा था, वह वही भालू नहीं था जिसकी उन्हें तलाश थी। शिकार खत्म नहीं हुआ था।

अगले दिन सुबह उन्होंने सुलुक को द्वीप पर दफन कर दिया और उसकी कब्र को उस सफेद भालू की खाल से ढक दिया, जिसने सुलुक की जान ली थी।

- हम दिन-भर यहीं रहेंगे, किसिक ने बताया । हम कल यहाँ से निकलेंगे। मैंने तह-ए-दिल से सुलुक को वादा किया था कि हम शिकार तब तक जारी रखेंगे जब तक हम उस भालू को नहीं मार देते जिसने हमारे गाँव पर धावा बोला था।

उस रात हवा और हिमपात की गर्जना काफी तेज थी। अगले दिन शिकारी निकल नहीं सके। बर्फानी तूफान के खत्म होने तक उन्हें वहाँ रुकना पड़ा। राहत के लिए कुछ देर पर कोई न कोई बाहर जाता था। लौटने पर वह पूरी तरह बर्फ से ढँका होता था और ठंड से काँप रहा होता था। दो सूर्योदय तक वे वहाँ से निकल नहीं सके। तीसरी रात हवा शांत हुई। शिकारियों ने उसके बाद समझा कि अगले दिन तड़के वे अपनी किस्मत आजमा सकते हैं। सूरज की पहली किरणों के साथ ही उन्होंने फैसला कर लिया कि क्या करेंगे।

- हमलोग केवल आधे दिन सफर करेंगे, किसिक ने कहा। बाकी समय दिन में हम शिकार करेंगे। इस तरह से हमारे कुत्ते ज्यादा नहीं थकेंगे और हम अपने लिए और उनके लिए राशन-पानी का इंतजाम कर सकेंगे। आपको मालूम है कि कितनी भी ठंड हो भूख हमारा पीछा नहीं छोड़ती।

- हमारे माँस का भंडार कल खत्म हो जाएगा, कामिक ने बताया। फिर हम क्या खाएँगे? और क्या खाएँगे हमारे कुत्ते?

- चिंता मत करो, किसिक ने जवाब दिया। तब तक सील मछली खोजने के लिए हमारे पास काफी वक्त है। यदि अगले दो सूर्योदय तक हम उन्हें नहीं पकड़ पाए, तो हमारे और जुते हुए कुत्तों के लिए हमारे पास मरे हुए कुत्ते काफी पड़ेंगे। इसमें कोई संदेह नहीं कि बर्फानी तूफान से हमारे कुछ चौपाये तो जरूर मरेंगे।

कुत्तों की गिनती करने के लिए शिकारी बाहर निकले। दरअसल उनमें दो ठंड की भेंट चढ़ गए थे।

- ... कामिक ने कहना शुरू किया। मैंने आज तक कभी कुत्तों का माँस नहीं खाया है!

- तुम्हें इसके लिए शायद मन बनाना पड़ेगा, किसिक ने गंभीर मुद्रा में जवाब दिया। जिन्दा रहने के लिए पक्का इरादा होना चाहिए।

- तुमने कभी खाया है? कामिक ने पूछा।

- हाँ!

- कैसा लगता है?

- धिनौना!

- यह तो उत्साहजनक नहीं है...

- मुझे मालूम है, कामिक! उम्मीद है कि इसकी नौबत नहीं आएगी, पर हो सकता है कि तुम्हें इस पर विचार करना पड़े। अच्छा, निकलने की तैयारी की जाय!

उस दिन वे लोग ज़्यादा दूर नहीं गए। मुलायम बर्फ की वजह से कुत्तों को आगे बढ़ने में मुश्किल हो रही थी। थके होने के बावजूद वे आगे बढ़ते रहे। दोपहर होने पर शिकारियों ने एक बर्फ के टीले की ओट में पड़ाव डाला ताकि खुद को हवा से बचा सकें। उन्होंने एक इग्लू बनाया और वे बर्फ की दरार में शिकार करने चल पड़े। उन्हें तीन आलू (बर्फ में सूराख) मिले जिससे सील मछली निकलकर जमे हुए पानी की सतह पर साँस लेने आती है। एक-एक आदमी हर आलू को छेँककर खड़ा हो गया। काफी देर तक शिकारी बिना किसी कामयाबी के इंतज़ार करते रहे। शीत लहर के सामने उनकी हिम्मत जवाब दे रही थी। खुद को गर्म करने के लिए उन्हें इधर से उधर चहलकदमी करनी पड़ रही थी। सूरज के डूबते-डूबते उन्होंने तीन में से दो 'आलू' तोड़ डाले थे और वे तीसरे की तरफ बढ़ रहे थे। पहरा देने वालों में किसिक सबसे

पहला था, पर उसे पैर में इतनी ठंड लगी कि वह ज्यादा देर टिक नहीं पाया। नाऊलाक ने उसकी जगह ली और हिम्मत से शीत लहर का सामना करता रहा। उसके पाँव टिक नहीं रहे थे, पर वह मन मारकर बिना हिले-डुले खड़ा रहा। इतनी देर खड़े-खड़े वह मति-भ्रम का शिकार हो गया।

- निकल बे, नीच जानवर! नाऊलाक बुदबुदाया। अगर तू नहीं निकला तो तेरी खैर नहीं!

नाऊलाक का दिमाग खराब हो रहा था। उसने अपने हार्पून के दो टुकड़े कर दिये और जोर-जोर से चीखने लगा। उसके बाद जमीन पर पसरकर अपना सिर बर्फ पर पटकने लगा। वह रो रहा था। कामिक तुरन्त समझ गया कि क्या हो रहा है! वह नाऊलाक की तरफ लपका, पर अचानक से उसके दिल की धड़कन तेज हो गयी। नाऊलाक धीरे-धीरे खड़ा हो रहा था, अपने टूटे हुए हार्पून को हाथ में लेकर उसके नोकरदार सिरे को अपने गले की तरफ ले जा रहा था। वह खुद अपनी जान लेने जा रहा था। एक छलांग मारकर कामिक उसके नजदीक पहुँच गया। उसने नाऊलाक के हाथ से हार्पून छीनने की कोशिश की, पर नाऊलाक ज्यादा ताकतवार और उम्रदराज था और उसने कामिक को जमीन पर पटक दिया। नौजवान ने नाऊलाक को देखा। नाऊलाक उसके ऊपर खड़ा हार्पून से उसे मारने के लिए तैयार था। जैसे ही नाऊलाक ने अपना अस्त्र चलाया, कामिक ने पलटी खाई और हार्पून उससे कुछ सेंटीमीटर दूर जमीन में धँस गया। कामिक झटके से उठा और उसने अपनी पूरी ताकत लगाकर नाऊलाक को एक घूँसा जमाया। नाऊलाक अचानक से जमीन पर गिर पड़ा। दूसरे शिकारी दौड़ते हुए आए और उन्होंने दोनों को छुड़ाया और नाऊलाक को समझाया-बुझाया।

- आपस में मार-काट करके हम स्थिति से बाहर नहीं निकल सकते हैं। किसिक ने कड़ी आवाज में कहा। जिन्दा रहने के लिए और इस भालू को परास्त करने के लिए हमें एक स्पष्ट और जबरदस्त सोच की जरूरत है। अब आगे हिंसा नहीं होगी, नाऊलाक! हम पर पहले ही हद से ज्यादा हिंसा हुई है और हमारी मुश्किलें अभी खत्म नहीं हुई हैं। हमारा काम हिंसा का मुकाबला

करना है, हिंसा फैलाना नहीं। हमें अपना मानसिक संतुलन बनाये रखना है, नाऊलाक! यह बात मत भूलना!

शर्म से पानी-पानी होकर नाऊलाक बिना एक शब्द कहे दूर छिटक गया। कामिक आलू (बर्फ के सूराख) छेंककर खड़ा हो गया और सील मछली का इंतजार करने लगा।

दिन ढल गया था। ठंड के मारे पथराया हुआ कामिक बिल्कुल छोटा महसूस कर रहा था, जैसे अँधेरी दुनिया में गुम हो गया हो। उसका मन रोने को कर रहा था। कुछेक सूर्योदयों में ही कितना कुछ घट गया था! रेबीज से संक्रमित भालू, उसके पिता की मृत्यु, कुत्तों की मौत और अब नाऊलाक के साथ उसका झगड़ा... वह यह सब नहीं चाहता था। वे लोग कभी भी अपना मानसिक संतुलन खो सकते थे। नहीं! यह हरगिज नहीं होना चाहिए! इस इलाके में जीवित रहने के लिए साहसी होना चाहिए। कामिक को अपनी माँ की याद आयी तो उसके गालों पर आँसू ढलक गए। अचानक से कुछ बुलबुलों के फूटने से वह वापस वास्तविक दुनिया में आ गया। कोई सील मछली!

आलू में एक सील मछली थी! कामिक का दिल बेतहाशा धड़कने लगा। क्या जानवर सतह पर आएगा? कामिक साँस लेते हुए भी घबरा रहा था। उसे लगा कि एक अरसे बाद आलू से कुछ हल्का शोर आया। “रुको!” कामिक ने खुद से कहा, “इतनी जल्दी वार मत करो। अच्छे मौके का इंतजार करो!” वह अपने हार्पून की नोक को सूराख की तरफ करके इंतजार करने लगा। आखिरकार उसे सील मछली की साँस लेने की भारी आवाज सुनाई दी। जानवर को तनिक भी खतरे का अंदेशा नहीं था। कामिक ने पूरी ताकत से वार किया।

उसका हार्पून सील को जा लगा था! उसने सील को टटोलकर खोजने के लिए अपने हाथ जल्दी से जमे हुए पानी में डाले। क्या उसने इतनी ताकत से प्रहार किया था कि सील मर जाय? क्या उसका निशाना सही था? अचानक से उसे लगा कि उसकी अंगुलियों ने सील को छुआ है। सील मछली मर चुकी थी। कामिक ने दूसरे शिकारियों को चिल्लाकर आगाह किया। वे दौड़ते हुए आए और उन्होंने आलू के इर्द-गिर्द बर्फ को तोड़ा ताकि सील को

पानी से बाहर निकाल सकें। वहाँ सभी खुश थे, उछल रहे थे और चिल्ला रहे थे। वे नाच रहे थे! कुछ ही मिनटों में वे अपना सारा दुःख भूल गए।

- सुबह कुत्ते का गोشت नहीं खाना पड़ेगा! कामिक नाचते हुए चिल्लाया। दोपहर में कुत्ते का गोشت नहीं खाना पड़ेगा! शाम में कुत्ते का गोشت नहीं खाना पड़ेगा!

उस शाम शिकारियों ने भरपूर भोजन किया, पर आवश्यकता से ज्यादा नहीं। उन्हें अपने शिकार के राशन को बचाकर रखना था। जब रात में कामिक सोने गया तो उसे फिर भालू का खयाल आया। वह उसे कहाँ मार पाएगा? उस भालू का अगला शिकार कौन होगा? उत्तरी इलाके के लोग, इनुइट लोग, आखिरकार कब शांति से जी पाएँगे?

अगले दिन सुबह-सुबह शिकारी वहाँ से आगे चल पड़े। सूरज निकलने से पहले उन्होंने अपना रास्ता पकड़ लिया था। दिन-भर चलते रहने के बाद भी उन्हें उस जानवर का कोई सुराग नहीं मिला, जिसे वह खोज रहे थे। शाम में उन्होंने पड़ाव डाला। वे बुरी तरह थक गए थे। एक बार फिर भालू ने उन्हें चकमा दे दिया था।

- आज रात हम कुत्तों को नहीं बाँधेंगे, किसिक ने कहा। ऐसे में यदि भालू ने उन पर हमला किया तो वे बेहतर स्थिति में रहेंगे।

यह फैसला एक भयंकर भूल, एक जानलेवा भूल साबित होने वाला था। अगले दिन पौ फटते ही, शिकारी एक-एक कर धीरे-धीरे उठने लगे। उन्होंने थोड़ा-बहुत माँस खाया। कामिक खुश था कि उसे कुत्ते का माँस नहीं खाना पड़ा।

- सफर के लिए एक अच्छा दिन, नाऊलाक ने इग्लू से निकलते हुए कहा।

अचानक वह जल्दी से अंदर लौटा।

- कुत्ते गायब हो गए हैं! वह चिल्लाया।

- क्या बात कर रहे हो? कामिक ने कहा।

- वे गायब हो गए हैं! नाऊलाक ने दुहराया।

सभी लोग हड़बड़ाकर इग्लू से बाहर निकले। कुत्तों का कहीं अता-पता नहीं था।

शिकारियों ने ज़मीन पर एक पदचिह्न देखा और उसका पीछा किया। फिर वे एकदम से रुक गए- भालू के निशान थे! अभी-अभी के बने थे! तब उन्हें समझ में आया कि क्या हुआ है। रात के वक्त भालू उनके पड़ाव तक आया था। नहीं बंधें होने के कारण कुत्ते उसके पीछे दौड़ पड़े थे।

- अब यही बाकी रह गया था! किसिक ने कटु स्वर में कहा।

- तुम्हें लगता है कि वे वापस आएँगे?

- शायद! लेकिन कब? एक दिन में, दो दिन में, या शायद एक हफ्ते में!

- हम क्या करेंगे?

- इंतजार! अगर वे कल या परसों तक वापस नहीं आए तो हम पैदल अपने घर चले जाएँगे।

- पैदल? यह नामुमकिन है! हमें गाँव से निकले कई सूर्योदय बीत गए!

- मुझे मालूम है। हमारे पास कोई और चारा है क्या? हम ज्यादा देर तक यहाँ इंतजार नहीं कर सकते। हम जितनी जल्दी यहाँ से निकल लें, हमारे हक में अच्छा रहेगा। हम एक दिन इंतजार करेंगे। अगर तब तक कुत्ते लौटकर नहीं आए तो हम पैदल चल देंगे।

- हमारे पास कुत्ते न हों तो भालू का सामना करना असंभव है, कामिक ने मायूस होकर कहा।

- हम आठ शिकारी हैं और हमारे पास हार्पून हैं, किसिक ने जवाब दिया। हमें कभी निराश नहीं होना चाहिए!

- साढ़े सात शिकारी, कामिक ने कहा। मैं अभी तक एक असली शिकारी नहीं हुआ।

-ऐसा मत कहो! किसिक ने जवाब दिया। जो भी एक भालू को मारता है, एक असली शिकारी है।

कामिक को तब ध्यान आया कि जिस रात उसके पिता की मृत्यु हुई थी, उसी ने सबसे पहले भालू पर प्रहार किया था। शिकारियों के कानून के अनुसार जानवर पर उसी का अधिकार है।

अगले दिन पौ फटने तक उन्होंने इंतजार किया, पर कुत्ते वापस नहीं आए। जितना राशन-पानी ढोना उनके लिए संभव था, उतना उठाकर वे वापसी की राह पर चल पड़े। किसिक दल के आगे-आगे चल रहा था। कामिक उसके नजदीक ही था।

- हमें घर पहुँचते-पहुँचते कितने दिन लग जाएँगे? कामिक ने उससे पूछा।

- शायद दस सूर्योदय, शायद ज्यादा.... शायद कम, अगर किस्मत अच्छी रही।

- अगर किस्मत अच्छी नहीं रही तो?

- हम कभी अपने गाँव को नहीं देख पाएँगे।

- तुम्हें लगता है कि हमारे साथ ऐसा होने वाला है?

-पता नहीं! हम घर से बहुत दूर हैं और खतरे अनगिनत हैं।

- हम नहीं लौटे तो हमारे परिवार का क्या होगा?

- हमारे परिवारों को बेशक दूसरे गाँव में जाकर बसना पड़ेगा।

- तुम्हें लगता है कि हम एक दिन उनसे मिल पाएँगे?

- हाँ... अगर हमने सही रास्ता लिया और बीच में राशन-पानी का इंतजाम हो सका।

- शिकारी चलते जा रहे थे। बस अपने हार्पून से लैस शिकारी साहसपूर्वक बढ़े चले जा रहे थे।

ऊरामिक बेहद कमजोर हो गयी थी। जब से शिकारी गए थे, उसकी नींद उड़ गयी थी। तूगाक और वह साथ-साथ रहती थीं और काम करती थीं।

- ऊरामिक, जो बूटें तुम बना रही हो, वे शानदार हैं!

- शुक्रिया, तूगाक!

- उम्मीद करती हूँ कि शिकारी जल्दी लौट आएँगे। हमारे पास राशन-पानी ज्यादा नहीं है। बशर्ते कि मित्तिक और इस्सा सील मछली का इंतजाम करें! उस रात, इस्सा और मित्तिक तीन सील मछलियाँ लेकर लौटे। गाँव के सारे निवासी मित्तिक के घर इकट्ठा हुए और अच्छी-खासी दावत हुई।

शिकारी थके हुए थे, पर वे आगे बढ़ते रहे। शीत लहर के बावजूद, वे पसीने से लथपथ थे। कामिक सबसे पीछे चल रहा था। वह अपना चेहरा बर्फ से पोंछने के लिए कुछ पल रुका। “कम से कम एक चीज यहाँ है जिसे हम पसंद भी करते हैं और वह प्रचुर मात्रा में भी है”, उसने सोचा। बिना आराम किए वे अनंत काल तक चलते रहे। आखिरकार उन्हें रुकना पड़ा- उनकी सारी माँसपेशियाँ त्राहि-त्राहि कर रही थीं। उनकी चाल धीमी हो गयी, वे धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़े और बहुत देर यों ही जड़वत् पड़े रहे।

- अब और कितना रास्ता बाकी है? कामिक ने अंततः सवाल किया।

- लगभग 150 किलोमीटर, किसिक ने जवाब दिया।

- पैदल चलें तो 150 किलोमीटर भी हजार किलोमीटर लगते हैं।

- उम्मीद है कि मित्तिक और इस्सा हमारी खोज में जल्दी ही निकल पड़ेंगे, नाऊलाक ने कहा।

- मुझे नहीं लगता, किसिक ने कहा। उन्हें हमारी इतनी जल्दी वापसी की उम्मीद नहीं है और हम जल्दी नहीं लौटे तो उन्हें आश्चर्य नहीं होगा। ऊपर से, उन्हें गाँव की देख-भाल भी करनी है।

शिकारियों ने थोड़ा-बहुत माँस खाया और वे फिर से चल पड़े।

उन्हें गए काफी दिन हो गए! ऊरामिक को लग रहा था कि कहीं उनके साथ कोई ऐसी-वैसी घटना न हो गई हो। बाकी सारे लोगों को इकट्ठा करने के खयाल से वह सूना से मिलने गई। गाँव के सारे लोग सूना के घर इकट्ठा हुए।

- मुझे लगता है कि शिकारी किसी आफत में फँसे हैं, ऊरामिक ने कहा, और बेशक केवल मैं ही अकेली ऐसा नहीं सोचती। उनके गए हुए काफी दिन हो गए! कोई भी उनके बारे में बुरा नहीं मनाता, मगर यह इलाका उज्जड़ है और कुछ भी हो सकता है। इस तरह से हाथ पर हाथ धरे बैठकर हम शिकारियों की मदद नहीं कर सकते। कुछ तो करना होगा।

- हम क्या कर सकते हैं? सूना ने पूछा।

- इस्सा और मित्तिक शिकारियों की खोज में निकल सकते हैं, ऊरामिक ने जवाब दिया। या फिर वे किकिताजोआक के लोगों से मदद माँगने जा सकते हैं।

- हमारे गाँव और किकिताजोआक के बीच एक चैनल है, सूना ने कहा, और वह तैरते बर्फों से ढँका होता है। सर्दियों में भी उसका पानी पूरी तरह नहीं जमता और जो भी उसे पार करने की कोशिश करता है, उसके बर्फ के द्वारा समुद्र तक बहा ले जाने का खतरा रहता है।

- मुझे मालूम है, ऊरामिक ने कहा, मगर मैं जब छोटी थी, तो हमलोग उसे पार करते थे। सो यह असंभव भी नहीं है!

- यह पक्का नहीं है कि शिकारी मुसीबत में फँसे हैं, सूना ने कहा। शायद उन पर कोई खतरा न हो...

- तुम इतने सठिया गए हो कि तुम्हें यह बात समझ में नहीं आती कि शिकारी जहाँ भी जाएँ हर रोज उनकी जान को खतरा है, ऊरामिक ने करारा जवाब दिया। थोड़े-से सूर्योदयों के समय में बहुत कुछ घट सकता है। मेरा

खयाल है कि हमें किकिताजोआक के लोगों से मदद माँगने के लिए मित्तिक और इस्सा को भेजना चाहिए। उन्हें वहाँ जाने में तीन सूर्योदय का समय लगेगा। उनके सहयोग से इसकी संभावना ज्यादा होगी कि इस्सा और मित्तिक शिकारियों को खोज सकें और भोजन के लिए कुछ जानवर मार पाएँ। इस्सा और मित्तिक, क्या तुम लोग सहमत हो?

दोनों में किसी ने जवाब नहीं दिया।

- बहुत खूब! ऊरामिक ने कहा। ऐसा है तो मैं खुद जाऊँगी! मेरे साथ कौन चलना चाहता है?

- मैं! तूगाक ने कहा।

- नहीं! मित्तिक ने झट से कहा। दो औरतें कैसे चैनल को पार कर पाएँगी? वैसे भी, मैं आपको अपने कुत्ते नहीं दूँगा।

- तो हम कुछ नहीं करेंगे? ऊरामिक ने सिसकते हुए कहा। लेकिन याद रखो, अगर शिकारियों के साथ कुछ भला-बुरा हुआ तो उसकी जिम्मेवारी तुम्हें लेनी होगी और जिंदगी-भर तुम्हें इसका अफसोस रहेगा।

- ठीक है! मित्तिक ने रूखे स्वर में कहा। कुत्तों को ले जाओ! पर ध्यान रहे कि अगर तुम लोगों को कामयाबी नहीं मिली और तुम लोगों की मृत्यु हो गयी तो यह मेरी जिम्मेवारी नहीं होगी।

- तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि हमलोग कामयाब नहीं रहेंगे? हम कामयाब होंगे। है न तूगाक?

- ऊरामिक, क्या तू सही कह रही है? हाँ, मुझे लगता है कि तू सही कर रही है। हम कामयाब होंगे!

- हम पौ फटते ही निकल पड़ेंगे।

- मैं तैयार रहूँगी।

- दोनों औरतें बाहर निकल गयीं। लोग अवाक् होकर मुँह ताकते रह गए।

वे बिना किसी हरकत के पड़े हुए थे। केवल उनकी साँस की घरघराहट से पता चलता था कि वे अभी भी जिन्दा हैं। वे जड़वत् पड़े हुए थे। उनके मुँह बर्फ में धँसे हुए थे और उनकी माँसपेशियाँ हिलने से इन्कार कर रही थीं। अपने गाल पर पड़े ठंडे बर्फ की परवाह किये बिना, कामिक उसी जगह सो गया था, जहाँ वह थककर गिरा था। फिर, माँसपेशियों में दर्द के कारण उसकी नींद टूट गयी। वह पीठ के बल सीधा लेटकर तारों को निहारने लगा। ये किस चीज के बने होते हैं? ये इतनी दूर वहाँ कैसे पहुँच गए? रात में जब चारों ओर अँधेरा होता है, तो ये क्यों चमकते हैं? अचानक कामिक के सामने उत्तर ध्रुवीय ज्योति बिखर गई। वह नज़ारा कितना खूबसूरत था! कैसी दुनिया है यह - एक तरफ तो इतनी खूबसूरत, दूसरी तरफ इतनी क्रूर?

- जाग तूगाक! दिन लगभग निकल आया है। ऊरामिक सिर से पाँव तक ओढ़-पहनकर निकलने के लिए तैयार थी और पूरी ताकत से तूगाक को झकझोर रही थी।

- मैं मित्तिक के यहाँ कहने जा रही हूँ कि वह कुत्तों को तैयार करे, उसने कहा।

ऊरामिक बाहर निकली। दिन निकलने वाला था। हवा ठंडी परन्तु धीमी थी। ऊरामिक मित्तिक के इग्लू की तरफ बढ़ी। मगर कुत्ते कहाँ गये? मित्तिक ने क्या उसे झूठ बोला था? वह मित्तिक के इग्लू में दौड़ते हुए घुसी। सूना वहाँ उसका इंतजार कर रहा था।

- कुत्ते कहाँ है? उसने पूछा। मित्तिक कहाँ गया?

- मित्तिक और इस्सा किकिताजोआक गये हैं।

- मगर... क्यों?

- मुझे लगता है, उन्हें ग्लानि हुई है।

- मैं कल शाम के अपने कठोर व्यवहार के लिए शर्मिदा हूँ। मुझे उम्मीद है कि तुम मुझे माफ़ कर दोगे।

- मैं तुम्हें पहले ही माफ़ कर चुका हूँ। तुम बहुत साहसी हो ऊरामिक!

ऊरामिक तूगाक के घर लौट आयी। वह अभी भी सो रही थी। वह इससे ज्यादा क्या कर सकती थी? कुछ भी नहीं, सिवाय उम्मीद करने के कि मित्तिक और इस्सा किकिताजोआक सकुशल पहुँच जाएँगे।

इस्सा और मित्तिक तेज कदमों से बढ़े जा रहे थे। कुत्ते दोनों व्यक्तियों की उम्मीद से कहीं ज्यादा तेज खुशी-खुशी दौड़ रहे थे। आज तो उनका रास्ता आसान होगा। लेकिन कल... चैनल को पार करना खतरे से खाली नहीं होगा। इस्सा और मित्तिक के समुद्र में बह जाने का खतरा था। क्या उनके पास कोई चारा था? जब खतरा आएगा, तो साहसपूर्वक उसका सामना करेंगे।

भीमकाय जानवर बोझिल कदमों से निरुद्देश्य चला जा रहा था। पता नहीं क्यों उसकी पिछली टाँग में दर्द है। वह खाने के बारे में सोच रहा है। उसे साफ-साफ दिखाई नहीं देता और उसके सिर में तकलीफ है। उसे लगता है कि सामने कुछ है- शायद कोई शिकार? वह एक बर्फ के टीले की चोटी तक चढ़ता है ताकि अपने आस-पास ठीक से देख सके। नीचे कुछ सफेद-सा देखकर वह वापस नीचे उतरता है और चल पड़ता है। यह एक दूसरा भालू है और वह खा रहा है! उसे यह आहार हर हालत में चाहिए। वह दौड़ने की कोशिश करता है, पर उसकी टाँग में बेहद दर्द है। वह दूसरे भालू को मुठभेड़ के लिए ललकारने के लिए उसकी तरफ देखकर गुर्राता है। अपने आहार को बचाने की ठानकर दूसरा भालू मुड़ता है। वे एक-दूसरे से भिड़ जाते हैं।

दोनों भालू एक-दूसरे को काट खाते हैं और चीर-फाड़ करते हैं। उनके नुकीले पंजे और दमदार दाँत खाल में धँसते हैं। दोनों गिर पड़ते हैं और

उनके गर्म खून से बर्फ लाल हो जाती है। उनके गर्जन से हवा में इतनी कम्पन होती है, जितनी कि ठनका के ठनकने से होती है। वे एक-दूसरे को फिर से काट खाते हैं और अपनी जीभ पर एक-दूसरे के खून का स्वाद महसूस करते हैं। अब यह जरूरी है कि उन दोनों में से एक या तो मर जाय या अपनी हार मानकर भाग खड़ा हो। दोनों ज़मीन पर उठा-पटक करते हैं, एक-दूसरे को काट खाते हैं, चीर-फाड़ करते हैं। अब यह लड़ाई खत्म हो गयी। दोनों में से एक, दूसरे के बेजान, मृत शरीर पर खड़ा होकर दहाड़ता है और अपनी जीत का ऐलान करता है।

विजेता उस माँस को अपने अधीन करता है, जिसकी उसे लालसा थी। वह सील के धड़ को निगल जाता है! फिर वह अपने घाव को चाटता है। उसके पंजे में तकलीफ़ है। उसका आराम करना जरूरी है। फिर, बहुत देर बाद वह जागता है। उसे फिर दर्द महसूस हुआ। उसे फिर भूख लगी, पर अब उसके पास माँस नहीं है और उसे फिर शिकार करना है। फिर से! वह बहुत मुश्किल से उठता है और चल पड़ता है, बिना सोचे-समझे कि वह कहाँ जा रहा है। उसकी पिछली टाँग में बेहद दर्द है, पर उसके पास चारा नहीं है। खाना तो उसे खाना ही है। अब दिन ढल गया और उसे कुछ भी नहीं मिला। वह थका-माँदा है। उसे भूख लगी है। उसके लिए आराम करना जरूरी है। वह लेट जाता है। यहाँ वह बिना किसी हमले के भय के सो सकता है। इस इलाके में वह जानवरों का राजा है। जब तक उसकी आँखें खुलती हैं, अँधेरा गायब हो चुका है। उसका दर्द कम हो गया है, पर भूख अभी भी है। आज, उसे खाना ही होगा। वह मुश्किल से उठता है और बोझिल कदमों से चल पड़ता है, बिना जाने कि कहाँ पहुँचना है। फिर, उसे अपने सामने कुछ महसूस होता है- कुछ छोटी-छोटी चलती-फिरती आकृतियाँ! ये आकृतियाँ आगे बढ़ती हैं। वह इंतजार करता है। अब वह उन्हें साफ-साफ देख सकता है- ये शिकारी हैं, जो पैदल जा रहे हैं। बिना कुत्ते के शिकारियों पर धावा बोलना आसान है! वह उनका इंतजार करेगा और अचानक से हमला कर देगा।

इस बात से बेखबर कि काल उन पर आँख गड़ा बैठा है, शिकारी अपनी राह पर बढ़े जा रहे थे। हाथ में हार्पून लिए उन्होंने मीलों-मील नाप दिए, आराम करने के लिए रुके भी नहीं। वे अंततः थककर ज़मीन पर पसर गए।

- तुम्हें लगता है कि इस मुसीबत से निकलने की संभावना है? कामिक ने वृद्ध सूना के पोते से पूछा।

- जब तक हम जिंदा हैं, मुसीबत से निकलने की संभावना बरकरार है, युवा सूना ने कहा। दो संभावनाएँ हैं - पैदल घर लौटना या दूसरों से मुलाकात... अगर वे हमारी खोज में निकल पड़े हों।

कुछ ही दूरी पर भीमकाय जानवर घात लगाए बैठा था। वह सही मौके का इंतजार कर रहा था। वह मौका आएगा, इसमें कोई संदेह नहीं। इंतजार करना होगा, धैर्य रखना होगा। आठ शिकारी उसे मार भी सकते हैं। सूझा-बूझा से काम लेना होगा। भालू जीना चाहता है और आठ शिकारियों से उसकी भूख कई दिनों तक मिटेगी। उसका सबसे अच्छा अस्त्र होगा - अकस्मात् आक्रमण करना। उन पर तब धावा बोलना होगा, जब वे सबसे कमजोर होंगे। कोई चूक नहीं होनी चाहिए। बस कुछ किलोमीटर की बात है और वे उसकी पहुँच के अंदर होंगे। तब वह उन्हें मार पाएगा।

कुछ किलोमीटर का रास्ता धीरे-धीरे कट रहा था। थके हुए शिकारियों की जमात में कामिक सबसे पीछे चल रहा था। अचानक बर्फ के एक टुकड़े पर पैर पड़ने से वह लड़खड़ाया और सीधे ज़मीन पर धड़म से गिर पड़ा। कुछ मिनट वह यों ही पड़ा साँस लेता रहा। उसके फेफड़े फटने-फटने को थे। आखिरकार, उसने बर्फीली हवा में जमकर साँस ली, तब जाकर कहीं उसके शरीर में जान आयी। वह धीरे-धीरे उठा। दूसरे लोग अब आँखों से ओझल हो चुके थे। उसने धीरे-धीरे चलना शुरू किया। वह आराम से चल रहा था। अचानक एक भयानक गर्जन सुनकर वह वहीं रुक गया-अरे, भालू!

कामिक फटाफट एक बर्फ के टीले की चोटी पर चढ़ गया। उस से ठिठका उसने भालू को शिकारियों पर हमला करते हुए देखा। जानवर ने इस तरह अचानक शिकारियों पर हमला किया था कि वे मुकाबले के लिए तैयार नहीं थे। कामिक ने देखा कि भालू शिकारियों की तरफ तेजी से दौड़ रहा है। शिकारियों ने आनन-फानन में अपने-अपने हार्पून फेंके। पर कुछ ज्यादा ही जल्दबाजी हो गयी थी। उन्होंने निशाना साधने में भी समय नहीं लगाया था और यह चूक उनके लिए जानलेवा साबित होने वाली थी। बस एक हार्पून भालू के कंधे पर जा लगा, पर उसकी जान लेने में सफल नहीं रहा। कामिक ने देखा कि भालू ने युवा सूना को पंजे से उछाल दिया। शिकारी चीखा और बेजान होकर जमीन पर पटखनिया खाया। भालू अब दूसरों पर हमला कर रहा था और उन्हें काट रहा था, उनकी त्वचा चीर रहा था। उसने तीन शिकारियों को मार गिराया।

उन्होंने अपने-अपने बर्फ काटने वाले चाकू निकाले, जो ऐसे भीमकाय जानवर के सामने हास्यास्पद था। कामिक यह बात जानता था। शिकारियों की खैर नहीं। एक मन किया कि वह उनकी ओर दौड़ जाय, उनके साथ मिलकर भालू का मुकाबला करे। पर इसका क्या फायदा? आधे शिकारियों के मारे जाने के बाद ऐसा करना आत्मघाती होता। भालू उन पर झपट रहा था, जो अभी तक काल के गाल में नहीं समाये थे। कामिक को पता था कि वह अकेले भालू का मुकाबला नहीं कर सकता। तभी उसके पिता की बात उसे याद आयी- हर सूरत में भालू को मारना है। हर सूरत में! कामिक टीले की चोटी से फटाफट उतरा और चिल्लाते हुए सीधे जानवर की तरफ झपटा। भालू ने अपने मजबूत जबड़े में एक आदमी का बेजान शरीर लिया हुआ था। उसे छोड़कर वह पीछे मुड़ा। मुठभेड़ के बाद थके होने के कारण भालू भारी कदमों से कामिक की तरफ बढ़ा। नौजवान हाथ में हार्पून लिये अपने दोनों पैरों पर तनकर खड़ा था। वह अपने साथियों के द्वारा की गयी गलतियों को नहीं दुहराएगा। वह घबराएगा नहीं।

कामिक और जानवर एक-दूसरे की तरफ बढ़े जा रहे थे। उन्हें पता था कि इस मुकाबले के बाद दोनों में से कोई एक ही बचेगा। अपने पिता

की मौत का बदला लेने के लिए और अपने लोगों की रक्षा के लिए कामिक मुठभेड़ करेगा। भालू जीवित रहने के लिए, भोजन के लिए जान लेगा। कामिक में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह पहल करे। वह इंतजार कर रहा था कि उसका प्रतिद्वंद्वी पहले हमला करे। अगर वह अपना हार्पून चलाएगा, तो बेशक वह जानवर को जाकर लगेगा, पर इससे जानवर मरेगा नहीं। केवल एक हार्पून भालू को मारने के लिए काफी नहीं होता।

अब वे दोनों बिल्कुल पास-पास थे। कामिक हार्पून लिये खड़ा था। जानवर उछला और हार्पून ठीक उसके गले के नीचे जाकर धँस गया। भालू ने चीत्कार किया और एक जबरदस्त पंजा चलाया। अस्त्रविहिन होकर कामिक एक तरफ उछला ताकि एक मरे हुए शिकारी के हार्पून पर कब्जा कर सके। अब वह दुबारा मुकाबला करने के लिए तैयार था! दो हार्पून शरीर में घुसने के बाद भालू लहलुहान हो रहा था। उसने दुबारा धावा बोला लेकिन कामिक अपने दोनों पैरों पर तनकर खड़ा था। पंजे की एक चोट से भालू ने कामिक का हार्पून गिरा दिया। कामिक फुर्ती से हार्पून पकड़ने के लिए लपका और उछलकर वापस आ गया, हमले के लिए तैयार। ठीक उसी समय उसकी नजर सूना पर पड़ी। उसका शरीर लहलुहान था और वह उठने की कोशिश कर रहा था। सूना चीखा। भालू पलटा और उसकी तरफ लपका। कामिक को यही मौका तो चाहिए था! वह जानवर के पीछे दौड़ा। जब तक वह भालू के बगल में हार्पून घुसेड़ता, भालू सूना के पास पहुँच चुका था। जानवर दर्द से चीत्कार उठा। इसके पहले कि वह दुबारा पलटे, कामिक ने उसकी खाल से हार्पून निकाला और दुबारा चोट किया। भालू ने उछलकर उसे एक पंजा मारा और ज़मीन पर गिरा दिया। बिना किसी अस्त्र के कामिक उसके रहम-ओ-करम पर था। उसका प्रतिद्वंद्वी उसे मारने के लिए आगे बढ़ा, मगर सूना दुबारा उठा और उसने अपना हार्पून भालू की खाल में घुसेड़ दिया। जानवर गिर पड़ा। इस बार कामिक उठा, उसने अपना हार्पून लिया और उससे भालू पर चोट किया, एक बार और, फिर एक बार, तब तक जब तक कि भालू ने अंतिम बार चीत्कार नहीं किया।

कामिक सूना की तरफ लपका और उसने उसे अपनी गोद में लिटया।

- मैंने भी अपने आप से एक वादा किया था, सूना ने साँस भरते हुए कहा। कामिक, हमने तुम्हारे पिता से किये वादे को पूरा किया। मेरे दादा सूना से कहना कि मैंने खुशी-खुशी अपनी जान दे दी। मैं शाश्वत शांति को प्राप्त करने जा रहा हूँ।

- सूना, मैं तुम्हें कोई वादा नहीं कर सकता। इस अभियान के सदस्यों में केवल मैं ही जीवित हूँ और हम दोनों ही यह बात जानते हैं कि एक अकेले शिकारी का निर्वाह इस इलाके में लम्बे समय तक नहीं हो सकता। सभी मर चुके हैं! किसिक, नाऊलाक, नापाशी... वे सभी मर चुके हैं और बहुत जल्दी मेरी बारी आने वाली है।

- उम्मीद मत छोड़ो, कामिक। तुम्हें याद है, किसिक ने क्या कहा था... कभी भी निराश नहीं होना चाहिए। कम से कम तुम्हें कोशिश जरूर करनी चाहिए...

- अवश्य... मैं संघर्ष जारी रखूँगा। पर मुझे कोई उम्मीद नहीं।

सूना अब बिल्कुल सुनने की स्थिति में नहीं था। एक बार फिर किसी मरणासन्न व्यक्ति ने उसकी जान बचाई थी क्योंकि सूना ने जब उठकर उसकी मदद की थी तो वह जिन्दगी की अपेक्षा मौत के ज्यादा करीब था। सूना, कामिक बुदबुदाया, जब तक तुम्हारे जैसे लोग जिन्दा हैं, हमारे इलाके और लोगों का कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता। अगर मैं इस मुसीबत से उबर गया, मैं तुम्हारी तरह बनने की कोशिश करूँगा। मैं पूरी तरह कोशिश करूँगा कि हमारी परिस्थिति उतनी प्रतिकूल न रहे। कामिक ने बहुत देर तक अपने दोस्त के बेजान शरीर को गले लगाये रखा। सूना को शांति प्राप्त हो गयी थी, ऐसी शांति जो केवल मृत लोगों के हिस्से आती है।

दिन ढल रहा था। ऊरामिक और तूगाक कच्ची सील मछली खा रही थीं।

- जीवन इतना कठोर क्यों है? थकी हुई आवाज में ऊरामिक पूछती है। क्या हमें जीवित रहने के लिए हमेशा संघर्ष करना होगा? कभी-कभी मुझे

लगता है कि बेहतर है कि मर जाएँ...

- ऐसा मत बोल ऊरामिक ! कौन जानता है? शायद एक दिन वक्त पलटे।

- तूगाक, तू सपना देख रही है!

- कुछ सपने साकार भी होते हैं।

- मुझे नहीं लगता।

इस्सा और मिक्तिक एक बर्फ के टीले की चोटी पर चढ़ आए थे, जहाँ से उन्होंने अपने चारों तरफ़ कई किलोमीटर के घेरे तक नज़र दौड़ायी। दूर बहुत दूर, क्षितिज पर चैनल दीख रहा है। उसके पार किकिताजोआक फैला है। चैनल जोखिम भरा है, क्योंकि जाड़े के दिनों में उस पर जमी बर्फ़ कभी भी स्थिर नहीं होती और आदमी एक हिमखंड से दूसरे हिमखंड पर फुर्ती से नहीं कूदता तो उसे पानी समुद्र तक बहा ले जा सकता है।

इस्सा और मिक्तिक चैनल के किनारे पहुँचते हैं। उनकी असली परीक्षा की घड़ी आ गयी है। इस्सा चाबुक की मार पर कुत्तों को दौड़ा रहा है। यहाँ से आगे वे एक सेकेंड भी आराम नहीं कर पाएँगे। वे पसीने से लथपथ दौड़े जा रहे हैं। बड़े हिमखंड आपस में टकरा रहे हैं। थोड़ी-सी भी चूक हुई तो उनके बीच आदमी पिस जाएगा। चैनल के बीचो-बीच नसीब उनका साथ छोड़ देता है। कुत्ते थके होने के कारण भयंकर भूल करते हैं। उनमें से एक का पंजा एक तैरती हुई बर्फ़ के टुकड़े पर पड़ता है और वह फिसलकर पानी में जा गिरता है। इस्सा को उसकी जोत का पट्टा काटना पड़ता है ताकि वह अपने साथ बाकियों को भी न ले डूबे। कुत्ता बह जाता है। अब केवल छः कुत्ते रह गए हैं।

- खैर मनाओ कि हम भी कुत्ते के साथ पानी में नहीं गिर गये! मिक्तिक ने कहा। पर हमारी मुसीबतें अभी खत्म नहीं हुई हैं।

कामिक ने अपने दोस्तों की लाशों को बर्फ में दफन किया। बसंत ऋतु में जब बर्फ पिघलेगी तो ये लाशें समुद्र में चली जाएँगी। हाँ, अगर कोई भालू उन्हें निगल गया तो और बात है। कितनी दुःखद बात है! एक नौजवान के लिए कितना भयावह दृश्य है यह! उसके सारे दोस्त लहलुहान बेजान पड़े हैं। हालाँकि कामिक सोच रहा था कि अब उनकी आत्मा को शांति मिल गई। लौटकर उसने भालू को हिकारत भरी नज़रों से देखा। वह अपने दोस्तों के बिखरे हुए अंग-प्रत्यंग देख रहा था। अपने पैने नाखूनों से जानवर ने उनके पेट को फाड़ दिया और अमाशय बाहर निकाल दिया था। बर्फ को लहलुहान करते नाऊलाक की अँतड़ियाँ... इस नरसंहार को देखकर कामिक अपनी उबकाई नहीं रोक पाया।

वह भालू की तरफ चला। यही भालू था जिसने शिकारियों की जान ली थी। कामिक को इस बात का अफसोस था कि यह भालू इतनी जल्दी क्यों मर गया, इसे अभी और तड़पना चाहिए था। उसने भालू की पिछली टाँग पर लगे पुराने घाव को देखा। यह वही भालू था जिसने उसके पिता की जान ली थी। अच्छा होता कि कामिक इस भालू को हल्की आँच पर मरते हुए देखता, जैसे सूना की मौत हुई थी। उसने बर्फ काटने वाले चाकू को उठाया और जानवर की खाल में घोंप दिया।

- जाग ऊरामिक। तूगाक ने अपनी सहेली को झकझोरते हुए कहा। जाग जा। तू कोई बुरा सपना देख रही है।

ऊरामिक सिर से लेकर पाँव तक काँप रही थी, चेहरे पर अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी। उसने तूगाक को हैरान होकर देखा।

- माफ करना, उसने सुबकते हुए कहा। अब मैं ठीक हूँ, बेहतर हूँ।

- तू कोई बुरा सपना देख रही थी!

- मैंने सपने में शिकारियों को देखा। वे मर गए हैं। यह सब बिल्कुल सच लग रहा था!

- मुझे कोई संदेह नहीं कि वे कुशल-मंगल हैं। तू कुछ ज्यादा ही सोचती है, ऊरामिक। और तू कुछ ज्यादा ही चिंता करती है।

- उन्हें क्यों जाना पड़ा?

- तू अच्छी तरह जानती है, ऊरामिक! वे हमारी सुरक्षा के लिए गए हैं। चिंता छोड़! वापस जाकर सो जा!

तूगाक ने आश्वासन के दो शब्द कहे जस्त्र थे, पर उसका भी चित्त शांत नहीं था। मिक्तिक और इस्सा इस समय कहाँ होंगे? वह सोच रही थी।

वे पूरी तरह अँधेरे में चलते रहे थे। वहाँ दस गुना ज्यादा खतरा था।

- तीन-चार घंटे में हम इस मुसीबत से निकल जायेंगे, मिक्तिक ने कहा।

- हाँ... इस्सा ने दौड़ते हुए साँस भरी। अगर नसीब ने हमारा साथ दिया तो!

- कल फिर से बादल छाएँगे। तारे नहीं हैं।

- उम्मीद करता हूँ कि कम से कम तूफान का सामना नहीं करना पड़ेगा!

- एक बार हम दूसरे किनारे पर पहुँच गये तो हमें कोई भी चीज नहीं रोक सकती। तूफान भी नहीं!

- मैंने प्रतिज्ञा की है कि हम मंज़िल तक जस्त्र पहुँचेंगे, भले ही हमें बाकी रास्ता रेंगकर तय करना पड़े।

जोखिम से भरी रात में दो नौजवान अपने रास्ते पर पूरी उम्मीद के साथ बढ़े जा रहे थे।

कामिक जानता है कि जल्दी ही तूफान उठने वाला है। आर्कटिक की शीत लहर उफान पर है और उसके चेहरे पर नशतर चला रही है। पर उसे

परवाह नहीं है। उसे इतनी गर्मी लग रही है कि ये हवा के थपेड़े उसे शांत बयार की तरह लग रहे हैं। कामिक को उषाकाल की पहली रोशनी दीखती है। वह पूरी रात चलता रहा है। काश! जल्दी-से तूफान आ जाये। जंगली जानवर तूफान में विचरण नहीं करते... कामिक को कम से कम उनसे डर तो नहीं होगा। सूरज आसमान पर चढ़ आया है और बर्फ हवा में इधर से उधर चक्कर खा रही है। बर्फ से बचाव के लिए कामिक अपने हाथ से चेहरा ढँक लेता है। उसे बचने की उम्मीद नहीं है, पर वह संघर्ष जारी रखता है। इस बार कम से कम प्रकृति उसके साथ है।

उनके इग्लू पर हवा के जबरदस्त झोंके आकर लग रहे थे, जिससे ऊरामिक बेचैन हो रही थी। एक घंटे से दोनों औरतों में कोई बात नहीं हुई। परन्तु दोनों एक-दूसरे की सोच को जानती थी। ऊरामिक ने ही चुप्पी तोड़ी।

- उम्मीद है कि शिकारी जल्दी ही लौट आएँगे। वरना हम भूखे मर जायेंगे।

- सब ठीक हो जायेगा। मुझे कोई संदेह नहीं। कुछ ज्यादा ही चिंता करती है तू। इस तरह से परेशान न हो।

हालाँकि खुद तूगाक का चित्त शांत नहीं था, क्योंकि वह जानती थी कि अगर शिकारी नहीं लौटे, अगर मित्तिक और इस्सा भी नहीं लौटे तो वे भूखी मर जाएँगी।

हवा और भी तेजी से बह रही थी और जिन हिमखंडों पर वे रास्ता बनाकर चल रहे थे, हर पल खतरनाक होते जा रहे थे। वे लगातार खिसक रहे थे, आपस में टकरा रहे थे, और झटके से पलट जा रहे थे। कुत्ते गला फाड़कर भाँक रहे थे। नमकीन पानी के छींटें उनके रोएँ पर पड़ रहे थे और उनकी आँखों में चुभ रहे थे। सील की त्वचा से बनी जलरोधक पोशाक पहने मित्तिक और इस्सा अभी भीगे नहीं थे। हवा के जबरदस्त झोंकों से चैनल

के हिमखंड और पानी की टकराहट की गूँज उनके कानों में सुनाई दे रही थी। गलत जगह पर पड़ा एक कदम भी उन्हें मौत के मुँह में ढकेल सकता था।

कुछ किलोमीटर आगे जाने पर इस्सा और मिक्तिक को आखिरकार ठोस जमीन दिखाई दी! जब से उन्होंने गाँव छोड़ा था, पहली बार उनके चेहरे मुस्कुराहट से खिले थे। आखिर उन्होंने कुशल-मंगल अपना रास्ता तय कर ही लिया। कुछ ही देर में उनके पैर स्थिर और पक्की बर्फ पर पड़ रहे थे। वे ज़मीन पर गिर पड़े और उनके देखा-देखी कुत्ते भी हाँफते हुए गिर पड़े। इस्सा और मिक्तिक को अपनी क्षीण माँसपेशियों में दर्द महसूस हो रहा था। इस्सा ने उठने की कोशिश की परन्तु वह लड़खड़ाया और पीठ के बल धड़ाम से गिर पड़ा। मिक्तिक ठठाकर हँस पड़ा।

-इतनी जल्दी मत उठो, इस्सा। तुम अच्छी तरह जानते हो, तैरते हुए बर्फ को पार करने के बाद हम अपना संतुलन बनाये नहीं रह सकते। थोड़ा आराम कर लेना चाहिए!

बाद में, वे उठे और किकिताजोआक की तरफ़ चल पड़े। वहाँ उन्हें मदद मिलने की उम्मीद थी।

तूफान और भी तेजी पकड़ रहा है मगर कामिक चलता जा रहा है। कुछ कदम की दूरी पर सामने उसे कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा है। फिर भी वह निश्चित महसूस कर रहा है, क्योंकि वह जानता है कि जंगली जानवर तूफान में विचरण नहीं करते। पर, हवा की वजह से उसकी गति धीमी हो रही है और उसे हवा से भीषण संघर्ष करना पड़ रहा है। सामने कुछ भी नहीं सूझता पर हर पल हवा को चीरकर रास्ता बनाना है। यदा-कदा वह अपने चेहरे से बर्फ हटाने के लिये रुकता है। जो थोड़ा-बहुत माँस उसने पीठ पर लाद रखा था, उसे सौ सील के बराबर भारी लग रहा था। हालाँकि इस समय यह उसका सबसे बेशकीमती खजाना है। इस आहार के बिना वह एक रात और जीवित नहीं रह सकता। नर्म बर्फ की वजह से हर कदम पर रुकावट महसूस होती है। कामिक को अगर घर लौटना है तो उसे हर रोज़ अधिक-से-अधिक चलना पड़ेगा। वह माँ से मिलने को आतुर है! यह खयाल आते

ही उसकी जिजीविषा वापस आ जाती है।

स्लेज के साथ-साथ दौड़ते-दौड़ते दोनों व्यक्तियों का बुरा हाल था। उनके कुत्ते धीरे-धीरे बढ़ रहे थे। पर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अब किकिताजोआक पास ही है। इस्सा और मित्तिक के दिमाग में बस एक ही बात थी - कैसे जल्दी कुशल-मंगल वहाँ पहुँच जाएँ।

- हम पहुँच गये!

इस्सा और मित्तिक दौड़ पड़े और पीछे-पीछे कुत्तों का जोत। गाँव में एक आदमी अपने कुत्तों को खाना डाल रहा था। उसी ने सबसे पहले उन्हें देखा - चैनल की तरफ़ से आती हुई दो मानव- आकृतियाँ! कुछ ही मिनटों में उन्हें देखने के लिए सैकड़ों ग्रामीण अपने इग्लू से निकल पड़े थे। कुछ उनसे मिलने के लिए आगे बढ़े। उन्हें आता हुआ देखकर इस्सा और मित्तिक ज़मीन पर पसर गए और वहीं उनका इंतज़ार करने लगे। अब वे मदद माँगने के लिए नहीं जाएँगे, बल्कि लोग उनकी मदद के लिए आएँगे।

- आपके साथ हुआ क्या है?

- आपलोग कौन हैं?

- आपलोग कहाँ से आ रहे हैं?

- हम आपके पास सहायता माँगने आए हैं। हमारे शिकारियों की जान खतरे में है।

- आइए! पहले तो आपलोग भोजन करें। तत्पश्चात बताएँ कि आपके साथ क्या हुआ है।

तीन सूर्योदय बाद इस्सा और मित्तिक ने पहली बार भोजन किया। फिर इस्सा ने उस भालू की कहानी सुनायी जिसने उनके गाँव पर हमला बोला था।

- रेबीज से संक्रमित भालू? किकिताजोआक के एक आदमी ने पूछा। सचमुच, कुछ भालू रेबीज से संक्रमित होते हैं।

- वे खतरनाक हैं। तो, हमें निकलना चाहिए पर आज नहीं।
- चैनल कैसा है?
- बेहद खतरनाक !
- और इस तूफान में आपलोग इसे पार करने में कामयाब हो गये! विश्वास नहीं होता!
- हमारी किस्मत अच्छी थी। जब तूफान उठा तो हम आधा चैनल पार कर चुके थे।
- आपके कुत्तों को खिलाया जाएगा और कपड़ों को सुखाया जाएगा। अब आपको आराम करना चाहिए।

कामिक ज़मीन पर पसर जाता है और उठने की कोशिश भी नहीं करता। उसके फेफड़े में जलन है। उसके इर्द-गिर्द बर्फ तेजी से जमा हो रही है। यदि वह स्थिर खड़ा रहेगा तो जल्दी ही दफ़न हो जाएगा। कामिक को मजबूरन उठना पड़ता है। उसे रात के लिए एक इग्लू बनाना होगा। वह अच्छी जगह की तलाश करता है और कुछ मिनटों के बाद एक के ऊपर एक बर्फ की सिल्लियों को किसी तरह रखता है। हर सिल्ली पिछली सिल्ली से ज्यादा भारी मालूम होती है। चेहरे पर बर्फ के थपेड़े पड़ने के कारण कामिक धीरे-धीरे काम करता है। पर वह बर्फ के थपेड़ों से परेशान नहीं होता, बल्कि उसे तो पसीना आ रहा है। इग्लू के बनते ही कामिक उसमें आराम करता है। अंदर अँधेरा है, पर कम से कम हवा तो नहीं है। अँधेरे में कामिक हिमाच्छादित सील मछली के एक टुकड़े को चबाने लगता है। अच्छ है! वह सील के एक छोटे छाले को बिछकर ज़मीन पर सोने के लिए लेट जाता है।

अचानक उसे किसी की आवाज़ सुनाई देती है - कामिक! कामिक ! वह हड़बड़ाकर उठ बैठता है । यह एक सपना मात्र था। उसका शरीर ठंडे पसीने से लथपथ है। यह सचमुच की आवाज़ लग रही थी! उसका दिल जोर से धड़क रहा है और धड़कनें तेज हो गई हैं। कहीं मरे हुए लोगों की आत्मा तो उसे नहीं पुकार रही? वह लेटा रहता है। उसकी आँखें खौफ़ से फटी हुई हैं।

कामिक को कब नींद आ गई, उसे पता ही नहीं चला। जब दुबारा उसकी आँखें खुलीं तो इग्लू में रोशनी हो रही थी। कामिक उठकर बाहर निकलता है। हवा अभी भी तेज है, मगर तूफान थम गया है। अपने आस-पास के इलाके को देखने के लिए कामिक एक बर्फ के टीले की चोटी पर चढ़ता है। उसे दूर पहाड़ दिखायी देते हैं। शायद तीन सूर्योदय तक पैदल चलकर वहाँ पहुँचा जा सकता है। वह उधर जाएगा पर यह जल्दी है कि वह बर्फ पर रहे। उस इलाके में धरती समुद्र से ज्यादा खतरनाक है। धरती पर लोमड़ी और कस्तूरी बैल का साम्राज्य है। वे आहार की तलाश में यत्र-तत्र-सर्वत्र विचरण करते हैं। यदि आदमी सोया न हो तो, तो लोमड़ी उस पर हमला नहीं करती, पर कस्तूरी बैल उसे आसानी से मार सकते हैं! कामिक चोटी से नीचे उतरता है और माँस का एक छोटा टुकड़ा खाने के लिए अपने इग्लू में लौटता है। जल्दी ही, वह अपना रास्ता पकड़ लेता है। उसका चित्त शांत नहीं है। कहीं यह दिन उसकी जिंदगी का आखिरी दिन तो नहीं? कहीं वह कल उगते हुए सूरज को नहीं देख पाया तो?

मित्तिक कितनी देर सोता रहा, उसे कुछ खबर नहीं। जब उसने आँखें खोली तो दूसरे खाने में लगे थे। वह भी चुपचाप उठ गया।

- इस्सा ने इग्लू में प्रवेश करते ही कहा, सभी तैयारी में लगे हैं। जल्दी करो, वरना तुम यहीं रह जाओगे! हाँ, तुम आराम करना चाहते हो, तो और बात है। किकिताजोआक में बहुत औरतें हैं...

- यह पक्की बात है कि मैं रुकना पसंद करूँगा। लेकिन बेहतर होगा कि मैं चल पड़ूँ, वरना मेरी बीवी हार्पून लेकर धरती के अंतिम छोर तक मुझे खदेड़ेगी। कहो... हमारे साथ कितने लोग आ रहे हैं?

- इक्कीस! और 150 कुत्ते!

- क्या कहा! इतनी तो हमारे गाँव की पूरी जनसंख्या है और कुत्तों की संख्या तो हमारे गाँव के कुत्तों की संख्या से बहुत अधिक है।

सूरज के आने तक सभी तैयार थे। संकेत मिलते ही वे चैनल और उसके हजारों खतरों की ओर चल पड़े। उनके साथ एक लड़की थी। यह यहाँ क्या कर रही है? मिक्तिक ने सोचा। कुछ घंटों में वे चैनल तक पहुँच गए। हवा शांत हो गयी थी और बर्फ उतनी तेजी से नहीं सरक रही थी, पर वहाँ अभी भी अनगिनत खतरे थे। तैरते हुए हिमखंडों पर एक-एक करके दल कूद पड़ा। जोखिम भरा सफर शुरू हो रहा था।

कामिक थककर चूर हो चुका है, पर वह आराम करने का जोखिम नहीं उठाता क्योंकि वह जानता है कि हर बढ़ते हुए कदम से उसके जीवित रहने की संभावना बढ़ती है। वह पसीने से लथपथ है और उसे पीठ पर रखा हुआ छोट्टा थैला सौ सील जितना भारी लगता है। उसके हाथ का चाकू इतना भारी लग रहा है कि उसे गिरने का डर है। उसके फेफड़ों में जलन है। उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा है, मानो सील के चमड़े का नगाड़ा। फिर भी कामिक अपने शरीर को चलने के लिए मजबूर कर रहा है। वह बढ़ता रहेगा जब तक सूरज डूब न जाय, जब तक उसका शरीर उसका बोझ ढोना बंद न कर दे।

वे आधा चैनल पार कर चुके थे। वे यहाँ तक की यात्रा बिना किसी बाधा के पार कर चुके थे। हालाँकि उनमें से हर कोई यह जानता था कि खतरा हर कदम पर घात लगाये बैठा है। उनकी किस्मत अच्छी थी, पर कहाँ तक किस्मत उनका साथ देगी? अंगूतिक और उसकी बेटी पुतूकती अभियान का नेतृत्व कर रहे थे। उनके ठीक पीछे इस्सा और मिक्तिक थे। पुतूकती को एक हिमखंड से दूसरे पर फुर्ती से कूदते देखकर इस्सा मुस्कुरा रहा था। उसने दूसरे लोगों को देखने के लिए सिर घुमाया। “ये लोग इस इलाके के स्वामी हैं,” उसने सोचा, “इनका और इनके कुत्तों का साथ रहा तो हम लोग शिकारियों को खोज निकालेंगे और हम भालू को मार डालेंगे।”

वे इस रात नहीं सोएँगे। यात्रा जारी रखना उनके लिए जरूरी था और

यह आसान नहीं था। सौभाग्यवश, दिन में वे बिना किसी क्षति के तैरते बर्फों को पार कर सके। पर रात में... शाम ढल रही थी और उसके साथ ही खतरा दस गुना बढ़ रहा था।

धीरे-धीरे अँधेरा फैल रहा है। कामिक अभी भी चला जा रहा है। उसका मन तो कर रहा है कि वह रुक जाय, आराम कर ले! पर वह निश्चय करता है कि उसे तब तक चलना ही है, जब तक सूरज पूरी तरह डूब नहीं जाता। यहाँ तक उसकी किस्मत अच्छी थी। एक दिन गुजर गया और वह अभी तक जिन्दा है। वह जल्दी ही रुकेगा और रात के लिए एक इग्लू बनाएगा।

अंततः चारों तरफ़ अँधेरा फैल गया। कामिक अब बिल्कुल आगे नहीं बढ़ सकता। वह बर्फ पर गिर पड़ता है और धीरे-धीरे उसकी माँसपेशियाँ ढीली पड़ जाती हैं। उसका मन करता है कि वहीं लेट जाय। परन्तु वह किसी तरह मन मारकर इग्लू के लिए अच्छी जगह तलाश करता है। वह जल्दी ही जी-जान लगाकर एक-एक बर्फ की सिल्लियाँ इकट्ठी करता है। उसे लगता है कि आखिरकार एक अरसे बाद उसका इग्लू तैयार होता है। कामिक आसन जमाता है और अपने थैले से माँस का एक छोटा टुकड़ा निकालकर गटक जाता है। उसे हिमाच्छादित माँस का पेट में गिरना महसूस होता है। हालाँकि राशन को फटाफट चट करने की अपनी इच्छा पर वह नियंत्रण रखता है। उसके जिन्दा रहने की उम्मीद इसी माँस पर टिकी है। अगर वह इसे पूरा का पूरा गटक जाएगा तो भूख से अपनी जान गँवा बैठेगा। उसके पास ही उसका हार्पून पड़ा है। जीवन और मृत्यु का अस्त्र। हार्पून - देखन में छोटन लगे, घाव करे गंभीर!

कामिक माँस को वापस थैले में डालता है। फिर, वह थोड़ी-सी बर्फ मुँह में डालकर तोड़ता है। वह हाथ धोने के लिए उसे उगलता है और बाकी पी जाता है। सील के चमड़े से बने अपने पतलून में वह हाथ पोंछता है और लेट जाता है। वह सोने के लिए अपनी आँखें बंद करता है, पर उसे नींद नहीं

आती। आज कामिक के वश में कुछ भी नहीं है। उसे अगले उषाकाल तक इंतजार करना है।

कई घंटे बाद उन्हें ठोस ज़मीन दिखाई देती है। वे जल्दी ही सुरक्षित हो जाएँगे। उनकी किस्मत अच्छी थी। रात में उनकी यात्रा के दौरान कोई आपदा नहीं आयी। एक-एक करके जत्थे ने फैले हुए स्थिर बर्फ पर पैर रखा। राहत पाकर वे जमीन पर पसर गए। अब इसके आगे उन्हें कोई भी शक्ति नहीं रोक सकती। वे मिट्टिक और इस्सा के गाँव जायेंगे। अब जबकि वे सुरक्षित थे, वे खा-पीकर आराम करने जा रहे थे। उसके बाद वह रास्ता पकड़ेंगे। पुतूकती ने किसी के आने की आहट सुनी। उस समय वह शिकारियों का भोजन तैयार कर रही थी। रात में किसी आदमी की आकृति उभर रही थी।

- कौन है? उसने पूछा।
- मैं हूँ - इस्सा। तुम कैसी हो?
- थोड़ी सी थकावट है, पर ठीक हूँ।
- इस तरह के अभियान में औरतों के लिए जगह नहीं होती।
- दूसरे लोगों की तरह मैंने भी कई खतरे झोले हैं।
- कोई विरला औरत ही होगी जो इस तरह की यात्रा कर सकेगी।
- तुम्हें लगता है कि हम शिकारियों को खोज निकालेंगे?
- हाँ, बेशक! पर न जाने वे जीवित होंगे या मृत? यह तो कोई भी नहीं जानता।
- तुम्हें लगता है कि वे मर गए हैं।
- यहाँ कुछ भी हो सकता है। हमें तैयार रहना होगा।
- मुझे पता है। उनके बारे में सोचकर डर लगता है। क्या तुम्हारे परिवार

का कोई सदस्य अभियान में है?

- मेरा भाई नाऊलाक और मेरा दोस्त कामिक। उसने केवल सोलह शीत ऋतु और सोलह गर्मियाँ देखी है। दरअसल, मैं अभियान के सारे आदमियों को जानता हूँ। और सभी के सभी अच्छे शिकारी हैं। अच्छा छोड़ो, तुम अपने बारे में बताओ!

-कुछ खास नहीं है कहने के लिए... मेरा नाम पुतूकती है, जैसा कि तुम्हें पता है। मैं अंगूतिक की बेटी हूँ, जो किकिताजोआक के मुखिया हैं। मेरी माँ तभी चल बसी जब मैं छोटी थी। मेरे एक भाई और एक बहन हैं और मैं सबसे छोटी हूँ। बहुत छोटी होने की वजह से मैं बहुत चुलबुली थी। औरतों के काम से अधिक मैं मर्दों के काम-काज पसंद करती थी! मैं अपने भाई के साथ सफर पर निकल पड़ी, जिससे मर्दों और उनके काम-काज के बारे में मैंने बहुत कुछ सीखा। मुझे लगता है कि मैं घुमकड़ बनूँगी। मुझे नहीं लगता कि मैं किसी एक जगह टिक पाऊँगी। मुझे खतरों से खेलना खूब पसंद है!

- तुम शादी नहीं करना चाहती?

- नहीं... किसी भी हालत में जल्दी नहीं। मुझे नहीं पता...

- तुम बहुत सुंदर हो, पुतूकती! अगर मैं शादी-शुदा नहीं होता तो मैं तुम्हारे पिता से तुम्हारा हाथ माँगता।

- नेत्सियाक ने सुना तो गुस्सा करेगा।

- वह कौन है?

- वह हमारे अभियान का एक आदमी है। वह बहुत गुस्सैल और ईर्ष्यालु है। वह मुझसे शादी करना चाहता था, पर मेरे पिता ने उसे मेरा हाथ देने से इन्कार कर दिया। अच्छा ही हुआ! मैं उससे प्यार नहीं करती।

- ठीक है... इस्सा ने मुस्कुराते हुए कहा। आगे से खयाल रखूँगा। मैं कोई झगड़-फसाद नहीं चाहता।

- मैं शिकारियों को बुलाने जा रही हूँ। भोजन तैयार है।

पुतूकती की आवाज सुनकर सभी शिकारियों ने अपने काम-धाम छोड़कर जमकर भोजन किया। किकिताजोआक छोड़ने के बाद यह उनका पहला भोजन था! इस्सा ने माँस का एक टुकड़ा लिया और एक बर्फ की सिल्ली पर जाकर बैठ गया। माँस का एक बड़ा टुकड़ा हाथ में लिये एक चौड़े कद-काठी का आदमी उसके पास आकर बैठ गया।

- नमस्कार! इस्सा ने कहा।

- मैंने तुम्हें अपनी पुतूकती से बात करते हुए देखा, उस दैत्य ने माँस को दाँत से काटते हुए कहा।

- मुझे पता नहीं था कि उसकी शादी हो चुकी है।

- वह अभी तक मेरी पत्नी नहीं बनी है, पर एक दिन बन जाएगी।

- तुम भाग्यशाली हो कि उसके पिता ने उसका हाथ तुम्हारे हाथ में दे दिया है। तुमलोग कब शादी कर रहे हो?

- उसके पिता ने अभी कुछ कहा नहीं है, परन्तु वह ऐसा करेंगे। एक बात और, अजनबी! मेरी पुतूकती से दूरी बनाये रखना, वरना तुम्हें मुझसे निपटना पड़ेगा।

- तुम्हारी पुतूकती? नेत्सियाक की आँखों में अपनी आँखें डालकर इस्सा ने पलटकर कहा। वह अभी तुम्हारी पत्नी हुई नहीं हैं और मुझे जितनी मर्जी, उससे बात कर सकता हूँ। बहुत बहादुर बनते हो न, मैं देखूँगा कि भालू के सामने तुम्हारी कितनी चलती है। वहाँ तुम्हारी औकात देखी जाएगी।

- यह तो एक चेतावनी थी, अजनबी! नेत्सियाक ने उसे घूरते हुए कहा। अगर तुम उसके पास फटके तो तुम अपने गले पर मेरे हार्पून की नोंक महसूस करोगे।

- चेतावनी के लिए धन्यवाद! मैं कोई मुसीबत नहीं मोल लेना चाहता, पर यह जान लो कि तुम पर मेरी नज़र रहेगी। हार्पून तो मेरे पास भी है। हाँ,

एक और बात - हर किसी को हर किसी के साथ बात करने का अधिकार है।

- मेरी पुतूकती के साथ नहीं!

- पुतूकती के साथ भी। तुम चाहे जो मर्जी कर लो, तुम किसी की आजादी नहीं छीन सकते। और मुझे तुमसे डर नहीं लगता।

- यह तो देखा जाएगा!

- अलविदा... जानवर कहीं का!

होठों पर मुस्कुराहट लिये इस्सा वहाँ से चल देता है।

वे पूरी रात सफर करते रहे। सूरज के आसमान पर चढ़ने के पहले वे गाँव पहुँच जाएँगे। दरअसल वहाँ उनका शिकार शुरू होगा।

कामिक की जिन्दगी में एक और दिन निकल आया। वह एक बार फिर से तैयार है। कल पैदल चलने के कारण उसकी माँसपेशियों में अभी भी दर्द है, परन्तु वह अपना ध्यान वहाँ से हटाता है। दर्द कहीं भी हो, उसे झेलना होगा। यदि उसे घर लौटने की उम्मीद कायम रखनी है तो यह करना होगा। तेज हवा के बावजूद पैदल चलते समय उसके शरीर से पसीना बह रहा है। कामिक चाहता है कि मौसम ठंडा रहे। वह अधिक आसानी और अधिक तेजी से बढ़ पाएगा। वह अपने चेहरे पर थोड़ी बर्फ रगड़ता है। उसके गर्म गालों पर पड़ते ही बर्फ टूट जाती है। बाद में काफी देर बाद, कामिक ऊबड़-खाबड़ बर्फ पर पहुँचता है। समतल बर्फ की अपेक्षा यहाँ उसे आगे बढ़ने में काफी मुश्किल होगी और ज़मीन पर उठे हुए पौने किनारों से लगकर उसके कैरिबू या रेनडीयर के चमड़े से बने बूट फट जाएँगे। पर कामिक के पास कोई चारा नहीं है। वह अपने बेशकीमती घंटों को इस ऊबड़-खाबड़ रास्ते में नहीं गँवा सकता। पैनी बर्फ से लगकर उसके बूटों के चिथड़े-चिथड़े हो जाएँगे। जब उसके तलवे फट जाएँगे, उसके पैर में बिवाई फटने का डर होगा। कामिक इस भयानक शीत दंश से अच्छी तरह परिचित है। पर उसे अभी और भी दूसरे खतरों का अंदेशा है! यहाँ से आगे आफत कदम-कदम पर घात लगाए बैठी है।

- पानी के लिए बर्फ लाने जा रही हूँ, तूगाक! ऊरामिक ने कहा।
- ध्यान से! याद है वृद्ध सूना ने हमसे क्या कहा था।
- मैं उसकी बात नहीं भूल सकती। चिंता मत करो, मैं नज़र रखूँगी!
- इग्लू से निकलते ही ऊरामिक उछल पड़ी।
- वे यहाँ हैं! वह तूगाक की तरफ़ लौटकर चिल्लायी, वे यहाँ हैं!
- अरे कौन लोग? उसकी सहेली ने फटाफट बूट पहनते हुए कहा। कौन लोग हैं वहाँ?
- किकिताजोआक वाले!

ऊरामिक ने दूसरों को ख़बर सुनाई। मित्तिक, इस्सा और किकिताजोआक वासियों का स्वागत करने के लिए जल्दी ही सारा गाँव उमड़ पड़ा। मित्तिक और इस्सा की पत्नियाँ उनसे गले मिलीं तो उनके खुशी के आँसू निकल पड़े। लोग खुशी-खुशी एक-दूसरे का अभिवादन कर रहे थे। बिना किसी देर के उन्होंने यह निर्णय करने के लिए सभा बुलायी कि आगे क्या करेंगे।

- मेरा नाम अंगूतिक है और मैं इस अभियान का प्रमुख हूँ। हम यहाँ रात गुजारेंगे क्योंकि रास्ता पकड़ने में काफी देर हो चुकी है। हम कल उषाकाल की पहली लाली के साथ ही निकल पड़ेंगे। अब मैं शिकारियों से सम्बन्धित कुछ प्रश्न आपसे पूछूँगा। आशा है कि आप उनका उत्तर दे पाएँगे क्योंकि जो जानकारीयाँ मैं आपसे प्राप्त करना चाहता हूँ, उन्हें खोज निकालने में उन जानकारीयों का अत्यधिक महत्त्व है। उन्हें प्रस्थान किये हुए कितना समय हुआ है?

- सत्रह सूर्योदय बीत गये, सूना ने जवाब दिया।
- वे अपने साथ कितना राशन-पानी ले गये हैं?
- पाँच या छः दिन के लिए पर्याप्त है।

- पाँच या छः दिन? अगर अब तक उन्होंने कोई शिकार नहीं पकड़ा हो तो भूख से बेजार होंगे! हम अपने साथ अच्छी-खासी मात्रा में सील, कैरिबू और मछली ले जाएँगे। उन्होंने किस दिशा में प्रस्थान किया है?
- एविक द्वीप की दिशा में।
- उनका अभियान कितने दिनों का था?
- जब तक वे भालू को खोजकर मार न दें।
- तो हो सकता है कि वे अभी तक उसे खोज ही रहे हों और उनके साथ कोई अनिष्ट न हुआ हो। या फिर भूख के मारे उनके कई कुत्ते मर गए हों, जिससे उनकी गति धीमी हो गयी हो, या फिर वे यहाँ पहुँचने ही वाले हों। यह कैसा भालू है, जिसे वे लोग खोज रहे हैं?
- सनकी! सूना ने बताया। आम तौर पर भालू कुत्तों का बिना भक्षण किये उन पर इस तरह से हमला नहीं करते! वे केवल कुत्तों से मुठभेड़ की नीयत से गाँव में नहीं आते!
- आशा करता हूँ कि मेरी बात सच न निकले... अंगूतिक ने कहना शुरू किया। पर, जहाँ तक मैं सुन रहा हूँ, मुझे लगता है कि यह भालू रेबीज से संक्रमित है। अगर ऐसा है तो वह अत्यंत खतरनाक है।
- पशु इसके शिकार कैसे हो जाते हैं?
- मुझे मालूम नहीं, इसकी शुरुआत कैसे होती है, पर मुझे पता है कि बहुत-से पशु इसका शिकार हो सकते हैं। खास तौर से लोमड़ी, पर कुत्ते भी। अनुभव से मैं यह भी जानता हूँ कि रेबीज से संक्रमित पशु जिन्हें भी काटते हैं, वे कुछ ही सूर्योदयों में मर जाते हैं। आशा करता हूँ कि आपका कोई कुत्ता संक्रमित न हुआ हो। अब जो भी इस अभियान में शामिल होना चाहता है, उसका स्वागत है। मैं जानता हूँ कि आपको अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने की जल्दी है।
- मैं चलना चाहती हूँ! उरामिक ने तपाक से कहा। मेरा पति और मेरा

बैठा उस अभियान में शरीक थे।

- और मैं अकेले सो-सोकर ऊब गयी हूँ। मुझे सचमुच अपने पति से मिलने की जल्दबाजी है... खास तौर से रात में! सब लोग ठठाकर हँस पड़े।

- अच्छी बात है! अंगूतिक ने सभा समाप्त करते हुए कहा। हम उषाकाल में प्रस्थान करेंगे।

जमीन से ऊपर उठे हुए किनारे और बारीक नोक वाली बर्फ पर कामिक बहुत चल चुका है। अब उसके बूट के तलवे फटने लगे हैं। अब कामिक को पहाड़ साफ-साफ दीख रहे हैं। पर अभी भी वे कमोबेश दो सूर्योदय की दूरी पर खड़े हैं। कामिक मन ही मन मनाता है कि रास्ते में उसका सामना भालू से न हो। उसे भूख लगती है, पर वह थोड़े से बचे हुए माँस को हाथ लगाने का जोखिम नहीं उठाता। उसका थैला लगभग खाली है। कामिक सूर्यास्त के समय माँस खाएगा। वह रुककर अलू खोजने का जोखिम नहीं उठाता। उसे देर हो जाएगी। अचानक से एक तेज दर्द उसका पैर भेदता है। अभी-अभी उसका पैर बर्फ के एक पतले लम्बे टुकड़े पर पड़ता है। उसे दर्द है पर वह सोचता है कि कम से कम उसके पैरों में अभी भी गरमाहट है। जैसे ही वह रुकेगा, ठंड का दंश उसके खून तक पहुँचेगा। कामिक बेहद थका हुआ है! उसे जोरों से भूख लगी है! वह सोचता है कि इससे तो कहीं बेहतर था कि वह मर जाता। नहीं! ऐसे खयाल दिमाग में नहीं लाने चाहिए। अगर वह कष्ट झेल रहा है तो सिर्फ इसलिए कि वह जीना चाहता है। खुद को मौत के हवाले कर देना तो आसान है। पर जीना...

कामिक ने निश्चय किया है कि वह आखिरी साँस तक संघर्ष करेगा। उसने पहले ही कई मौतें देखी हैं। हर बार, वह अपने रास्ते पर अड़ा रहा है। अब उसे घर लौटना है। कामिक अपने खयालों में इस कदर खोया है कि जमीन से बाहर निकले हुए एक बर्फ के बड़े टुकड़े पर उसका ध्यान नहीं जाता। वह लड़खड़ा कर मुँह के बल गिर पड़ता है। थके होने के कारण वह जमीन पर ही पड़ा रहता है। चेहरे पर अश्रु की जलधारा है। वह देर तक

वहीं बेजान पड़ा रहता है। फिर उसकी नज़र पास गिरे हुए अपने हार्पून पर पड़ती है। अपने हाथ में लेकर वह उसे देर तक देखता रहता है। उसे थोड़ा-सा कष्ट होगा, एक झटका-सा लगेगा और उसके कष्टों का समाधान हो जाएगा... नहीं, नहीं! कामिक अपने हार्पून को बगल में फेंकता है और रोते-रोते बर्फ पर दुबारा पसर जाता है। सारा शरीर सिसकियों से काँप रहा है।

बाद में, वह उठकर खड़ा होता है और विशाल आकाश को भावशून्य होकर निहारता है। मैं क्यों अपनी जीवन-लीला समाप्त कर रहा हूँ, वह सोचता है, एक अच्छा शिकारी इतनी आसानी से हार नहीं मानता! मुझे अपने पागलपन पर काबू पाना चाहिए। वह सोचता है कि उसके मरने से उसकी माँ को कितना दुःख होगा। वह फिर से ज़मीन पर पसरकर रोने लगता है।

बस अब रात होने ही वाली है। कामिक अब आगे नहीं बढ़ सकता। उसने अपने लिए इग्लू बनाना शुरू ही किया था कि उसके मस्तिष्क में बिजली की भाँति एक विचार कौंधता है। अगर मैं रात में यात्रा करूँ? वह सोचता है, शायद मेरे बचने की सम्भावना बढ़ जाएगी। वह जानवरों को नहीं देख पाएगा... परन्तु जानवर भी उसे कहाँ देख पाएँगे! हाँ, परन्तु जानवरों को अँधेरे में भी अपने शिकार की भनक लग जाती है और कामिक के पास ऐसी घ्राण शक्ति कहाँ है? तो क्या हुआ? वह खतरा उठाएगा। वह रात में चलेगा। यह एक अच्छा विचार है! पर ऐसा करने से वह शायद ही सो पाए... फिर भी कामिक अपनी किस्मत आजमाएगा। वह बर्फ काटकर सिल्लियाँ बनाना छोड़ देता है, माँस का टुकड़ा निकालता है और चबाना शुरू कर देता है। यही आहार रह गया है। वह पूरा माँस खा जाता है। अब भूख से मरने का खतरा भी उस पर है! अगर वह चाहता है कि जिन्दगी सलामत रहे तो उसे स्पष्ट रूप से सोचना होगा और सूझ-बूझ से काम लेना होगा।

कामिक को अहसास होता है कि उसे शिकार करना पड़ेगा। इससे उसकी चाल धीमी हो जाएगी, लेकिन... उसके पास कोई चारा है क्या? आहार के बिना वह भूख से मर जाएगा। वह दिन में शिकार करेगा और थोड़ा-बहुत सोएगा। यदि कोई शिकार उसके हाथ लगा तो वह रात-भर

चलता रहेगा ताकि अपने घर लौट सके। जैसे ही वह धरती के समीप आएगा, वह शिकार करेगा। अगर समुद्र से उसका आहार नहीं मिलता तो वह धरती पर कस्तूरी बैल, भेड़िया और तीतर का शिकार करेगा। जरूरत हुई तो लिम्पिंग तक का शिकार करेगा। वह पहाड़ों के इर्द-गिर्द शिकार करेगा। अगर वहाँ उसे खाने को कुछ नहीं मिला, तो वहीं अपनी जान दे देगा। अब जबकि उसके पास एक योजना है, कामिक रात में निकल पड़ता है।

गाँव सन्नाटे में डूबा हुआ है, तभी सन्नाटे को चीरती हुई कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आती है। कुत्तों को लग रहा था कि प्रस्थान करने का समय आ गया है। एक-एक कर इग्लू से आकृतियाँ बाहर निकल रही थीं। सभी जाने की तैयारी कर रहे थे। क्षितिज पर उषाकाल की पहली आभा चमकी। देखकर लगता था कि मौसम साफ रहेगा और धूप निकलेगी। क्षितिज पर बादल नहीं होने से यह मौसम यात्रा के अनुकूल था। जब अभियान गाँव से निकल रहा था, उस समय सूरज आधे आसमान पर पूरब की ओर आग बरसा रहा था। ऊरामिक अंगूतिक और पुतूकती के साथ थी। तूगाक इस्सा और मित्तिक के साथ दूसरे स्लेज में थी। अभियान के प्रमुख चाहते थे कि दोनों नौजवान उनके साथ चलें क्योंकि वे जिस इलाके से होकर जाने वाले थे, उस इलाके को दोनों अच्छी तरह जानते थे, तो वे उनका मार्गदर्शन कर सकते थे। गाँव में बाकी लोगों की रक्षा के लिए उन दोनों की जगह किकिताजोआक के दो आदमियों ने ले ली।

अभियान ने सबसे पहले एविक द्वीप का रास्ता लिया - शुरुआत तो वहीं से करनी थी। स्लेज पर बैठी ऊरामिक के दिल में गहरी उदासी छायी हुई थी। कोई बात नहीं कर रहा था। केवल बर्फ पर पड़ रहे पंजे और स्लेज के चरमराने की आवाज़ शांति भंग कर रही थी। एविक द्वीप के बाद वे कहाँ जाएँगे? किसी को मालूम नहीं। उन्हें कुत्तों और स्लेज के निशान मिलने की उम्मीद थी। इस तरह से वे निशान का पीछा करते हुए शिकारियों तक पहुँच जाएँगे। मौसम खुशनुमा था और गर्मी थी। सूरज चमक रहा था। कुछ किलोमीटर के घेरे तक देखा जा सकता था! वे पूरे दिन चलते रहे। आराम करने और खाने-पीने के लिए वे नहीं के बराबर रुके थे। उस दिन उन्हें शिकारियों के कोई संकेत मिलने की उम्मीद नहीं थी। पर शायद कल... क्या किस्मत उन पर मेहरबान होगी?

वे पूरे दिन और रात में भी अच्छे-खासे समय तक बढ़ते रहे। जब इतना अँधेरा हो गया कि उन्हें अपने सामने दीखना बंद हो गया, तो उन्होंने वीराने में पड़ाव डाला। दिन समाप्त हो गया था। कल फिर सुबह होगी। रात बिताने के लिए उन्होंने छः इग्लू बनाए। फिर, उन्होंने अपने कुत्तों को खाना डाला। उसके बाद वे अपने-अपने इग्लू में व्यवस्थित हो गये और उन्होंने कैरिबू और तीतर के हिमाच्छादित माँस एवं मछली खाए। ऊरामिक और तूगाक, अंगूतिक और पुतूकती के इग्लू में थे। वे चुपचाप खाना खा रहे थे, तभी ऊरामिक ने चुप्पी तोड़ी।

- उन्हें खोजने में हमें कितना समय लगाना पड़ेगा?

- नहीं मालूम... अंगूतिक ने उत्तर दिया। हो सकता है कि कई सूर्योदय का समय लग जाय पर यह भी हो सकता है कि हम उन्हें कल ही खोज निकालें। जितना भी समय लगे... हम उन्हें खोज निकालेंगे!

- अगर तुम ज्यादा समय तक बाहर रहते हो तो तुम्हारा परिवार और गाँव के लोग तुम्हें याद नहीं करेंगे क्या? उन्हें भूख नहीं सताएगी क्या?

- किकिताजोआक एक बड़ा गाँव है और वहाँ लोगों के साथ की कमी नहीं है। न ही माँस की कमी है! उन्हें भूख नहीं सताएगी... जहाँ तक मेरे परिवार का सवाल है, किकिताजोआक में कोई भी मेरा इंतजार नहीं कर रहा। पुतूकती तो मेरे साथ ही है। मेरे दूसरे बच्चों की शादी हो गयी है। वे अपने घर-गृहस्थी में व्यस्त हैं। पर एक बात बताओ... तुम लोग अपने गाँव में क्यों टिके हुए हो? तुमलोग किकिताजोआक में आकर बस सकते हो। हमारे इलाके में जानवर काफी तायदाद में हैं, कई लोगों के भोजन के लिए पर्याप्त हैं।

- सबको इस चैनल को पार करते हुए डर लगता है, क्योंकि वहाँ कभी भी पानी पूरी तरह से नहीं जमता, ऊरामिक ने उत्तर दिया। कई औरतों और बच्चों की जान जा सकती है।

- मैं समझ रहा हूँ... अंगूतिक ने कहा। वैसे, अगर तुम लोग किकिताजोआक आकर रहना चाहते हो, तो शायद यह अच्छा अवसर है। पर,

कोई जल्दबाजी नहीं है! जब हम शिकारियों को खोज निकालेंगे तो पुनः इस बारे में उनसे बात करेंगे।

एक बार फिर से उनके बीच चुप्पी छा गयी। वे एक-एक कर अपने कैरिबू के छाले के ऊपर लेटकर नींद का इंतजार करने लगे।

जब कामिक की आँखें दुबारा खुलती हैं, उस समय उसके चारों ओर अँधेरा है। वह काफी देर तक सोया रहा और रात हो चुकी है। कैरिबू का छाला इतना छोटा है कि ठंड से बचाव शायद ही हो पाती है। वह धीरे-से उठकर अँगड़ाई लेता है। उसकी सारी माँसपेशियों में दर्द है। फिर यात्रा जारी रखना उसके लिए जरूरी है। बस एक रात की बात है और वह पहाड़ों पर होगा। वह भोजन के लिए वहीं शिकार करेगा।

एक अकेली आकृति धीमे कदमों से बढ़ती जा रही है। बिना जाने-समझे कि सामने क्या है, कामिक अँधेरे में चला जा रहा है। बर्फ सख्त होने के कारण उसे पैरों में दर्द हो रहा है और बूट का तलवा फटे होने से उसे पैरों में शीत दंश महसूस हो रहा है। अँधेरे में भी कामिक दूर से पहाड़ों को साफ देख सकता है। उसे आज ही आहार खोजना चाहिए, वरना वह भूखे होने के कारण बहुत कमजोर हो जाएगा। जीवित रहने के लिए उसे शक्ति की आवश्यकता है। वह बिना शिकार किये बिस्तर पर नहीं जाएगा। वह दिन में शिकार करेगा, तो रात में सोएगा। वह आखिरी बार रात में चल रहा है। वह इस बात से खुश है। वह एक बार मंजिल पर पहुँच गया, तो खाने के लिए शिकार करेगा- नहीं तो भूखे मर जाएगा।

उषाकाल की पहली आभा पूरे आकाश में चमक रही है। कामिक थककर चूर है। वह पूरी रात चलता रहा है, लेकिन इसका नतीजा अच्छा निकला - अब उसकी मंजिल बिल्कुल करीब है! इससे आगे वह रास्ते में अलतू तलाश करेगा। काफी देर बाद उसे एक अलतू मिलता है! कामिक धैर्यपूर्वक तब तक इंतजार करता है जब तक उसके पैर सख्त बर्फ के सम्पर्क

को बर्दाश्त कर सकते हैं। शरीर में गर्मी लाने के लिए उसे चलना पड़ता है, फिर वह अटलू छेंककर खड़ा हो जाता है। दिन तो लगभग ढल गया है, पर सील का कहीं अता-पता नहीं है! कामिक को काफी कमजोरी महसूस होती है। चलना तो बहुत ज्यादा हुआ, पर भोजन पर्याप्त नहीं हुआ। वह थका हुआ है। भूख से उसकी अँतड़ियाँ कुलबुला रही हैं। अब रात हो रही है। कामिक एक इग्लू बनाता है। जब तक आहार खोजकर अपने रास्ते पर नहीं चल पड़ता, यह उसका आसरा रहेगा। या फिर तब तक जब तक उसका काल न आ जाय। इग्लू तैयार होने के बाद कामिक उसमें बैठता है। वहाँ अँधेरा है और ठंड लग रही है। कामिक के पास अब कुछ गिनी-चुनी वस्तुएँ ही शेष हैं- हार्पून, हड्डी का बना हुआ चाकू, एक रस्सी और सील के छाले का थैला...

सील के छाले का थैला!

सील के छाले का थैला तो आहार हो सकता है! इतने समय से कामिक उसे पीठ पर ढोए फिर रहा है, पर वह भूल गया कि वह खाने के काम में भी आ सकता है! उसके थैले का छाला सूखा है, पर भोज्य है। कामिक को अपने पिता की याद आती है - “एक दिन उन्होंने मुझसे कहा था कि जस्त्रत पड़ने पर जानवर से बनी हुई किसी भी सामग्री को तुम भोजन के तौर पर इस्तेमाल कर सकते हो। मेरा थैला, मेरी रस्सी, मेरे कपड़े और कैरिबू का कंबल... मैं उन्हें खा सकता हूँ।” कामिक अपना चाकू लेता है। उस शाम, वह रस्सी को भोजन के तौर पर इस्तेमाल करेगा। उसका बचा-खुचा हिस्सा वह कल खाएगा। और जब रस्सी खत्म हो जाएगी, तब वह थैला खाएगा। इस तरह से किसी जानवर के मारे जाने तक वह अपने जीवित रहने की थोड़ी-बहुत उम्मीद जगाए रखेगा। कामिक बड़े चाव से अपनी रस्सी चबाता है। यह स्वादहीन है, पर उसका आहार है। उसके पेट में कूदते चूहों को शांति मिलती है।

अचानक कामिक के चेहरे पर चमक आ जाती है।

कैरिबू के छाले का बना उसका थैला और कंबल! वह अपने कंबल को काटकर जूतों के तलवे बना सकता है। वह अपने पैरों के चारों ओर रस्सी बाँध लेगा। कामिक मुस्कुराता है! उसके कपड़े भी कुछ समय तक खाने के

काम में आ सकते हैं। फिर से उम्मीद जगती है। कामिक लेटते ही नींद में डूब में जाता है।

आसमान में बादल नहीं हैं और सूरज चमक रहा है। कामिक अपने इग्लू से बाहर निकलकर अपने चारों ओर नज़र दौड़ाता है। हवा का बहाव कुछ खास नहीं है। सील का शिकार करने के लिए यह उपयुक्त दिन है! कामिक अपने इग्लू में लौटकर रस्सी काटता है और जी भरकर चबाता है। उसके बाद वह हाथ में हार्पून और चाकू लेकर बाहर निकलता है। वह खड़ी चट्टान की चोटी को देखता है। वह बहुत ऊँची है! ऐसा लगता है मानो आसमान छूने की कोशिश कर रही हो। पहाड़ के इस तरफ खड़ी ढाल है। उस पर चढ़ने के लिए कामिक को घूमकर जाना होगा। वह बाद में इस बारे में सोचेगा। फिलहाल वह समुद्र की जमी हुई बर्फ में सील का शिकार करेगा। अगर उसे यहाँ कुछ हाथ नहीं लगता, तो वह धरती पर अपनी किस्मत आजमाएगा। थोड़ी देर बाद उसे एक अलू दीखता है, जिसमें उसे कुछ सम्भावना दीखती है। कामिक इंतजार करता है। उसे धैर्य से काम लेना होगा। जिन्दगी में धैर्यवान होना जरूरी है। कामिक यह बात अच्छी तरह जानता है।

रात हो चुकी है। कामिक ने पूरी रात अलू के पास ही बितायी, पर कोई भी सील मछली साँस लेने सतह पर नहीं आयी। कामिक थका हुआ है। उसे भूख लगी हुई है। इस शाम फिर से उसे सील के चमड़े से बनी रस्सी खानी होगी। कल वह धरती पर शिकार करने जाएगा। कमजोर हालत में वह इग्लू की तरफ लौट पड़ता है।

जब कामिक अपने आसरे से बाहर निकलता है, उस समय सूरज की पहली किरणें आसमान में आग बरसा रही हैं। वह भूखा है और उसे ठंड भी लग रही है। पर कम से कम उसकी नींद पूरी हो गई है। वह पहाड़ की दाहिनी तरफ चल पड़ता है, जिस तरफ हल्की ढलान है। कामिक जानता है कि ऊपर चढ़ने के लिए उसे अत्यधिक बल लगाना पड़ेगा। पर, उसे कमजोरी महसूस हो रही है। लेकिन उसके पास कोई चारा नहीं है। चढ़ाई तो करनी होगी। धरती ही उसकी आखिरी उम्मीद है। पहाड़ के पथरीले रास्ते पर चलने से

कामिक के पैरों में छाले पड़ जाते हैं, पर कामिक चलता रहता है। वह नीचे देखता है ताकि मालूम कर सके कि उषाकाल के बाद उसने कितना रास्ता तय किया है। वह एक अच्छी-खासी ऊँचाई पर पहुँच गया है। यदि वह लड़खड़ाकर गिरा तो उसकी हड्डी-पसली एक हो जाएगी। नीचे पहुँचने से पहले ही उसका काम तमाम हो जाएगा।

जब तक कामिक किसी तरह चोटी पर पहुँचता है, सूरज आसमान पर चढ़ चुका है। वह पसीने से लथपथ हाँफ रहा है। वह बहुत देर तक लेटा रहता है। वह चेहरा पोंछता है। उसे काफी राहत महसूस होती है। वह धीरे-धीरे उठ रहा है, तभी अचानक... भेड़ियों की गुराहट! वे सभी पास ही हैं। सधे हाथ से हार्पून पकड़कर कामिक एक चट्टान के पीछे छिपने जा रहा है। वह अपनी आड़ से देखता है कि तीन भेड़िये चार कस्तूरी बैलों पर हमला कर रहे हैं! भेड़िये गुराते हुए अपने विशाल शिकार की तरफ़ लपक रहे हैं और कस्तूरी बैल एक गोला बनाए खड़े हैं ताकि अपने बच्चे को बचा सके। एक झटके से उन कस्तूरी बैलों में से एक गोले से निकलकर एक भेड़िये पर धावा बोलता है, पर भेड़िया चकमा दे जाता है। कामिक जानता है कि भेड़ियों के सामने कस्तूरी बैल लाचार होते हैं। भेड़िये जानवरों से नहीं डरते, वे डरते हैं तो सिर्फ़ मनुष्य से।

“वे डरते हैं तो सिर्फ़ मनुष्य से,” कामिक सोचता है। वह अपने पीछे छेटा-सा रास्ता देखता है, जिसे पार कर वह उस चट्टान तक पहुँच सकता है जिसकी आड़ में वह छिपा है। उसके दिमाग में एक योजना बन रही है। इस योजना में जोखिम तो है, पर वह कई खतरों का सामना कर चुका है। वह एकबारगी उछलकर भेड़ियों और कस्तूरी बैलों के सामने आ जाता है। वह हाथ हिलाकर चीखते हुए जानवरों पर झपटता है। भेड़ियों की नज़र उस पर पड़ती है - अरे आदमी! वे देखते ही देखते रफूचक़र हो जाते हैं। कस्तूरी बैल यों ही गोल घेरे में बिना हरकत किये खड़े रहते हैं। कामिक उनकी तरफ़ बढ़ते हुए गला फाड़कर चीखता है। वह जानता है कि देर-सबेर उनमें से एक उस पर धावा बोलेगा। वह यह बात जानता है और चाहता है कि ऐसा हो! अब कामिक कस्तूरी बैलों के इतना करीब है कि वह अपना हार्पून चला सकता है।

वह जानता है कि एक चोट से इन भीमकाय जानवरों में से एक भी नहीं मरेगा। फिर भी वह निशाना साधता है और पूरी शक्ति बटोरकर अपना हार्पून चलाता है। उसका हार्पून एक कस्तूरी बैल की पीठ में एक तरफ़ जाकर धँस जाता है। अब कामिक आश्वस्त है कि कस्तूरी बैल उस पर धावा बोलेगा। सचमुच जानवर उस पर धावा बोलता है! कामिक खाई की तरफ़ दौड़ता है।

यदि कस्तूरी बैल उस तक पहुँच गया तो उसकी खैर नहीं!

खड्ड के करीब पहुँचकर कामिक पीछे देखने के लिए मुड़ता है। कस्तूरी बैल अपने वजन से प्रक्षिप्त पूरी तेजी से दौड़ता है। जब कस्तूरी बैल उससे कुछ ही कदम दूर रुक जाता है, कामिक एक तरफ़ बर्फ़ में छलाँग लगाता है। जानवर की पीठ पर अभी भी हार्पून घुसा हुआ है। वह रुक नहीं पा रहा। खाई देखते ही वह गति धीमी करने की कोशिश करता है, पर अब बहुत देर हो चुकी है। वह अपने वेग से चला जा रहा है। वह चट्टान के अंतिम छोर से गिरकर अपनी अवश्यंभावी मृत्यु की ओर बढ़ता है। कामिक की योजना काम कर गयी! अपने शिकार को टुकड़े-टुकड़े करने के लिए... और खाने के लिए बस पहाड़ से उतरना है! ओफ़फ़, इतने पापड़ बेलने के बाद!

उसके लौटने का रास्ता आसान नहीं है। कदम-कदम पर कामिक को फिसलने का और गरदन तुड़वाने का खतरा है। पर यह जानकर कि नीचे बढ़िया भोजन उसका इंतजार कर रहा है, वह खतरा भूलकर छिटाई के साथ आगे बढ़ता है। पहाड़ के नीचे पहुँचकर वह फटाफट मरे हुए जानवर के माँस को काटकर खाता है! वह चटोर की तरह खून से सनी अंगुलियों को चाटते हुए ड्टकर खाता है। वाह, क्या दावत है! चूँकि अब उसके पास प्रचुर मात्रा में खाद्यान्न है, वह जी-भर कर खाता है। अगले कई सूर्योदयों तक उसे भूख की चिंता नहीं सताएगी। अब वह शायद घर पहुँच पाएगा!

गोधूलि बेला में, कामिक अपनी पीठ पर माँस का एक टुकड़ा लादे हुए अपने इग्लू लौटता है। वह अपने बेशकीमती आहार को व्यवस्थित करके लेट जाता है। उसका जी घबरा रहा है और वह इसका कारण जानता है। लम्बे समय तक भूखे रहने के बाद उसने ठूँस-ठूँसकर खाया है... काश, कल

उसकी तबीयत ठीक हो जाय!

- ये रहे निशान! अंगूतिक चिल्लाया।

- कुत्तों और स्लेज के द्वारा बर्फ में छोड़े गए निशान को देखने के लिए अभियान के सारे सदस्य उसके इर्द-गिर्द इकट्ठे हुए।

- अंगूतिक ने आगे कहा, अब हम उन्हें खोज लेंगे!

वे दिन भर निशान के पीछे चलते रहे। गोधूलि बेला में, उन्हें एक भयानक दृश्य देखने को मिला।

- वे लोग यहीं पर सोये थे, अंगूतिक ने बताया। यह देखो! भालू और खून के निशान! उनका रास्ता और जानवर का रास्ता, दोनों यहाँ मिलते हैं...

- अरे, यह देखो! दूर से किसी की आवाज आयी। यहाँ कुछ दूसरे निशान हैं! ये द्वीप के ऊपरी भाग तक जाते हैं।

- वे इतने ऊपर भला क्यों गए होंगे? मित्तिक ने पूछा।

- यह जानने का एक ही रास्ता है। उनके पदचिह्नों का पीछा करना चाहिए।

ऊपर पहुँचने पर उन्होंने एक कब्र देखा और समझ गए कि क्या हुआ था।

ऊरामिक कब्र की तरफ़ दौड़ी और गिर पड़ी। सिसकियों से उसका पूरा शरीर काँप रहा था। इस्सा ने उसे वहाँ से हटाने के लिए हल्के से पकड़कर उठाया।

- यहाँ कौन दफ़न है, यह जानने के लिए खुदाई करनी चाहिए, अंगूतिक ने कहा।

जब तक दूसरे लोग खुदाई कर रहे थे, इस्सा ऊरामिक को पकड़े हुए था। मानव अवशेषों पर उनकी नज़र पड़ी।

- यह तो सुलुक है, मित्तिक ने ऊरामिक से मुखातिब होकर कहा।
- ऊरामिक ने पकड़ से छूटने की कोशिश की पर इस्सा ने मजबूत हाथ से पकड़ा हुआ था।
- बेहतर है कि तुम वहाँ मत जाओ, इस्सा ने कहा। अगर तुम उसे इस हाल में देखोगी, तो यह स्मृति जिन्दगी-भर तुम्हारा पीछा करेगी।

लोगों ने शव को वापस दफ़न कर दिया और अपनी-अपनी स्लेज के पास आ गए। उस जगह उन्होंने रात बितायी। अगले दिन उन्होंने फिर से निशान का पीछा किया। सूर्यास्त के समय उन्हें एक और इग्लू मिला जिसमें शिकारी सोये थे।

- हम सही रास्ते पर हैं, अंगूतिक ने कहा। हम उन्हें खोज लेंगे। प्रश्न यह है कि कितना समय लगेगा।
- भालू के निशान! एक आवाज आयी।
- और यहाँ कुत्ते के निशान! इस्सा ने कहा। उनके आकार को देखकर यही कहा जा सकता है कि उन्होंने भालू को खदेड़ा है।
- मगर मुझे स्लेज के निशान नहीं दीख रहे, अंगूतिक ने कहा। ऐसा लगता है कि कुत्तों को बिना जोत में लगाये भालू के पीछे छोड़ दिया गया। इसका कोई मतलब नहीं!
- अरे आओ, देखो! पदचिह्न!
- अजीब बात है... अंगूतिक ने कहना शुरू किया। शिकारी कुत्तों और भालू के निशान विपरीत दिशा में जा रहे हैं।
- वे शिकारियों के पदचिह्नों पर कुछ समय तक चलते रहे।
- हो सकता है, मेरा अनुमान गलत हो... अंगूतिक ने कहा। पर

देखकर तो यही लगता है कि शिकारियों के कुत्ते गुम हो गये और पैदल अपने घर चले जा रहे हों।

- मुझे लगता है, तुम सही कह रहे हो, मित्रिक ने कहा। निशानों को देखकर यही लगता है कि जब उनके कुत्ते भालू के पीछे दौड़ गये तो यहाँ से वे पैदल ही चल पड़े।

- चूँकि वे पैदल चल रहे हैं, अंगूतिक ने कहा, यहाँ से ज्यादा दूर नहीं होंगे। हमलोग उन्हें जरूर जल्दी ही पकड़ लेंगे।

स्लेज के पास लौटकर उन्होंने एक योजना बनाई।

- इस मुकाम पर हम पक्के तौर पर कुछ भी नहीं कह सकते, अंगूतिक ने जोरदार आवाज में कहा, पर हमें लगता है कि कुत्ते के बिना ही शिकारियों ने वापसी का रास्ता ले लिया। अगर ऐसा है तो उनकी स्थिति नाजुक है और उन्हें भालू का उतना ही खौफ़ होगा जितना रास्ते की दूरी का। हमें जल्दी से जल्दी उन्हें खोज निकालना चाहिए। आप सभी जानते हैं कि कुत्तों के बिना आदमी भालू का कुछ खास नहीं बिगाड़ सकता। वक्त जाया न करें! जब तक हम शिकारियों को खोज नहीं निकालते, एक मिनट भी चैन से नहीं बैठेंगे।

उन्होंने बेहिचक रास्ता पकड़ा और सारी रात सफर करते रहे। कुछ लोग कुत्तों के आगे-आगे निशान का पीछा करते हुए पैदल चल रहे थे। कभी-कभी उन्हें निशान दीखना बंद हो जाता था तो उन्हें वापस आकर फिर से निशान का पीछा करना पड़ता था। अगले दिन एक और भयावह दृश्य रास्ते में उनका इंतजार कर रहा था। कुत्तों ने सूँघना शुरू किया। फिर वे भौंकते हुए उछले। चौकन्ने होकर अभियान के सारे सदस्य कुत्तों के पीछे हो लिये। कुत्ते एक झटके से रुक गए। उनके आस-पास की बर्फ खून से लाल हो रही थी। कुत्तों ने एक बार फिर सूँघा और वे बर्फ कुरेदने लगे। उनमें से एक कुत्ते ने खोदकर कुछ निकाला। सबसे पहले इस्सा ने देखा - एक मनुष्य की टाँग।

- नहीं! वह चिल्लाया।

- सारे लोग उसकी तरफ़ पलटे। एक टाँग! तूगाक बेहोश हो गयी।

- सारे लोग पीछे हटें! अंगूतिक ने जोर से कहा! खुदाई के लिए मुझे कुछ लोग चाहिए।

फिर वह इस्सा से मुखातिब हुआ।

- माफ़ करना, उसने कहा, मृत व्यक्ति का शिनाख्त करने के लिए मुझे तुमसे ही पूछना पड़ेगा।

आनन-फानन में तीन आदमियों ने बर्फ की खुदाई शुरू कर दी। यह जानकर सभी स्तब्ध थे कि वहाँ कई लाशें दफ़न थीं। कुछ क्षण बाद, इस्सा ने उनका शिनाख्त करना शुरू किया।

- एक की कमी है, उसने अंगूतिक से कहा।

- किसकी?

- नौजवान कामिक की। शायद वह अभी भी जिन्दा है, या फिर उसकी मृत्यु कहीं और हुई हो।

वहीं पर उन्होंने भालू की खाल देखी।

- अब सब कुछ साफ है। अंगूतिक ने कहा। उन्होंने भालू को यहीं मारा है, पर ये सभी शिकारी इस मुठभेड़ में अपनी जान गँवा बैठे। उनमें से केवल एक अभी भी जीवित है।

- हो भी सकता है, मिक्तिक ने बुझे स्वर में कहा। नहीं भी हो सकता है।

- सही कह रहे हो, अंगूतिक ने हामी भरी। उसके बाद कामिक ने जान गँवा दी होगी। चूँकि वह मृत लोगों में नहीं है, उसी ने शिकारियों को दफ़न किया। और भालू मारा गया तो इसका मतलब यह हुआ कि कामिक इस मुठभेड़ से बच निकला। अगर वह अभी भी जिन्दा है, तो हमें उसे खोज निकालना होगा।

- तो शुरुआत कहाँ से हो? मिक्तिक ने पूछा।

- इस मुकाम पर आकर कामिक के पास कोई चारा नहीं होगा, सिवाय इसके कि वह सबसे छोटा रास्ता पकड़कर जल्दी से जल्दी घर लौटने की कोशिश करे। हमें उसके पदचिह्न उस दिशा में खोजने होंगे जो उसके गाँव की तरफ़ है।

- तो पता करो! ऊरामिक ने विनती की। उसके चेहरे पर अश्रु की जलधारा प्रवाहित हो रही थी। मेरी जिन्दगी में अब वही बचा है। ऐसा न हो कि वह भी मर जाय!

- हम जी-जान लगा देंगे, अंगूतिक ने जवाब दिया। मेरी बात मानो, ध्यान रखो कि तुम अकेली नहीं हो-यहाँ सभी तुम्हारे भाई-बहन हैं। हम सब एक ही परिवार से हैं।

अंगूतिक अभियान के दूसरे लोगों से मुखातिब हुआ।

-सबसे पहले हमें कामिक के पदचिह्न खोजने हैं, उसने बताया। यह काम आसान नहीं है, क्योंकि बर्फ जहाँ-तहाँ खुरदरी है। हम इस उम्मीद के साथ अलग-अलग दिशा में जाएँगे कि कोई एक उसके पदचिह्न ढूँढ़ लेगा। हमें खास तौर से चिकनी बर्फ पर निगरानी रखनी होगी। तूफान के बाद भी बर्फ पर पदचिह्न दीखते हैं।

उन्होंने एक दरार में शिकारियों के शव लिटा दिये और वे कामिक की तलाश में दो-दो गुट में चल पड़े। जैसे ही एक दल को कोई सुराग मिलता है, उस युगल में से एक, दूसरे लोगों को जाकर बताएगा। कहीं वह निशान खो न जाये, इसलिए दूसरा उसी जगह पर बना रहेगा। दिन ढल गया, तो तलाश रोकनी पड़ी। दल के सारे सदस्यों ने वहीं रात बितायी, जहाँ वे थे। उषाकाल होते ही उन्होंने अपनी तलाश शुरू की। पर बेकार! दोपहर समाप्त होते-होते कहीं जाकर नेकल्कि और अशूनाक को मानव-उपस्थिति के कुछ संकेत मिले।

- वह इस रास्ते से होकर गुजरा है! नेकल्कि ने कहा। जाकर लोगों को बताओ कि हमें उसके पदचिह्न मिल गए हैं।

- अशूनाक चल पड़ा।

सूरज डूबते-डूबते वह अभियान के सारे सदस्यों को लेकर आ गया था। वे लोग बिना रुके उस दिशा में चल पड़े, जिधर कामिक गया था।

कुछ दूर चल लेने के बाद अंगूतिक ने कहा, हमलोग यहीं पड़ाव डालेंगे।

- हम कुछ और आगे तक नहीं जा सकते क्या? ऊरामिक ने सवाल किया।

यह असंभव है, अंगूतिक ने जवाब दिया। मुझे मालूम है कि तुम अपने बेटे से मिलने के लिए बेकरार हो, पर हम एक बार फिर उसके पदचिह्नों को नहीं खो सकते। और हम अँधेरे में चलें तो यही होगा। मुझे वाकई खेद है, पर हमें उषाकाल तक इंतजार करना होगा।

- तुम्हें लगता है, हम उसे खोज लेंगे?

हाँ! मगर मुझे नहीं मालूम, वह जीवित होगा या मृत।

ऊरामिक सुबकते हुए जमीन पर गिर पड़ी।

- चिंता मत करो, अंगूतिक ने कहा। इन पदचिह्नों से यह साबित होता है कि उसमें यहाँ तक जिंदा रहने की काबलियत थी। वह ताकतवर और साहसी है। हम उसे जीवित पाने की उम्मीद कर सकते हैं।

ऊरामिक से विमुख होकर अंगूतिक खुद से बुदबुदाया- “हे परमात्मा, मुझे लड़खड़ाने मत दो। ऐसा न हो कि मेरी हार हो जाय! इस लड़के की दिशा में मेरा मार्गदर्शन करो!”

कामिक बिना रुके दिन-भर चलता रहा है। वह बहुत आगे तो नहीं बढ़ पाया मगर कम से कम दिन बिना किसी खतरे के गुजर गया। अब, कामिक थका हुआ है और वह अपने छोटे-से इग्लू में लेट जाता है। दिन कष्टमय था, शायद पूरे सफर का सबसे कष्टमय दिन। माँस का वजन उसके कंधों पर भारी पड़ रहा है। कामिक को गर्मी लगी क्योंकि सफर के दौरान उसे तरोताजा करने वाली कोई बयार नहीं चली। उसे लगता है कि दिन बहुत

जल्दी ढल गया। बहुत थके होने के बावजूद वह और चलता। वह जितना ही आगे बढ़ेगा, घर से उतना ही करीब होगा। उसे बहुत देर तक नींद नहीं आती। कामिक अपना कान लगातार लगाये रहता है। “पर क्या सुनने के लिए?”, वह सोचता है। शायद वह कुत्ते या लोगों के शोर की ताक में है, या शायद ज़मीन पर भालू के पंजे की धमक। उसे अचानक डर महसूस होता है। कामिक काफी देर तक यों ही जगा रहता है। जब उसे नींद आती है तो सपने में उसे वही दिन दीखता है, जब उसके दोस्त की मौत हुई थी। वह अपने को युवा सूना के साथ भालू का मुकाबला करते हुए देखता है। वह चीखते हुए एक झटके से उठ जाता है। उसका शरीर पसीने से लथपथ है। कामिक को अहसास होता है कि वह एक सपना मात्र था। वह कान लगाकर आवाज सुनने की ताक में है। उसके चारों ओर सन्नाट ही सन्नाट है। कामिक लेटा रहता है। उसकी आँखें भय से फटी हुई हैं। उसकी नींद उड़ जाती है।

दिन निकल आया था। किकिताजोआक के निवासी पहले ही तैयार थे। अंगूतिक ने आदमियों को जोत के आगे दौड़ने के लिए कहा ताकि कामिक के पदचिह्न का पीछा कर सकें।

- मुझे अनुमान है कि वह पहाड़ों की तरफ जा रहा था, अंगूतिक ने कहा, मुझे योजना में कुछ हेर-फेर करना होगा।

उसने अपनी योजना समझाने के लिए अभियान को रोका।

- हम सही दिशा में जा रहे हैं, सबके इकट्ठे होने पर अंगूतिक ने कहा। पर, हम बहुत ही धीरे जा रहे हैं। आपमें से आधे उस रास्ते पर चलेंगे जिस पर हम अभी तक चलते रहे हैं। बाकी के आधे लोग मेरे साथ पहाड़ों पर जाएँगे। इन पदचिह्नों पर गौर करें तो लगता है कि कामिक पहाड़ों की तरफ गया है। अगर हमें पहाड़ों की दिशा में संकेत मिले तो आपको सूचित करने के लिए हम किसी को भेजेंगे।

अंगूतिक और अभियान के आधे लोग चल पड़े। उन्हें पहाड़ों पर पहुँचने

में बहुत समय लगा। मगर वहाँ उन्हें एक ऐसा संकेत मिला जिससे उम्मीद जगी। उनके जानवरों की घ्राण शक्ति से उन्हें रास्ते का अंदाजा लगा। कुत्ते चिल्लाने लगे, अपने दायें-बायें सूँघने लगे। फिर वे दौड़ पड़े। वे एक झटके से रुककर हड्डियों को लेकर झगड़ने लगे। सभी उनकी तरफ़ दौड़े और अचानक से रुक गये- कस्तूरी बैल की खाल और हड्डियाँ!

- यह कामिक की बहादुरी का एक और सबूत है, अंगूतिक ने कहा। इधर से गुजरते हुए उसने खाने के लिए एक कस्तूरी बैल को मारा है। जानवर की हड्डियाँ जिस तरह से चूर-चूर हो गयी हैं, उससे लगता है कि वह खड़ी चट्टान की कगार से गिरा है। इसे निस्संदेह कामिक ने ही नीचे गिराया है। अब वह भूखा नहीं है! और इसकी अच्छी-खासी संभावना है कि वह अभी भी जिन्दा है।

दिन ढलने ही वाला है, ऊरामिक ने कहा।

- अब मैं तुम्हें निराश नहीं करना चाहता, अंगूतिक ने कहा। इस बार हम रात में चलेंगे। चूँकि कामिक के पदचिह्न हाल के ही हैं, हमारे कुत्ते उन्हें सूँघते हुए पीछा कर सकते हैं। और हम पदचिह्नों को रात में खो भी दें तो हमें वापस आने का रास्ता पता होगा।

उन्होंने पूरी उम्मीद से कामिक के पदचिह्नों का पीछा किया। कुत्ते उन्हें रास्ता दिखाते रहे वे रात-भर बढ़ते रहे। कुत्तों को ज़मीन सूँघता हुआ देखकर अंगूतिक को रास्ते का पता चल रहा था। आखिरकार उन्हें एक छोटा-सा इग्लू मिला।

- यहाँ कामिक सोया है! अंगूतिक ने बताया। चलते रहा जाय! हम सही रास्ते पर हैं।

जब दिन निकला, तब भी वे कामिक के रास्ते पर चल रहे थे।

- इन पदचिह्नों से पता चलता है कि कामिक यहाँ से एक दिन पहले गुजरा है। मुझे विश्वास है कि हम उसे जिन्दा ढूँढ़ लेंगे!

कामिक बोझ से मजबूरन साँस लेने के लिए रुकता है। वह अपना थैला रखकर बर्फ पर बैठ जाता है। पर वह जैसे ही लेटने जाता है, गुर्राहट सुनकर चौंक जाता है - अरे भालू! कामिक एक झटके से उठकर अपना हार्पून उठाता है और बर्फ के एक टीले की चोटी तक दौड़ पड़ता है। यदि जरूरत हुई तो वह अंतिम साँस तक संघर्ष करेगा! उसे यह देखकर आश्चर्य होता है कि भालू उसका पीछा नहीं कर रहा, बल्कि उसके छोड़े हुए माँस को गटक रहा है। कामिक उसे देखकर सहम जाता है। वह जानता है कि जानवर उसके राशन को चट करते ही उसके पीछे पड़ जाएगा। भालू जल्दी-जल्दी माँस गटक कर कामिक की ओर मुड़ा। वही हुआ, जिसका डर था! जानवर कामिक की ओर धीरे-धीरे बढ़ता है, फिर रुक जाता है। वह हमला करने के लिए सही मौके का इंतजार कर रहा है। उसकी भूख शांत नहीं हुई है। कामिक भी हाथ में हार्पून लिये इंतजार कर रहा है। भालू फिर से कामिक की तरफ बढ़ता है। कामिक ने भालू और अपने बीच में हार्पून रखा हुआ है। वह चोटी पर ऐसी जगह खड़ा है कि उस पर चोट करने के लिए जानवर को अपनी पिछली टांगों पर खड़ा होना पड़ेगा।

अचानक भालू तेज गुर्राता है। वह कामिक की तरफ लपकता है और तेज पंजा मारता है। पर कामिक खड़ा रहता है और उसके हार्पून की पैनी नोक पर लगकर भालू का पंजा घायल हो जाता है। दर्द से चीत्कार करते हुए वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ता है। कामिक भालू के टपकते खून को देखता है, पर जानता है कि चीरा लगने से कोई भालू कभी नहीं मरा। जानवर उस पर हमला करने के लिए अपनी पिछली टांगों पर खड़ा होता है। कामिक अपनी दोनों टांगों पर सीधा खड़ा है। भालू उछलता है और हार्पून से उसके कंधे पर चीरा लग जाता है। उसका खून उसकी खाल पर टपकने लगता है।

कामिक पसीना-पसीना हो रहा है। वह थकावट बर्दाश्त नहीं कर पा रहा। उसकी सारी माँसपेशियों में दर्द है और सिर दर्द से फटा जा रहा है। वह जानता है कि भालू उसे थकाकर गिराना चाहता है। अगर उसने जल्दी भालू को नहीं मारा तो उसमें इतनी ताकत नहीं रहेगी कि वह अपनी रक्षा कर सके। और भालू उसे निगल जाएगा। पर एक हार्पून के बल पर भालू पर कैसे काबू

पाया जाय? जानवर अंधाधुंध छलाँग मारकर कामिक की तरफ लपकता है और हार्पून से उसके मस्तक पर एक चीरा बन जाता है। चारों तरफ खून है। कामिक की उम्मीद फिर से जगती है। अगर किस्मत ने उसका साथ दिया तो थककर पसरने से पहले उसके पास शायद भालू को मारने का समय होगा। एक बार फिर भालू उस पर झपट्टा मारता है। कामिक तनकर खड़ा है और हाथ में कसकर हार्पून पकड़े हुए है। भालू उछलता है। कामिक अपना अस्त्र थामे हुए ही भालू के गले में गहराई तक घुसा देता है। वह अपना बेशकीमती हार्पून गँवाना नहीं चाहता! पर भालू मुड़कर कामिक पर एक चोट करता है जिससे वह ज़मीन पर गिर पड़ता है। कामिक जिस चोटी पर जमा हुआ था, वहाँ से धड़ाम से पीठ के बल गिर पड़ता है। वह जैसे ही दुबारा उठता है तो देखता है कि भालू उसकी तरफ मुड़ रहा है। कामिक के पास बचाव नहीं है!

कामिक का हार्पून भालू के गले में फँसा पड़ा है और उसने अपना चाकू उस माँस के बगल में रखा था जो भालू चट कर गया था। वह कूदकर चाकू हथियाता है और वापस आता है। भालू धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ रहा है। कामिक अपना पिट्टी-सा चाकू हाथ में लिए जमीन पर है। वह जानता है कि उसका अंतिम समय आ गया है। भालू बिना किसी जल्दबाजी के और समीप आ रहा है। कामिक के हाथ तने हुए हैं और वह पीछे हटता है। वह आखिरी साँस तक लड़ेगा।

एकाएक बहुत शोर-शराबा सुनाई देता है। साथ ही साथ कामिक और भालू शोर की दिशा में अपना-अपना सिर घुमाते हैं। कुत्ते और आदमी दौड़ते हुए चले आ रहे हैं! आदमी हार्पून से लैस हैं और कुत्ते भौंक रहे हैं। आखिरकार उन्होंने कामिक को खोज ही लिया!

भालू समझ गया कि अब उसकी खैर नहीं। उसने कुत्तों और हार्पून से बचने के लिए भागने के कोशिश की। बहुत देर हो चुकी है! सैकड़ों कुत्तों ने उसे धर दबोचा। कुत्ते गुर्रा-गुर्रा कर काट रहे थे। उनके पीछे आदमी थे जो जान लेना जानते थे। उनके हार्पून हवा में चले और भालू को जा लगे। जानवर ढेर हो गया।

कामिक ज़मीन पर पसर गया। उसकी साँस अटकी हुई थी। ऊरामिक खुशी के मारे रोते हुए उसकी तरफ दौड़ रही थी। कामिक उठा और उसने अपनी माँ को लगे लगा लिया। काफी देर तक वे ऐसे ही एक-दूसरे से लिपटे रहे। गाल पर खुशी की अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी। आखिरकार कामिक ने आलिंगन को छोड़कर अपने चारों तरफ नजर दौड़ाई। उसने बहुत से अजनबी देखे और उनके साथ इस्सा, मित्रिक और तूगाक भी थे।

- ये किकिताजोआक के लोग हैं, ऊरामिक ने बताया। इस्सा और मित्रिक उनके पास मदद माँगने गए थे।

- शुक्रिया, कामिक ने कहा। आपलोगों ने मेरी जान बचायी।

अंगूतिक एक कदम आगे बढ़ा।

- मेरा नाम अंगूतिक है और मैं किकिताजोआक का मुखिया हूँ। यह रही मेरी बेटी पुतूकती। हम सब तुम्हें जिन्दा देखकर बेहद खुश हैं। तुम एक बहादुर व्यक्ति हो!

- किस्मत ने मेरा बहुत साथ दिया। काश, बाकी लोगों की भी किस्मत अच्छी होती। आपने देखा, उनके साथ क्या हुआ?

- हाँ, अंगूतिक ने कहा। मुझे खेद है कि उनकी मदद के लिए आने में हमें काफी देर हो गयी।

-तुम्हें भूख लगी होगी, ऊरामिक ने कहा। और तुम थके भी होगे। आओ, खाना खाओ!

- हम यहीं पर रात बिताएँगे, अंगूतिक ने कहा। हमारे कुत्तों को आराम की जरूरत है और हमें यहाँ दूसरे लोगों के आने का इंतजार करना होगा। अशूनाक, तुम जाकर उनलोगों को बताना चाहोगे कि हम यहाँ हैं?

अशूनाक फौरन निकल पड़ा।

उस शाम, कामिक ने सारी घटनाओं के बारे में बताया। अपने आँसू

रोककर उसने बताया कि कैसे उसके पिता की जान गयी थी, कैसे भालू ने उन पर हमला बोला था। एक वही जिन्दा रह गया था। उसने अपने दोस्तों के शरीर क्षत-विक्षत देखे थे। उसके बाद बर्फानी तूफान और भूख से लड़ने के लिए वह अकेला ही रह गया था। कामिक ने अपनी माँ, पुतूकती और तूगाक को देखा। तीनों औरतों की आँखों में आँसू थे।

- मुझे यह सुनकर दुःख हो रहा है, कामिक की कहानी खत्म होते ही अंगूतिक ने कहा। पर, अब तुम्हें भविष्य के बारे में सोचना चाहिए।

- अंगूतिक ने किकिताजोआक जाकर बसने का प्रस्ताव हमारे सामने रखा है, ऊरामिक ने बताया। तुम्हारा क्या खयाल है, कामिक?

- मुझे नहीं मालूम... माँ, इसका फैसला तुम्हारे पर और गाँव के लोगों पर है!

कामिक बिना कुछ और कहे बाहर निकल गया। ऊरामिक उठकर उसके पीछे-पीछे चली। अंगूतिक के मजबूत हाथों ने उसे रोक दिया।

- उसे अकेला छोड़ दो, अंगूतिक ने कहा।

- उसे हुआ क्या है?

- हमसे पूरा वाकया बयान करके इसने अपनी मुश्किल घड़ियों को फिर से जिया है।

- मैं जाकर उससे बात करती हूँ, पुतूकती ने कहा।

जब वह बाहर निकली तो उसने देखा कि कामिक आँखों में आँसू लिये आकाश को निहार रहा है। पुतूकती के कदमों की आहट सुन कामिक उसकी तरफ मुड़ा।

- माफ करना, उसने कहा। पता नहीं, मुझे क्या हुआ है? मुझे जिन्दा बच जाने की खुशी मनानी चाहिए!

मैं समझती हूँ, पुतूकती ने जवाब दिया। मैं सचमुच दुःखी हूँ कि तुम्हारे पिता और दोस्त अब नहीं रहे। पर, जिन्दगी तो चलती रहती है।

- मेरे पिता के बिना यह जिन्दगी पहले की तरह नहीं होगी।

- सही कर रहे हो। पर तुम्हारी माँ अभी जीवित है और तुम्हें उसका खयाल रखना है। और हाँ... मुझे उम्मीद है कि तुम लोग आकर किकिताजोआक बसोगे।

कामिक ने पुतूकती की आँखों में झाँका।

- मैं पहली बार किसी सुंदर लड़की से मिल रहा हूँ, उसने कहा।

- शुक्रिया, पुतूकती ने कहा। मैं भी तुम्हें पसंद करती हूँ, कामिक!

- सचमुच?

- हाँ।

कामिक पुतूकती की तरफ बढ़ा तो पुतूकती ने अपना हाथ उसकी तरफ बढ़ाया। उसने बहुत देर पुतूकती का हाथ पकड़े रखा।

- तुम मेरी पत्नी बनना चाहती हो, पुतूकती?

- हाँ! मेरी हार्दिक इच्छा है! पर तुम्हें मेरे पिता से पूछना चाहिए।

- मैं अभी जाता हूँ।

वे इग्लू लौट गये। कामिक अंगूतिक के पास गया।

- मैं अपने जीवन-साथी के रूप में तुम्हारी बेटी माँगता हूँ, उसने जोरदार आवाज में कहा।

सब लोग उसे हतप्रभ देखते रह गये।

- तुमने अचानक से यह अनुरोध किया है, अंगूतिक ने कहा। मुझे कुछ मिनट सोचने दो।

तभी नेत्सियाक उठा।

- जिस औरत की बात हो रही है, वह एक दिन मेरी होने वाली है, उसने कहा।

कामिक ने उसे देखा।

- हमें यह फैसला अंगूतिक और पुतूकती पर छोड़ना होगा, उसने कहा।

- ऐसी स्थिति में, अंत में अंगूतिक ने कहा, मैं फैसला नहीं कर सकता। यह फैसला मैं अपनी बेटी के हाथों में छोड़ता हूँ।

नवयुवती ने एक नजर कामिक को देखा, फिर नेत्सियाक को देखा।

- मैं कामिक को चुनती हूँ, उसने कहा।

नेत्सियाक उसके पास गया।

- तुम्हें उसे जाने हुए अभी एक दिन भी नहीं हुआ। वह चिल्लाया।

- पता है, पुतूकती ने जवाब दिया। तुम्हें तो हमेशा से जानती हूँ, पर मैंने तुम्हें कभी नहीं चाहा। माफ करना, नेत्सियाक! मेरा फैसला अटल है!

नेत्सियाक ने कामिक के कंधे को पकड़ा और उसे तेजी से धकेल दिया।

- यह मत समझना कि मैंने हार मान ली है। वह चिल्लाया। मैं तुम्हें चुनौती देता हूँ- हम अंतिम साँस तक मुठभेड़ करेंगे और पुतूकती उसी की होगी जो विजेता होगा।

- मुझे स्वीकार है, कामिक ने कहा।

- खबरदार! अंगूतिक ने कहा। यहाँ मैं प्रमुख हूँ! मुठभेड़ का सवाल ही नहीं उठता!

- मुझे तरस आता है, तुम्हारा जन्म एक आदमी के रूप में हुआ, जानवर के रूप में नहीं। कामिक ने करारा जवाब दिया।

- बहुत हो गया! अंगूतिक गरजा। मेरी बेटी ने साफ-साफ कह दिया

है कि उसने कामिक को चुना है और उसका निर्णय अंतिम है। मैं किसी को प्रश्रय नहीं देता, पर मैं इस बात को अहमियत देता हूँ कि मेरी बेटी उससे शादी करे, जिससे वह प्रेम करती है। अब इस सवाल का समाधान हो चुका है, तो कामिक और गाँव के दूसरे लोगों को भी किकिताजोआक आकर बस जाना चाहिए।

- वैसे भी हमारे पास कोई चारा नहीं है, ऊरामिक ने कहा। शिकारियों के यहाँ से जाने के बाद हमारे गाँव पर चारों तरफ से खतरा मंडरा रहा है।

- हाँ, कामिक ने कहा। किकिताजोआक जाना ही हमारे लिए बेहतर होगा।

- हम चैनल कैसे पार करेंगे? इस्सा ने पूछा। वहाँ बहुत खतरा है।

- सही है, अंगूतिक ने हामी भरी, पर हमने इससे भी बड़े खतरे झेले हैं। हमने एक बार चैनल पार किया है, दुबारा भी कर सकते हैं। यहाँ से आगे हमें एक लम्बा रास्ता तय करना है। चलिए, सोने चलें। हमें नींद की आवश्यकता है।

अगले दिन जब उन्होंने रास्ता लिया, हवा तेज चल रही थी और उनके चेहरे ठंड की चपेट में थे। कामिक को एक स्लेज और कुछ कुत्ते साँप दिये गए थे। ऊरामिक और पुतूकती उसके साथ ही सफर कर रही थीं। एक बार कामिक की नजर नेत्सियाक से टकरायी। कामिक ने नेत्सियाक की आँखों में घृणा देखी। उसे होशियार रहना चाहिए क्योंकि नेत्सियाक उसे बेशक नुकसान पहुँचाने के ताक में होगा। तीन सूर्योदय बाद, वे कामिक के गाँव पहुँचे। शिकारियों की रोती हुई विधवाओं और उनसे चिपके काँपते हुए बच्चों को देखकर कामिक के गाल पर गर्म-गर्म आँसू ढुलक गए।

अगले दिन सभी किकिताजोआक के लिए चल पड़े। कामिक का दिल बैठा जा रहा था। वह लौटकर एक बार फिर अपने गाँव को देखने की इच्छा रोक नहीं पाया। अब यह उजाड़ है। यहीं उसका जन्म हुआ था। यहाँ वह खुश था। अब उसे एक नए इलाके में एक नई जिन्दगी शुरू करनी होगी। हालाँकि पुतूकती जैसी औरत के रहते हुए वह नए माहौल में ढल जाएगा और उसे सुख

की प्राप्ति होगी। एक आखिरी बाधा अभी भी उनके सामने थी- इस चैनल को पार करना जिसका पानी कभी भी पूरी तरह नहीं जमता।

दो सूर्योदय बाद वे लोग चैनल के किनारे पहुँच गए। इससे पहले कि वे यह सफर शुरू करें, अंगूतिक ने अभियान के सारे लोगों को इकट्ठा किया।

- हमें सावधानी से आगे बढ़ना होगा, उसने कहा। जिनकी स्लेज में बच्चे हैं, वे बीच में रहेंगे। अगर कुछ गड़बड़ होती है तो वे आगे या पीछे वाली स्लेज से सहायता ले सकते हैं। मैं बाकी अभियान का नेतृत्व करूँगा। कामिक मेरे पीछे होगा। ऊरामिक मेरी स्लेज में चलेगी और पुतूकती कामिक के साथ रहेगी।

- अगर कोई दुर्घटना हुई तो हम क्या करेंगे? मिक्तिक ने पूछा।

- इसके पहले कि पानी बहा ले जाय, सक्रिय होना पड़ेगा। अगर आपकी जोत पानी में गिर जाती है, तो आप सबसे नजदीक की स्लेज में चढ़ जाइए। पर जल्दी करना होगा, वरना आपकी जोत आपको पानी में खींच लेगी।

- कोई कम खतरनाक जगह नहीं है, जहाँ से हम चैनल पार कर सकें? ऊरामिक ने पूछा।

- दुर्भाग्यवश नहीं है, अंगूतिक ने कहा। यही रास्ता है।

- और हम औरतें? तूगाक ने पूछा। इस सफर को आसान बनाने के लिए औरतें क्या कर सकती हैं?

- अगर संभव हो तो स्लेज के साथ दौड़िए ताकि स्लेज हल्की रहे। पर पैर ध्यान से रखिए। जरूर पता कीजिए कि बर्फ इतनी मजबूत है कि आपका वजन सह सके। दूसरी बात - आदमी हमेशा अपने हाथ में हार्पून रखें ताकि वे सामने की बर्फ की मजबूती सुनिश्चित कर सकें। जो उनके पीछे है, वे उनके कदमों का पीछा करेंगे।

चैनल का सामना करने का समय आ गया था। अंगूतिक जत्थे के आगे-आगे चल रहा था। वे एक-एक कर अपना पैर बर्फ पर रख रहे थे।

आदमी बर्फ पर पैर रखने से पहले तैरते हुए हिमखंडों की मोटाई का अनुमान कर रहे थे। कभी-कभी एक ही चोट में उनका हार्पून बर्फ को भेदकर निकल जाता था। ऐसी बर्फ उनके वजन को नहीं झेल सकती थी। फिर उन्हें कोई और हिमखंड देखना होता था। ठंड के बावजूद सभी को पसीना आ रहा था। अचानक आफ़त आई।

अंगूतिक ने देखा कि उसके कुत्ते पतली बर्फ को भेदकर गिर रहे हैं। इसके पहले कि वह कुछ कह पाए, बर्फ आँखों से ओझल हो गयी। उसने ऊरामिक को चिल्लाकर बताना चाहा कि स्लेज से बाहर निकल जाय। पर बहुत देर हो चुकी थी। ऊरामिक जोत के साथ बह गयी और जल्दी ही धार में पड़ गयी। अंगूतिक गर्दन भर पानी में था।

- इधर से नहीं! वह चिल्लाया। इधर से नहीं! दूसरी तरफ से निकलो!

पूरा दृश्य कामिक की आँखों के सामने था। उसने ऊरामिक को बहते हुए, फिर गायब होते हुए देखा और अंगूतिक की तरफ दौड़ा और पुतूकती उसके पीछे-पीछे। कामिक को अपने पैर के नीचे का हिमखंड टूटता हुआ महसूस हुआ। वह उस हिमखंड से बचने के लिए पीछे उछला। पर अपने पिता को डूबता हुआ देखकर पुतूकती रुकी नहीं। उसका पैर वह उस खतरनाक हिमखंड पर पड़ गया।

- सावधान! कामिक चिल्लाया। पानी तुम्हें बहा ले जाएगा।

बहुत देर हो चुकी थी। पुतूकती ठंडी जलधारा की चपेट में आ गयी थी। कामिक उसे पकड़ने के लिए पानी में कूदा। वह डूब चुकी थी। कामिक ने एक हिमखंड पकड़ लिया ताकि पानी उसे बहा न ले जाय। वह जोर-जोर से पुतूकती को आवाज दे रहा था। अंगूतिक गायब हो चुका था। कामिक उनके लिए कुछ नहीं कर सकता था। वह किसी तरह पानी से बाहर निकला और उसने अभियान के दूसरे सदस्यों को देखा। वे लोग बिल्कुल सुरक्षित थे और कई आदमी उसकी ओर दौड़ रहे थे।

- कामिक! इस्सा चिल्लाया। जल्दी करो! इसके पहले कि पानी तुम्हें बहा ले जाय, इधर आओ!

पर कामिक हिल नहीं रहा था। अब उसके लिए कुछ भी मायने नहीं रखता था। पहले उसने अपने पिता को खोया था। अभी-अभी उसने अपनी माँ और पुतूकती को खोया। अब जिन्दा रहने का कोई मतलब नहीं! कामिक जानता था कि वह एक मजबूत हिमखंड तक चलकर जा सकता है। बस उसे कुछ कदम की दूरी तय करनी थी। पर वह हिल नहीं रहा था।

पानी उसे समुद्र की ओर बहा ले गया और वह क्षितिज के पार चला गया। वह चाहता था कि उसके साथी उसे ऐसा कदम उठाते हुए न देखें जो उसकी नियति बन चुकी है। “दुनिया छोड़ने से पहले मेरे पिता ने कहा था कि केवल मृत व्यक्तियों को ही शाश्वत शांति प्राप्त होती है। उन्होंने मुझसे कहा था कि वह इस शांति को प्राप्त करने जा रहे हैं और वह मेरा इंतजार वहाँ करेंगे।” कामिक ने अपने हाथ के हार्पून को देखा। समय आ गया था। शांति प्राप्त करने, अपने परिजनों और प्रियजनों से मिलने का समय आ गया था। कामिक घुटने टेककर बर्फ पर बैठ गया और उसने अपने हार्पून की पैनी नोक को अपने गले में धँसा दिया। एक झटके में उसका पूरा शरीर ढेर हो गया। शिकारी के हार्पून ने अपना अंतिम घात किया।





सफ़ेद भालू - रोबेर फ़ेशेत



नुनाविक (केबेक) में फोटो खिंचवाते कस्तूरी बैलों का झुण्ड - रोबेर फ़ेशेत



नुनाविक (केबेक) की गर्मियों की शुरुआत में तीतर - रोबेर फ़ेशेत



जमी हुयी झील पर इनुइट समुदाय का आदमी स्लेज के कुत्तों को हाँकता हुआ
- रोबेर फ़्रेशेत

कालक्रम

4500 ईसा पूर्व से पन्द्रहवीं सदी -

- पूर्व डोरसेट और डोरसेट जाति के लोगों का उत्तर अमरीकी आर्कटिक पर अधिकार
- 10वीं सदी - अलास्का से आए हुए थ्यूल लोग उत्तरी अमरीका को पार करते हैं और उनमें से एक समूह पूर्व में बसता है, जो आगे चलकर कनाडा बन गया।
- 13वीं सदी - ग्रीनलैंड के दक्षिण में थ्यूल और वाइकिंग लोगों के बीच प्रथम सम्पर्क
- 16वीं सदी - यूरोप से आए हुए नाविक दल लेब्राडोर तट पर कॉड मछली पकड़ने आते हैं। इनुइट लोगों से उनका सम्पर्क संक्षिप्त और शत्रुतापूर्ण है।
- 1609 - हेनरी हडसन के द्वारा हडसन सागर और जेम्स खाड़ी की खोज
- 1670 - उत्तरी अमरीका में फर के व्यापार के लिए लंदन में हडसन खाड़ी कम्पनी की स्थापना
- 1713 - 11 अप्रैल को उन्नेख्त की संधि पर हस्ताक्षर से स्पेन में उत्तराधिकार के युद्ध का अंत होता है और हडसन खाड़ी कम्पनी को हाल में जीते गये क्षेत्रों पर प्राधिकार मिलता है।
- 1763 - पेरिस में फर व्यापार के लिए रेव्यूयों फ्रैर नामक फ्रेंच कम्पनी की स्थापना
- 1771 - लेब्राडोर में मोरावियन धर्म प्रचारक आकर बसते हैं।
- 1829 - हडसन खाड़ी कम्पनी कुडजुआरापिक के नुनाविक में पहला व्यापार केन्द्र खोलती है।
- 1876 - हडसन खाड़ी के तट पर एंग्लिकन धर्म प्रचारक आकर बसते हैं। लिटिल व्हेल नदी पर बसे श्रद्धेय एडमंड पेक बाइबिल सम्बन्धी दस्तावेजों का इनुकतितुत वर्णमाला में लिप्यंतरण करना शुरू करते हैं। इनुकतितुत वर्णमाला 40 साल पहले धर्म प्रचारक जेम्स इव्हान्स ने ओजिबवे और क्री लोगों के लिए तैयार किया था।
- 1912 - उन्गावा जिला को केबेक क्षेत्र में मिला गया।
- 1932 - कुज्जुआक के नुनाविक में धर्म प्रचारकों ने पहला विद्यालय स्थापित किया।
- 1941 - इनुकजुआक में मारकुसी का जन्म
- 1948 - मोंरियाल में *ला गिल्द कानादियेन दे गेटिये दार* में एस्किमो मूर्तिकला की पहली प्रदर्शनी हुई।
- 1949 - इनुकजुआक और कुज्जुआक में पहले दैनिक संघीय कार्यालय खुलते हैं।
- 1950 - संघीय सरकार इनुइट लोगों के लिए स्कूली शिक्षा अनिवार्य करती है।
- 1953 - अपने प्रभुत्व को वांछित क्षेत्र उच्च आर्कटिक पर दृढ़ करने के लिए संघीय सरकार नुनाविक के एक दर्जन इनुइट परिवारों को रिज़ोल्युट खाड़ी में

- विस्थापित करती है, जिसमें मारकुसी का भी परिवार होता है। प्राधिकारी वर्ग के वादे के बावजूद ये परिवार अपने गाँव वापस नहीं जा सके।
- 1954 - क्षयरोग के अंतिम चरण के इलाज के लिए मारकुसी को मानितोबा में भेजा गया।
- 1961 - उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र के सर जॉन द येलोनाइफ कॉलेज से मारकुसी पढ़ाई समाप्त करते हैं।
- 1963 - दिरेक्स्यों जेनेरल द नुवो-केबेक (DGNQ) के गठन से नुनाविक में केबेक सरकार के हस्तक्षेप की शुरुआत।
- 1967 - कांगिकसुजुआक और कुज्जुआक में पहले प्रादेशिक विद्यालयों की स्थापना।
मॉन्ट्रियल में व्यापक प्रदर्शनी के समय पूरा विश्व इनुइट संस्कृति और कला से परिचित होता है।
फेदेरास्यों दे कोओपेरातीव्ह दू नुवो केबेक की स्थापना
- 1968 - *द ऑटोबायोग्राफी ऑफ जॉन अयारुआक* इनुकितुत में प्रकाशित पहली गैर धार्मिक रचना है।
मारकुसी अपने वायुयान चालक का लाइसेंस लेकर वाणिज्यिक विमान चलाने वाले पहले इनुइट बन जाते हैं।
- 1969 - पहले इनुकितुत, फिर अंग्रेजी (1970) में मारकुसी के *द हार्पून ऑफ हंटर* का प्रकाशन।
- 1970 - जेम्स खाड़ी में जल विद्युत परियोजना की नींव
- 1972 - आसोसियास्यों देजिनुई दू नौर केबेकवा का गठन
1972 और 1973 के बीच मारकुसी *इनुकितूत* शोध-पत्रिका में पाँच हिस्सों में अपने दूसरे उपन्यास *द्विंश ऑफ नेरसी* का प्रकाशन करते हैं।
- 1975 - 11 नवंबर को जेम्स खाड़ी और उत्तरी केबेक संधि-पत्र पर हस्ताक्षर हुआ।
मार्किविक सोसाइटी का गठन
- 1977 - इनुइट ध्रुवीय कॉन्फेरेंस की स्थापना
- 1978 - कानिक् क्षेत्रीय प्रशासन का गठन
- 1980 - आव्हाताक सांस्कृतिक संस्था की स्थापना
- 1982 - इनुइट ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन के दूरदर्शन चैनल के पहले कार्यक्रम का प्रसारण
- 1990 - आव्हाताक सांस्कृतिक संस्था के द्वारा सांस्कृतिक शोध-पत्रिका *तुमिहूत* के पहले अंक का प्रकाशन। इसके बारह अंक निकले।
- 1999 - 1 अप्रैल को नुनाबुल (हमारी जमीन) का गठन
केबेक सरकार, नुनाविक और संघीय सरकार के बीच त्रिपक्षीय समझौते के बाद नुनाविक आयोग का गठन। इस आयोग का लक्ष्य था - एक स्वायत्त सरकार की स्थापना के लिए एक रपट तैयार करना

-
- 2001 - नुनाविक आयोग की रपट अमीकालुता/पारताजों। त्रासे ला व्हवा व्हेर अं गुवेर्नमाँ पुर ल नुनाविक का प्रकाशन
जाशारिआस कुनुक की फिल्म आतानारजुआत। ला लेझोंद द लोम रापिद रिलीज हुई जिसे उसी साल कान अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में 'कामेरा दौर' का पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- 2003 - केबेक सरकार, संघीय सरकार और माकिविक सोसाइटी के बीच एक स्वायत्त सरकार के लिए संधि-पत्र।
- 2004 - नुनाविक में पहला केबेकवा पार्क (जो पिंगालुइट लोगों का राष्ट्रीय पार्क है) की स्थापना
- 2011 - नुनाविक क्षेत्रीय सरकार की संधि से सम्बन्धित जनमत-संग्रह को निर्वाचकों ने अस्वीकार कर दिया।

